



एहसास-ए-निहाँ: जज़्ब:-ओ-कशिश

एहसास-ए-निहाँ: जज़्ब:-ओ-कशिश

एहसास-ए-निहाँ: जज़्ब:-ओ-कशिश

एहसास-ए-निहाँ: ज़ब्ब:-ओ-कशिश

एहसास-ए-निहाँ: ज़ब्ब:-ओ-कशिश

एहसास—ए—निहाँ: जज़्ब:—ओ—कशिश

श्याम सुन्दर

ज़ण ठण डम्क/ च्छण स्ज्ज

एहसास—ए—निहाँ: जज़्ब:—ओ—कशिश

एहसास—ए—निहाँ: जज़्ब:—ओ—कशिश

संस्करण : 2011 १ प्याम सुन्दर सिंह

पैछरू 978.81.922760.0.7

मै।।.छप्।छ रू श्र।त।.द्वै।मै ठलैभ्ल।डैन्छक्क

झण्टण्डम्प। व्टज रज्ज

20 टममतेअतांत ठसवबाए कमसीप.110092

एहसास-ए-निहाँ: जज़्ब:-ओ-कशिश

एहसास-ए-निहाँ: जज़्ब:-ओ-कशिश

एहसास (फीलिंग) हमेशा निहाँ (छिपा) होता है, पर जज़्बः (इमोशन) हमेशा आशकार (प्रकट) होता है। एहसास के स्तर पर हर मनुष्य आज़ाद होता है, स्वतंत्र होता है कि वह क्या अनुभव करे। पर जज़्बात के दयार में क़दम रखते ही वह समाज और परंपरा के साथ दो-चार होता है। अपने ही भीतर जीने वाला इन्सान बाह्य प्रतिरोध के आते ही दो-चार होकर खुद के भीतर फिर से सिमट जाता है।

‘जज़्बः-ओ-कशिश’ के विभिन्न पृष्ठों में प्रेम से जुड़े ‘नाजुक एहसास’, ‘रंज-ओ-ग़म’, ‘तैश-ओ-जुनून’ की अंगड़ाई के साथ-साथ दुनिया की आँखों में आँखें डालने का ज़ोर भी है। इन कविताओं में जज़्बों को उनकी निजता के साथ लिखा गया है। यहाँ भोक्ता (व्दम ूव न्निमिते) और स्रष्टा (व्दम ूव बतमंजमे) के बीच कोई द्वैत नहीं है। दिल में उठने वाले जज़्बे को जस-का-तस कविता में उतारने की कोशिश की गई है, अगर जज़्बः प्रेम के आगाज़ी शिद्दत के साथ जुड़ा है, तो वह उसी शिद्दत के साथ व्यक्त है; अगर बेखुदी के साथ जुड़ा है, तो वह होश की बदली हुई फ़ितरत को लिये हुए है; और अगर तैश या गुस्से से जुड़ा है, तो अपने बदले हुए तेवर के साथ मौजूद है।

मुहब्बत एक वो जज़्बः है जिसकी ज़द (ठोकर) से जगे जज़्ज-ओ-मद में न केवल इन्सान का इन्सान से, बल्कि तंज़ीम-ओ-रवायत का भी इन्सान से सम्बन्ध ज़ाहिर होता है। इन्सानियत के झूठे-सच्चे सभी दावे यहाँ परखे जा सकते हैं।

एहसास-ए-मुहब्बत

(प्रेमानुभाव) का सबसे सुखद क्षण वो लम्हा होता है, जब प्रेमपात्र चला जाता है और ख़म्याज़ः-ए-जज़्बः (संवेदना की

एहसास-ए-निहाँ: जज़्बः-ओ-कशिश

अंगड़ाई) की एक ठोकर उसे तसव्वुर (कल्पना) में फिर से सामने खड़ा कर देती है। सरापा वो फिर से सामने नज़र आने लगती है। उसके चेहरे और होठों पे खेलती मुस्कराहट आँखों के आगे नाचने लगती है, उसकी आवाज़ की मिठास सुनाई देने लगती है। यहाँ तक तसव्वुर का आधार एहसास में उतरे लम्हें होते हैं, पर दिल इतने से नहीं मानता। वह जिसे चाहता है उसका चलना-फिरना, उठना-बैठना, हँसना; उसकी हर अदा इतनी अच्छी लगती है कि वह उसकी ज़िन्दगी के हर रंगीन लम्हे को अपने सामने देखना चाहता है।

मिसरा-ए-उला की तरह तसव्वुर का पहला मुक़ाम ख़त्म होता है, और तसव्वुर-ए-सानी की नई मंज़िल का आगाज़ होता है। इन्सान की ताक़त-ए-तसव्वुर (कल्पना-शक्ति) इन्सान के केवल अपने जिये गये एहसासात के परों से ही उड़ान नहीं भरती, बल्कि अपनी जैसी हालत में पड़े अन्य लोगों के एहसास के ज़ोर को भी खींचते चली जाती है।

किसी का अच्छा लगना और उसे चाहने से प्रेम संसार बना होता है। पर इन्सान केवल इस संसार में ही नहीं जीता, उसे प्रेम के बाहर स्थित संसार में भी जीना पड़ता है। उस संसार में जीना पड़ता है जो विभिन्न सामाजिक संस्थाओं और लोगों के व्यवहार को निर्देशित करने वाले दर्शन से बना होता है। बाह्य-संसार प्रेम-संसार से टकराकर अक्सर मनुष्य के अर्न्तजगत में उथल-पुथल मचा, प्रेम से जुड़े नाजुक एहसास को मिटा देने की कोशिश करता है। प्रेम-संसार खुद को बचाने के लिए हमें एक ठोकर देकर मौजूदा सामाजिक संस्थाओं और

एहसास-ए-निहाँ: जज़्बः-ओ-कशिश

सोच के तरीकों की आलोचनात्मक व्याख्या के लिए प्रेरित करता है।

एक दिल-शनास (संवेदनशील) इन्सान के भीतर की दुनिया सैकड़ों लोगों के एहसास को अपने भीतर लिये रहती है। जी गई जिन्दगी, और आस-पास देखे गये मनाज़िर (दृश्यों) की बिना पर जज़्ब: तसव्वुर (।दजपबपचंजपवद) में महबूब की जिन्दगी के हर लम्हे को सामने खड़ा कर देता है। उसे अब नज़र आने लगता है कि अभी वो कहाँ होगी, बारिष की बूँदों को देख वो सोचता है कि वो भी खिड़की से इन नज़ारों को देख रही होगी। कल्पना की ये उड़ानें केवल कल्पना की उड़ान नहीं होती। यह दिल में पल रहे एहसास को और पुख्ता करती है। महबूबा जैसी एक बिनत की ख्वाहिश ज़ाहिर करने के बाद यही वो ताक़त-ए-तसव्वुर है जो महबूबा को उस मुजस्सम ख्वाहिश को गोद में तुनकती लिए दिखती है। आधुनिक मनोविज्ञान की सीमित समझ बारहा इसे दिवा-स्वप्न ही समझती है, और लोगों से इस ताक़त को छीनना चाहती है। पर शायर इस शोख-तसव्वुर को जानता है। जज़्ब:-ए-मुहब्बत को और शिद्दत-तरीन बनाने वाले इसी तसव्वुर की बिना पर चिनार के पेड़ों के दृश्य के सामने आते ही, वह बाजू-ब-बाजू नज़र आने लगती है, और वह उन एहसासात को भी लिख जाता है जो उसने जिये भी नहीं। सार्त्र होश-ए-तेज़ की इसी बाज़ी-ए-सरगश्ता को शूंपदक इसवूपदह तिवउ दबीमतम जवूंतके जीमूवतसकश कह कर समझाने की कोशिश करता है। तसव्वुर की यही ताक़त बींग (ठमपदह) को चीज़ (ज़िपदह) होने से बचाती है और हालात के हद-ओ-हुदुद से उत्पन्न बेचारगी को लॉघ सकने की ताक़त देती है।

एहसास-ए-निहाँ: जज़्ब:-ओ-कशिश

तख़लीकी-तसव्वुर (सृजनात्मक कल्पना) की यही शक्ति साइंस और मानविकी दोनों जगह नयी सोच को जनम देती है। ज़हीन इसी के आधार पर दिवास्वप्न देखता हुआ, शायर और प्रेमी को दिवास्वप्न देखने वाला और बे सिर-पैर की बातें करने वाला कहता है।

इन्सान बचपन से, जब तक संवेदनशील रहता है तब तक, जिस दुनिया में जीता है, जिन लोगों से मिलता है उनको अपने भीतर जज़्ब करते जाता है। अपने आस-पास को अपने भीतर समेटने से जहाँ-ए-सर-ए-चश्महा (आँखों के आगे की दुनिया) के अलावा एक और दुनिया का जनम होता है, जिसे इन्सान अपने भीतर छिपाये रहता है। आँखों के आगे से गुज़रते लोग और फिसलती दुनिया कभी भी ठहरती नहीं। पर यही बाहर की दुनिया उसके भीतर ठहर जाती है। इस दुनिया या जिसे जहाँ-ए-दिल कहें, के साथ किसी इन्सान का कैसा रिश्त: बनता है, इसी पर उस इन्सान की शख़िसियत (ज्मतेवदंसपजल) और सीरत (बैतंबजमत) निर्भर करती है। इन्सान का इससे रिश्त: समाज-ओ-रवायत के द्वारा बताये गये तरीक़े से बंधा नहीं होता है। ख़ल्बत में अक्सर यही दुनिया उसके आगे मुजस्सम होकर रवाँ हो जाती है। यह दुनिया केवल एक इन्सान की नहीं होती है, अर्ष-ए-इन्सानियत को पहुँचने की छटपटाहट से रवाँ होकर यह अपनी तरह के कई इन्सानों के एहसास, तसव्वुर और बीनाई को समेटती है।

मैंने जो भी शायरी, अगर इसे शायरी माने तो, किसी भी मानदंड या साँचे का सायास अनुकरण करके नहीं लिखा है। यह आज़ाद-नज़्म की ग़ज़ल की तरह है।

एहसास-ए-निहाँ: जज़्ब:-ओ-कशिश

निर्व्यक्तिक्ता की शिक्षा के लिए काव्य-प्रक्रिया को रासायनिक-क्रिया के दृष्टांत से समझाकर कवि को प्लेटिनम का तार बना देनेवाले टी.एस. एलियट की कसौटी पर ये कवितायें नहीं कसती। कवि विश्लेषण की सुविधा के लिए बनाये गये विभिन्न वेबरवादी आदर्श-प्रतिरूपों (फ़र्मस ज़ल्लमे) से रिश्तः जोड़कर कविता नहीं लिखता। बाह्य संसार के अनुभव की विशिष्टता द्वारा ही काव्य समृद्ध होता है। साधारणीकरण, कवि की निजता का लोप तथा निर्व्यक्तिक्ता हासिल करने का सबसे अच्छा उपाय भावानुभूति का वह साधारणीकरण है, जहाँ कवि फ़्रायड का आदर्श-प्रतिरूप बन जाता है। 'इरॉस' के इस धरातल पर उससे सब सहमत हो जाते हैं। पर काव्य 'एडवर्ड बर्न' (मूकतक ठनतदमल) के प्रोपेगैंडा का साधन नहीं होता।

एलियट के अनुसार प्रौढ़ कवि का व्यक्तित्व प्लेटिनम (उत्प्रेरक) के तार की तरह होता है। पर मैंने अपने अनुभवों में सामाजिक संस्थाओं और उससे जुड़े चिंतन को उत्प्रेरक की तरह महसूस किया है। अगर सच देखें तो काव्य-संसार के संदर्भ में दर्शन और सामाजिक परिस्थितियाँ उत्प्रेरक का काम करती हैं, और अगर कवि कवि ही रहता है तो अक्सर एक 'आदर्श-उत्प्रेरक' की तरह काव्य-संसार में उथल-पुथल मचाने और नष्ट होकर भी यथार्थ संसार में वैसी की वैसी ही बची रह जाती हैं।

जैसे ग़ज़ल के मक्ता में शायर अपनी निजता को तख़ल्लुस से बचा करता है, वैसे ही मेरी कई कविताओं में 'ज़रीन', 'तिफ़ल-ए-हिन्दू', 'मय-ए-नाब', 'निहाँ', 'नैना', 'ज़ुल्फ़-दराज़' आदि की पुनरावृत्ति मेरे भावों के विशिष्ट आलम्बन की निजता को समेटे हुए है।

कविताओं में दो या दो से अधिक शब्दों को जोड़ने के लिए बारहा 'इज़ाफ़त' और 'अत्फ़' का प्रयोग हुआ है। जब शब्दों को 'ए' के द्वारा जोड़ा जाता है, तो इस संधि को 'इज़ाफ़त' कहते हैं। संज्ञा शब्दों के बीच 'ए' का प्रयोग ज़्यादातर सम्बन्ध कारक के लिए किया गया है। उदाहरण के लिए— दीदार-ए-यार (यार का दीदार), सूरत-ए-यार (यार की सूरत)। संज्ञा और विशेषण को भी 'ए' के द्वारा जोड़ा जाता है। उदाहरण के लिए— दिल-ए-नादों (नादान दिल), लब-ए-सुख़ (सुख़ लब)। यदि पहला शब्द ईकारान्त हो जैसे— साकी, गर्मी आदि तो 'ई' की मात्रा 'ह्रस्व' हो जाती है। उदाहरण के लिए— साकि-ए-दर्यादिल, गर्मि-ए-ज़ात।

जब दो शब्दों को 'ओ' के द्वारा जोड़ा जाता है, तो वहाँ 'अत्फ़' की संधि होती है। उदाहरण के लिए — दिल और जान लिखने के लिए 'और' के स्थान पर 'ओ' का प्रयोग करते हुए 'दिल-ओ-जान' लिखा जाता है।

उर्दू का हिन्दी की बोलियों के साथ गहरा सम्बन्ध रहा है। इसे 'अमीर ख़ुसरो' से 'ग़ालिब' तक की शायरी में देखा जा सकता है। भाषा के मानकीकरण के द्वारा भाषा के रूप को स्थिर करने के प्रयास में हिन्दी और उर्दू दोनों ही भाषाओं ने बोलियों से अपना दामन झटक लिया है। मेरी कविताओं की ज़बान ने बोलियों के असर को अक्षुण्ण रखने का प्रयास किया है। अतः कई जगह बोलियों के स्वभाव को नहीं समझे जाने पर बोलियों का यह असर प्रथम द्रष्टया त्रुटि नज़र आ सकती है। उदाहरण के लिए — हिन्दी में प्रचलित यहाँ, वहाँ तथा जहाँ आदि स्थान-वाचक क्रिया-विशेषण के स्थान पर कई जगह मेरठ

के आस-पास बोली जानी वाली कौरवी बोली में प्रयुक्त याँ, वाँ तथा जाँ आदि शब्दों का प्रयोग हुआ है।

कविता को संप्रेषणीय बनाने में मेरी छोटी बहन सविता ने अमूल्य योगदान दिया है। उसने शब्दों के मायने और संदर्भों को मेरी विभिन्न बेतरतीब किताबों से एकत्रित किया। जामिया मिल्लिया इस्लामिया से पत्रकारिता के छात्र रहे मेरे अनुज सदृश जितेन्द्र ने मेरी कविताओं के प्रकाशन में पूर्ण सहयोग दिया।

उर्दू अल्फाज का इस्तेमाल करते हुए कविताओं को देवनागरी लिपी में लिखने की वजह से कई बार प्रूफ रीडिंग करनी पड़ी। जामिया मिल्लिया इस्लामिया से उर्दू में एम.फिल कर रहे मेरे मित्र मुहम्मद जावेद अख्तर ने टाइप की गई कविताओं में उर्दू की अशुद्धियों को सुधारने में मदद की। हिन्दी की अशुद्धियों को ठीक करने में जितेन्द्र, हिमांशु तथा विकास ने सहायता की। यथासम्भव त्रुटियों को दूर करने की कोशिश की गई है। फिर भी कविताओं में अगर कहीं कुछ त्रुटियाँ रह गई हों, तो उसके लिए पाठकों का सुझाव खुले रूप से स्वीकार्य है।

— श्याम सुन्दर

11/12/2011

1. ज़िक्र-ए-यार से दिल ज़िन्दा

अव्वल-अव्वल उस दिन के मजे	3
तू मुझे अच्छी लगती, और मैं तुम्हें चाहता भी हूँ	4
ख्वाहिश-ओ-ज़ौक-ओ-जुम्बिश को बेहिस करके	5
तेरे शाने पर सर रख कर नहीं, खयालों में हम रोये	6
तुझ से ओझल होते ही, फिर तुझे देखने को	7
ऐ गुल-ओ-बुलबुल देखा है क्या कहीं उस गज़ालचश्म को	8
पागल हो गये हैं होश मेरे जिसको देख के	9
बर्ग-ए-गुल ज्यूँ चश्महा को हो ढके हुए	11
इंतहा-ए-उल्फत कोई रस्म-ए-परस्तिश-ए-बुतपरस्त में देखे	14
जो नहीं भी हैं शुआयें हुस्न-ए-निगार-ए-नाज़ में अपने आप	15
में	16
ज़िक्र-ए-यार से दिल ज़िंद:	17
मस्कन-ए-महबूब फिर का'ब: लगे है	18
शिकस्त: हिम्मत खौफ़ज़दा पुरन्दर है	19
दम-ए-यक-ए-आलम-ए-तसव्वुर-ए-जानाँ	20
रंगीं खम्याज़:-ए-बेसाख्तगि-ए-वजूद मुहब्बत ज़िंद:	21
एक नहीं, दो बुताँ हैं साथ में मेरे	22
देख जिसे लगे अच्छा, वो खुदा लगता है	23
बाद:-ए-वस्ल में सर ता पा गर्क है हवास वस्ल में	24
ऐ मेरी जान ऐ मेरी मता-ए-जान	25
मज्नुन आशिक की बदहवास महवियत में खुदा जिये है	26
खिरद से हमें नहीं कोई रिश्त:-ओ-वास्ता	27
अभी बाकी हैं कुछ और इन्साँ आने के लिए	28
टूटे दिल यार की नवा-ए-दिल सुनने को मरते रहते हैं	

2. अदा-ए-आश्ना

सरापा हुस्न-ए-जवानी जैसे बेजान आईने में देखे 32
वो दम-ब-दम खुद को मेरी आँखों में लिए रहती हैं 33
अभी वो भीग रही थी, अब वो शायद 34
बार-ए-शबाब कान्हों पे लिए, यूँ थकी-थकी सी

3. तेरी जुल्फों की खुशबू आती है ।

अब क्या बताऊँ मुझे तुझमें क्या अच्छा लगता है 37
मेरी हथेली से तेरी जुल्फों की खुशबू आती है 39
इक नाहिद-ए-जवाँ के शाने पे, सर रख कर बलखाई हुई 40
सी 41
वही जो खराबी है 42
सोचा ही नहीं, कि मुझे न मिली तुम, तो मेरा क्या होगा 43
आज फिर वही पहले-पहल तुझसे मिलने का लम्हः याद आया 44
है 45
नशे में चूर हूँ, कुछ एक महीने से 46
कौन कहता है, कि मुदत हुई है बिछड़े हुए मुझे तुझसे
न वस्ल की चाहत है मुझे, न मुझे है हिज्र से कोई गुरेज़
वो पहले-पहल तुझसे मेरी आँखों का मिलना

4. हूँ महव बेखुदी में

हूँ महव बेखुदी में, लम्हात-ए-वस्ल है, या है फिराक 53
उसके फ़रोग-ए-हुस्न से, मेरे वजूद में 54
इस आलम-ए-रंगीनि-ए-मस्ती-ए-बेखुदी से 55
ये मर्हलः-ए-राह-ए-नौ-ए-ज़िन्दगी 56
खलिश-ए-बेखुदी चाहती है

एहसास-ए-निहाँ: ज़ब्ब:-ओ-कशिश

सुरूर-ए-इश्क बस बना रहे

गज़ाल-ए-एहसास में, तू मुश्कबू, दस्त आवारः में

5. चिनार

जेर-ए-बर्फ़ सुलग उठी गर्मि-ए-बहारों से 64
कुर्ब-ए-जौं गुदाज़-ए-हिज्र भी है खाकसार
एक और सराब है
सराब-ए-जल्द-ए-बर्ग-ए-सुर्खगूँ-ए-चनार से
खम्याज़:-ए-महवियत-ए-फ़ज़ा यकलख्त 67

6. शोखि-ए-गुफ़्तार

महवियत-ए-वक्फ:-ए-वस्ल-ए-रंगी में तू कब आई थी 71
हय! मेरी ख्वाहिशें उसे जगाना चाहती हैं 72
महवियत-ए-तसव्वुर में मेरी जैसे तू नज़र आये मुझे
जुल्फ-बकमर वो शोख, दराज़ जुल्फ-ए-मुश्कबू खोले
तेरे खम्याज़: से है मेरे वजूद में रंगीनि-ए-निहाँअ
जी चाहे, ऐ मेरी जान, मेरी जान की मताअ 77

7. बेराह

उसी को देख बुल्हवस हो रातभर जागते हैं हम 81
वो वाँ करवट बदलती हैं शबिस्ताँ में अपने 82
वो हसीं तस्वीर-ए-यार दिल में, कि खुद ही खुद में 83
उमूमी जौक-ए-मजाज़ी हय! कब मुझे खींचे है 84
वो तस्वीर-ए-बुताँ दिल में, कि हर मुजस्सम-हुस्न की जान 85
पर
महीनों से वो आलम-ए-मस्ती कि होश का कुछ अता पता

एहसास-ए-निहाँ: ज़ब्ब:-ओ-कशिश

नहीं	
न जाँसिताँ हिज में तड़पूँ, न महव-ए-इन्तज़ार-ए-वस्ल में	
जिऊँ	
पहचानता हूँ मैं तेरी इस खुशबू-ए-तर को	89
अच्छा भी लगता है, बुरा भी लगता है	90
	91
	92
	93
8. जज़्ब:-ओ-कशिश	94
	95
फिर से चाहती है मेरी नज़र, तुझे जी भरके निहारना	96
हनोज ज़ाहिद था, पर हुआ हूँ मैं अब मयकश क्योंकि	97
ये जो नशा है तेरी मय-ए-चश्म का, उसे निहारना चाहूँ	98
हय! बह रही हैं ठण्डी हवाएँ सावन की	99
तरह-तरह से तू मेरी आँखों के आगे सजी रहती है	100
हवास-ए-बदहवास पे होश-ए-बदहवास खींच	101
हुस्न-ए-जवाँ-ए-निगार अपना असर पुरअसर करने को	102
वो वाँ अपने शबिस्ताँ में करवटें बदलती है	
जाँगुसिल हिज हो या वस्ल हो, तू मेरी नज़र के आगे रहे	
तू है, तो हकीकत महव-ए-ख्वाब	
जाँसिताँ है वो, पर ज़बाँ मेरी उसे मेरी जान कहे जाती है	105
दिल में थी जो, अब वो जिस्म में भी उतरने लगी है	106
जिस्म जागता है और फिर सो जाता है	107
फुसूँगर है सुरूर-ए-इश्क़, अब गौहरबार है	108
9. दामनकशौँ	
महव-ए-चश्म-ए-यार कोई आशिक़ अपनी महवियत को	111
रवायत-ओ-तंज़ीम में जीता होगा खुदा	112

एहसास-ए-निहाँ: जज़्ब:-ओ-कशिश

बिन बुलाये बुतों के जैसे कोई काफ़िर किसी मन्दिर में जाये	113
बेवज्ह है सब कुछ, वज्ह कोई नहीं	114
	115
10. लफ़्ज़-ए-निहाँ	116
	117
कुछ कहे हैं निहाँ खुदा को	118
जज़्ब:-ए-दिल यूँ खम्याज़: खींचे है	119
कोई पूछे क्यूँ, कि ये कौन है निहाँ	120
ये जो तुझसे लिपटी नासाज़ी है	121
मज्नून आशिक़ को महबूब खुदा लगे है	122
उसे पता नहीं, उसको देख, ये मेरा क्या हाल हुआ है	123
मेरे जज़्ब-ए-जवाँ को तेरी जवाँ गुदाजाँ पनाह चाहिए	124
सवाल-ए-यार हैं कई, पर मेरे दिल का जवाब एक ही	
रहा न यूँ किसी का खयाल अब तक तेरे सिवा	
धुआँ उड़ा कर ज़ाहिर को कर निहाँ	
अपने नाम के हर्फ़-ए-इल्लत की सिफ़त का भरम रख के आ	127
मय-ए-हलाल अब वो कातिल है	128
वो दुश्मन अदू-ओ-दुश्मन है	129
न खुदा, न नाखुदा, न बराहिम:, न ज़ाहिद	133
	134
11. नैना	136
	137
याद-ए-जुल्फ़-ए-दराज़ को, वो लम्बी रातें	138
जब हालत-ए-दिल संगदिल काफ़िर-ए-बुत को मालूम नहीं	139
अंदाम-ए-मजाज़ि-ए-निगार-ए-नाज़ का है	141
वो सुरूर-ए-इश्क़ ही क्या	142
ऐ साकि-ए-दर्यादिल	143
आज़ार तलब शबिस्ताँ-ए-हिज को मेरे देखते रहती हैं	144
अपने इस इश्क़-ए-मजाज़ी को इश्क़-ए-हकीकी न मैं क्यूँ	145

एहसास-ए-निहाँ: जज़्ब:-ओ-कशिश

मानूँ	146
एक ही बात है, तरह-तरह से कहता हूँ	148
मेरा होश-ए-फरेपतः मुझे आज कबीर नज़र आता है	
गुज़रे लम्हें सभी गुज़रतः दिनों के लगे यूँ, ज्यूँ कोई ख़्वाब	
जिये	
सुरुर-ए-इश्क बस बना रहे, होश से बेगाना मैं रहूँ	153
सबुकदोश हूँ मैं बिछड़ के तुझसे	154
अब तो अपने रू की रानाई से, तू ये पर्दः-ए-हिज्र हटा, ऐ	158
जाँ मेरी	159
ताज़ःदम जिस्म-ओ-जान था मैं तुमसे मिलकर	160
महव-ए-बेखुदि-ए-रंगीं दो चश्म मस्त कुछ और	161
ज़ेर-ए-बर्फ़ याँ कब की आग लगी लगती है	

12. असर

	165
कि मेरी जान में मेरी जाँ है, तंग वजूद-ए-खंजिल	166
जी भर के देखता हूँ तुझे, पर आँखों की तश्नगी	168
पत्थर पे सर फोड़ें हम	169
मैं कोई फ़कीर-ए-कबीब नहीं	170
याँ तेरा ज़िक्र भी गुनाह है	171
होश-ओ-हवास बदहवास है	172

13. परीशों

दिल से एक इन्सान हूँ	175
कहूँ मैं जीना कैसा, जबकि हमखयाल हमखू कोई नहीं	176
बदहवास हूँ सो लोग मुझसे होश चाहें	177
मैंने कभी कुछ भी चाहा नहीं, और जब चाहा, तो वो मिला	178
भी नहीं	179

एहसास-ए-निहाँ: ज़ब्ब:-ओ-कशिश

बहुत नाज़-ओ-अदा से, कुछ लोग धड़ से सर को जुदा	180
करते हैं	181
किसी की आँख में मैं नहीं जीता	182
बेखुदी में भी होश रखता हूँ	183
	184

14. नाराज़ी

	187
तुझे जी भर के निहार भी न पाये	188
ऐ मेरी जान, ऐ मेरी जान की मताअ	189
सुल्हखू नहीं क्यूँ मेरा हमखू	
मन्दिर में खुदा रहता है क्या	
शरार हूँ मैं, बस शरीर नहीं	
गिला नहीं है बदनज़र ज़माने से, है ठेस लगी खुदाओं से	193
खूब तेज़ नाच, और फिर, यकायक खुद को थाम कर	194
सज्दः-ए-नमाज़ में ये सर क्यूँ झुका खुदा के आगे	195
ये गर्मि-ए-सोज़-ए-निहाँ-ए-ज़ात क्यूँ न तेरे साथ गई	196
खुद खुदी खुदा है, खुदा जो चाहे वही होगा	197
हद-ए-जहाँ में बँधा है वक़्त, या हद-ए-वक़्त में बँधा है	198
जहाँ	199
तेरी ज़ात को जानता हूँ मैं, ऐ बदज़ात!	200
दिल से तू उतर गया है, तू खयाल से भी अब उतर	201
झूठ भी एक भरम है सच की तरह	202
	203

15. चाहत

क्या कहूँ, वैसे तो तू जो चाहे, मैं वो चाहता हूँ	
कुछ इस तरह से है खुदाई, कि न धड़के हैं दो दिल	207
चाहता ही क्या था मैं तुझसे, इससे ज़्यादा	208
नामुम्किन था ख़्वाब से रिश्तः तोड़ना	209

एहसास-ए-निहाँ: ज़ब्ब:-ओ-कशिश

जब खाब की तक़मील ही न हो, तो जीने से क्या फ़ायदा	210
अपनी चाहत की बाबत मैं जानूँ, उसकी बाबत मैं क्या जानूँ	211
गर्मि-ए-सोज़-ए-ज़ात तेरे साथ गई	212
एहसास-ए-इश्क़ का राही मैं	213
कर रहा हूँ मज़ाक आपसे, दिल से, और जज़्बात से	214
मेरे निगार-ए-नाज़ की, ये फिर कोई नौ शरारत होगी	
जी लो मरने से पहले	217
16. आप ज़रीन समझिये	219
	221
हिज़ में कैसे दम निकले कुर्ब-ए-वस्ल-ए-यार से, अब न	222
पूछिये	223
इक पल में झुँझला, एक पल में रहे रोये है	224
हिज़-ए-नामुराद में वस्ल को, उसी को ढूँढते हैं हम	225
जो है दिल में निहाँ उसी पे नहीं दिल का असर है	226
तुझ को कुछ यूँ, इस तरह से, मैं इस दिल में धरूँ	
मुझे बिगाड़ मेरी तबियत बिगाड़ गई	
लम्हात-ए-फ़ुर्क़त में माहताब-ए-वस्ल को देखते हैं हम	
ख़ुदा से जानूँ जहाँ को	229
17. शिकायत	230
	231
शब-ए-हिज़ ढलती क्यों नहीं	233
तू शब-ए-हिज़ सहर तलक, मेरी नज़र के आगे रहा	234
ऐ निहाँ तीर-ए-उल्फ़त-ए-यार, यूँ क्यों कचकता क्यों है	235
कब तक रहता आख़िर मेरा ज़ब्ब-ए-जवाँ तेरे लिये बेदार	238
हुए बग़ैर	239
दिल बच्चों सा खुश था, तुमसे मिलने के लिए	240
मुझे देख अभी तो उन्फ़ुवान पे है, जवाँ जल्ब-ए-हुस्न तेरा	241
याँ तो लोगों ने साल हुए नहीं के शबिस्ताँ-ए-वस्ल में	242

एहसास-ए-निहाँ: ज़ब्ब-ओ-कशिश

वो जानता है, कि मैं चाहता हूँ उसे इस क़दर क्योंकि	243
	244

18. हिज़

यूँ नहीं, कि दिल में रही न हसरत एक भी	
हिज़ की निगाह से देखूँ, गुदाजों वस्ल के गुनाहगार को मैं	
आग लगी है राह में, न इत्मिनान है, न सब्र है	
जहाँ दिल न खींचे, वहाँ जिस्म भी न खिंचे है	
हसरतें अब तो बस तेरी बाँहों की पनाह चाहती हैं	249
फ़ैज़-ए-ख़ुदा, कि फिर मुझे मिला वही जुनूँ है	250
बेजुबाँ हूँ मैं, कि वो है उल्फ़त की तरह	251
जो है मेरी, जो है मेरी जान, हम उसी को याद करते हैं	253
हय! जैसे ख़ुदा बिरहमन, शेख़, ज़ाहिद, पुराण और हदीस में	254
चला था कहाँ से जुनूँ-ए-इश्क़	255
गया है यार दिल को उजाड़ के	256
लौअ की लपट से लिपट-लिपट के खाकसार होके	257
परफ़िषानी (मूँदूँ आँखें तो मैं भी नहीं हूँ, तू भी नहीं है)	258
	259
	260

19. गुरुर को

	263
छू तो दे उसको कोई, तो बताता हूँ मैं	264
उलट-पलट आसमाँ-ओ-ज़मीं को बारहा	265
यक जुम्बिश में रस्त-ओ-चप फाड़ बदन-ए-रक़ीब को	266
आब-ए-तेग़ ढूँढे बदी के रक़ीब को	267
समाज-ओ-रवायत तंज़ीम-ओ-हक़ दिखते नहीं	268
जिसे चाहूँ मैं जिस्म-ओ-जाँ से, उसे चाहे क्यों कर कोई	269

एहसास-ए-निहाँ: ज़ब्ब-ओ-कशिश

वो और लोग हैं, जो महव-ए-कैद-ए-शबिस्ताँ सरगिराँ हो 270

देखूँ तो अब कौन तोड़ेगा मेरे गुरुर को
जमीं के चंद टुकड़ों में बँटी शिकस्तःखुर्दः ये जमीन है
निहाँ सिफात-ए-खुदा जाहिर सिफात-ए-मुहब्बत
एहसास हमेशः निहाँ होता है

20. बख्त-ए-उल्फ़त

जुनूँ-ए-मस्कन-ए-हिज-ए-जाँगुसिल कहे के उसे अभी
कुछ और न देखूँ मैं, जो तू न दिखे फोड़ लूँ लाला-ए-चश्म
मैं

बख्त-ए-उल्फ़त लम्हः-ए-कुर्बत
कोई मेरी बेतरतीब दुनिया-ए-उल्फ़त सँवारे तो, वो तू ही
सँवारे

ऐ मेरी मता-ए-जाँ, ऐ मेरी मता-ए-दिल
कभी मैं जुनूँ को, कभी जुनूँ मुझे खींचे है
तू ज़हरआलूद चाहत मीठा ज़हर है
ब वक्त-ए-रुख़्सत निकला दम था

ज़िक्-ए-यार से दिल ज़िन्दा

अव्वल-अव्वल¹ उस दिन के मजे, अब तलक मैं भूला ही नहीं ।

तू नौखेज-दोशिज², तेरा वो दीद-ए-अव्वल³ भूला ही नहीं ॥

मेरी निगाहों से अन्जान तेरा रू,⁴ और मेरा जी भर देखना ।

वो वलवला-ए-शौक⁵, वो वज्ह-ए-आगाज-ए-मुहब्बत⁶ भूला ही

नहीं ॥

अरक-ए-रौगनी⁷ से ज्यूँ दमक रहा हो गर्मि-ए-दम-ए-जवाँ⁸ से

तना लब-ए-अनफ⁹ ।

वो तेरे रू से मेरी नज़र का लिपटना, न हटना हरदम, भूला ही

नहीं ॥

लबों से छिटकती शुआअ-ए-मर्जा,¹⁰ अभी तलक न मिल पाये

आँखों की तड़प ।

तेरे वो तने अबू¹¹ की कमाँ¹², तेरा वो रू, लब-ओ-अनफ⁹

ह ी

नहीं ॥

महीनों गुज़रे के न बातें हुई, तेरी चाहत में गये कुछ साल यूँ ही ।

बादमुद्दत, कि मिली जब नज़र, और बातें हुई, बादमुद्दत

ब-जदोजहद भूला ही नहीं ॥

रोज़-ए-साल-ए-गुज़श्त:-ए-आगाज-ए-मुहब्बत¹³ कल की

ब त

लगे, तुझसे बिछड़े कल औ गुज़रे साल हज़ार लगे ।
तरतीब-ए-वक़्त¹⁴ उलट-पलट गई, होश गया, पर वह
दम-ए-उल्फ़्त¹⁵ भूला ही नहीं ॥

तू मुझे अच्छी लगती, और मैं तुम्हें चाहता भी हूँ ।

रहती तू हर पल साथ, और तेरी राह तकता भी हूँ ॥

क्या, तेरी दराज़ जुल्फ़¹, यूँ चलना, सब कुछ अच्छा लगे ।

महव-ए-हिज़² नाराज़³ भी, और अदाबंदी⁴ करता भी हूँ ॥

चाहूँ क्या, इससे ज़्यादा कुछ भी नहीं कि तू साथ हो ।

तू रहे साथ हमेशा, और तेरा साथ चाहता भी हूँ ॥ 3

ये कहा तो, मुस्कुरा अचानक डाली तूने आँखों में जो आँखें ।

उनमें डूबा कुछ नहीं कहता, नीमबाज़⁵ कहता भी हूँ ॥

तूने मेरे ज़बों⁶ को दी है, ये कैसी नाजुकी की सिफ़त⁷ ।

कि जिससे खुश भी, और शगुफ़्तगी⁸ से तड़पता भी हूँ ॥

1 पहले-पहल। 2 मुग्धा। 3 प्रथम दर्शन। 4 चेहरा। 5 चाहत का आवेग। 6 प्रेम के प्रादुर्भाव का कारण। 7 दमकयुक्त स्वेद। 8 जवाँ साँस की गर्मी। 9 बीनी (Nose) के पुट का किनारा। 10 लाल मोती की आभा। 11 भौंह। 12 कमान। 13 प्यार के प्रादुर्भाव वाले बीते साल का दिन। 14 समय का क्रम। 15 प्यार का क्षण।

1. लम्बी जुल्फ़ें। 2. विरह में खोया हुआ। 3. खफ़ा। 4. प्रेमिका की अदायें कविता में बाँधना। 5. नशीली आँखों वाली। 6. ज़ब्बा (सवेदना का बहुवचन)। 7. कोमलता का गुण। 8. खिलावट।

ख्वाहिश-ओ-जौक-ओ-जुम्बिश¹ को बेहिस² करके ।
 देखता हूँ तुझे, ज़ब्त-ए-नफ़सकुशी³ बनके ॥
 फ़रोग-ए-रू⁴ मुस्कुराता, तने हैं कमाँ-ए-अब्रू⁵ तो क्या ।
 तने लब-ए-अनफ़⁶ पे शिगुफ़तगि-ए-गुँचा⁷ का अक्स⁸
 करके ॥
 निगाह-ए-मा'सूम⁹ देखती है मुझे, बेकसी-ए-हूत¹⁰ से ।
 सुर्मगीं-लब-ए-चश्म¹¹ को कुछ तीखा करके ॥
 छूना चाहता हूँ मैं, सुर्ख-लर्जिश-ए-गुलाब-ए-लब¹² को ।
 दंदः¹³ की बिजली कड़कती है, तबस्सुम¹⁴ को फ़ाश¹⁵ करके
 ॥
 ज़रीन-शुआये¹⁶ लाला-ए-चश्म¹⁷ की तेरी, सुर्ख लबों पे ।
 गिरकर छिटकती, खंदः-ए-सुब्ह-ए-उफ़क़-ए-मश्रिक¹⁸
 बनके ॥
 जवाँ-मश्शातगि-ए-रू¹⁹ खींचता अपनी जानिब²⁰ मुझे ।
 शर्म-ओ-हया से रुख़सार-ए-जौ²¹ को सुर्ख करके ॥
 सदहज़ार²² ख्वाहिशें तुझे छूने की जगी है मेरे भीतर ।
 रोका है खुद को जुम्बिश-ए-दस्त²³ को पकड़के ॥
 तू बेरुख़ी पे आमादः, हम बुत में चाहें वफ़ा मुजस्सम²⁴
 करना ।

1. गति, खुशी और इच्छा। 2. जड़ीभूत। 3. आत्मनियंत्रण का अत्याचार। 4. चेहरे का नूर। 5. भौंह की कमान। 6. बीनी (Nose) के पुट का किनारा। 7. कली की खिलावट। 8. प्रतिबिंब। 9. मासूम नज़र। 10. मीन की बेबसी। 11. आँख का काजल लगा किनारा। 12. होंठ रूपी गुलाब का सुर्ख कपन। 13. दाँत। 14. मुस्कराहट। 15. व्यक्त। 16. सुनहली रोशनी। 17. आँख की पुतली। 18. पूर्व दिशा के क्षितिज पर सुब्ह में बिखरने वाली मुस्कराहट। 19. चेहरे का बहारयुक्त प्रसाधन। 20. तरफ़। 21. प्रेमिका का गाल। 22. सैंकड़ों हज़ार। 23. हाथ की गति। 24. मूर्तिमान। 25. सातरंग (सात रंगों वाले)। 26. चित्ताकर्षक।

सो रहूँ तेरे हफ़तरंग²⁵ हुस्न से, तुझमें दिलकश²⁶ रंग उठा
 करके ॥

तेरे शाने¹ पर सर रख कर नहीं, ख़यालों में हम रोये ।
 तेरी मस्त आँखें हो नम क्यूँ, बियाबानों में हम रोये ॥
 आरजू थी कि तुझे पकड़ ज़ार-ज़ार रो कहें हाल-ए-दिल
 ।
 सो बाँहों में भर कर तुझे, जी भर कर ख़यालों में हम रोये
 ॥
 न वज्ह-ए-शिकायत है, न वज्ह-ए-निशात² कोई, जब
 ब ह I र ह ी
 गई ।
 न मिली है तेरी पनाह, सो तेरी पनाहों में हम रोये ॥
 हम रोये यूँ ज्यूँ अज़ान-ए-मस्जिद, मंदिरों में रोये खुदा ।
 रो पड़ा खुदा मेरी नवा³ में, जब खुदा की निगाहों में हम
 रोये ॥
 दिल-ए-बेताब⁴ को बहुत आरजू थी उस निगाह-ए-नाज़⁵
 क ी
 बिजली की ।

1. कन्धा। 2. खुशी का कारण। 3. स्वर। 4. बेकरार दिल। 5. नाज़नीन निगाह। 6. विरह। 7. मिलन। 8. कल्पनाओं।

सो हिज्र^१ की बिजली गिरी, और वस्त्र^२ के खयालों^३ में हम
रोये ।।

तुझसे ओझल होते ही, फिर तुझे देखने को तड़फड़ा कर
दि ल य
तड़पे है ।

सर से जुदा ज्यूँ कोई
तनू-ए-नीमकुशत^४ ज़ोर-ए-दम-ए-आखिरी^५
खींच, आखिर बार उछले है ।।
हय! ये जाँसिताँ-शिद्दत-ए-आरज़ीयत-ए-जुदाई,^६ बिछड़ते
ह १

1. अधमरा तन, जिसका सर काट दिया गया हो। 2. अंतिम साँसों का ज़ोर। 3. बिछड़ने की तात्कालिक प्राणघातक तीव्रता। 4. चेहरे के पीछे (पीठ की जानिब)। 5. कमर तक लम्बी जुल्फ़। 6. वक्त का जल्लाद। 7. दिल के तन से। 8. इच्छाओं के पंख। यहाँ दिल के लिए पंखी के रूपक का इस्तेमाल किया गया है, और वक्त के लिए कसाई का, जो दिल के तन से तड़प की खाल उधेड़ने से पहले इच्छाओं के पंखों को उधेड़ रहा है। 9. अदा रूपी तलवार। 10. विदीर्ण हृदय। 11. विदीर्ण। 12. चुप्पी रूपी मृत्यु। 13. जुदाई।

पुकारे फिर नज़र के आगे ।
ठहर और नज़र के आगे! गर नहीं, तो जाये क्यूँ नहीं, तू
सर से

जुदा धड़ करके है ।।
वो अब दूर नज़र आने लगी पस-ए-रू^४ खुली हिलती
डुलती तेरी

जुल्फ़-ए-रसा,^५ दूर जाती हुई ।
सो सल्लाख-ए-वक्त^६ मेरे तन-ए-दिल से तड़प की खाल
खींचने को, पर-ए-हसरत^७ उधेड़ रहा पहले है ।।
वो तेरे उलट के न आने की तेग-ए-अदा^८ दरीदः-दिल^{१०}
को और

चाक^{११} करे जा रही ।
मेरी बेबस बेचैनी बहुत तेज़ी से हाँफ रही, धीरे-धीरे
ख म श
मर्ग-ए-सुकूत^{१२} में मरने से पहले है ।।
मेरी मुहब्बत झूठी, क्यूँ न रहे तू मेरे आगे हमेशा, और जाये
तो क्यूँ

न मर जाऊँ मैं ।
तुझसे बिछड़ मेरी जान बाई^{१३} की झोंक में, आखिरी बार
व य न
दम तोड़ तड़पकर मरके है ।।

ऐ गुल-ओ-बुलबुल देखा है क्या कहीं उस गज़ालचश्म^१
को ।

1. मृगशावक नयनी। 2. कस्तूरी जैसी सुगंध वाली। 3. पुष्पांगना। 4. लम्बी जुल्फ़ वाली। 5. जिसके चेहरे पर हर समय हँसी खेलती रहती है। 6. तुलसी की चौपाई 'जेहि के जेहि पर सत्य सनेह, सो तेहि मिलत न कछु संदेह' से प्रभावित। 7. भीगी आँखें। 8. बर्बाद। 9. अभी

मुश्कबू² गुलफ़ाम,³ जुल्फ़दराज़,⁴ ख़ांदःदहन,⁵ उस ग़ज़ालचश्म
को ॥

मिलते हैं उनसे वो, जिन्हें जिनसे मिलने की सच्ची चाहत⁶
।

ये बात मान चश्महा-ए-नम⁷ ढूँढे हैं उस ग़ज़ालचश्म को
॥

ख़ात्म है दम, फ़ना⁸ है जाँ, फिर भी दम में है हनोज़⁹
दम-ए-जाँ ।

कि लौअ¹⁰ में ख़ाक¹¹ होने से पहले, मैं देखूँ उस ग़ज़ालचश्म
को ॥

दम-ए-ईसा,¹² वो सुर्ख़ लबों पे उतरी ज़रीन-शुआये¹³
लाला-ए-चश्म¹⁴ की ।

ख़िद¹⁵ के सब बुतो¹⁶ को तोड़ ढूँढूँ उस बुताँ,¹⁷ उस
ग . ज . I . ल . च . श . म
को ॥

पागल हो गये हैं होश मेरे जिसको देख के, वो तू नहीं तो
कौन

है ।
ख़ुदा भी देखता है अपना फ़रोग¹ जिसके फ़रोग-ए-हुस्न²
में,

वो तू नहीं तो कौन है ॥
नशा के बाद ख़ुमारी³, फिर नुआस-ए-बेख़ुदी⁴ औ फिर
नशा-ओ-बेख़ुदी ।

नीशिकस्तःहिम्मत-जबॉ मेरी, हो गई जिस बुत के आगे
ख़ामोश

है, वो तू नहीं तो कौन है ॥
शम्अ-ए-का'बः-ए-नाफ़-ए-ख़ाक⁵, रुद-ए-अबयाज़-ए-गं
गा-ए

-हिन्द,⁷ कि आबसार-ए-आब-ए-हयात⁸ ।
एहसासात सब मेरे, हो गए हैं सिफ़त-ए-पाक⁹ जिसको
देख के,

वो तू नहीं तो कौन है ॥
बादः-ए-तुंद¹⁰ तेरी आँखों की छलक उठी है मेरी आँखों
से, मेरी

आँखों में देख तो तू ।

तक । 10. प्रेम की लपट । 11. नष्ट । 12. प्राण फूँकने वाली । 13. सुनहली रोशनी । 14. आँख
की पुतली । 15. अक्ल । 16. प्रतिमाओं । 17. प्रेमिका ।

¹ प्रभा (रोशनी) । ² सौन्दर्य की रोशनी । ³ नशा उतरने की अवस्था । ⁴ बेसुध अवस्था की
ऊँघ । ⁵ कभी चुप नहीं रहने वाली जबॉ । ⁶ मक्का में स्थित काबे में जलता चिराग । ⁷
हिन्द की गंगा की धवल-धारा । ⁸ अमृत का झरना । ⁹ पवित्र गुण (सात्विक) । ¹⁰ तेज़
शराब । ¹¹ उद्दिग्ध । ¹² इन्द्रियाँ । ¹³ वजूद । ¹⁴ प्रेम-लोक (वह संसार जहाँ प्रेमी अपनी
प्रेमिका के ध्यान में पहुँच जाता है) । ¹⁵ मंत्रमुग्ध । ¹⁶ हस्ती की दशा । ¹⁷ जहाँ की खाई पे
लड़ी जाने वाली लड़ाई का आतंक । ¹⁸ अस्तित्व की दशा । ¹⁹ पर्वत को काटने वाला ।
²⁰ आगोश की थिरकन । ²¹ तरफ़ । ²² बेसुध अवस्था की अँगड़ाई ।

होश बदहवास¹¹, हवास¹² सब बेहोश जिससे मेरी ज्ञात¹³ के,
वो तू

नहीं तो कौन है ॥

मेरे आलम-ए-तसव्वुर¹⁴ को देख मस्हूर¹⁵
आलम-ए-तअय्युन¹⁶,

मुझे क्या खौफ़ जौर-ए-जंग-ए-खंदक-ए-जहाँ¹⁷ का ।
आलम-ए-वजूद¹⁸ में जिसके होने से, हुआ हूँ कोहकन¹⁹ में,
वो तू

नहीं तो कौन है ॥

जुम्बिश-ए-आगोश²⁰ है फ़जाओं में मेरी जानिब²¹, मेरी
खातिर,

नज़ारें सब ह हसीन हुए ।

मेरी ज्ञात में जगा खम्याज़:-ए-बेखुदी,²² नज़ारों में भी
जगा दिया

जिसने बेखुदी, वो तू नहीं तो कौन है ॥

हनोज़¹³ आश्ना²⁴ फ़जाएँ लग रही हैं अनजान, कि

खम्याज़:-ए-खुमारी²⁵ है याँ ता वाँ ।

बेइतिहा-नशा-ओ-खुमारी-ओ-नुआस-ए-बेखुदी,²⁶ जगा
ि द य ा

पेशनज़र है जिसने, वो तू नहीं तो कौन है ॥

कोई बर्क-ए-ख़िर्मनसोज़²⁷ गिरी है ख़िर्मन-ए-भरम²⁸ पे,
ि क म र ी

बेखुदी में महव²⁹ है चश्म-ए-मस्त-ए-यार ।

खौफ़ ज़दा³⁰ है मेरे आगे सब, ज़ाहिद³¹ भी, बराहिम:³² भी,
ि ज स क 9\

मुझमें होने से, वो तू नहीं तो कौन है ॥

23. अभी तक। 24. परिचित। 25. नशे में ऊँघती अँगड़ाई। 26. बेसुध अवस्था की ऊँघ, उल्लास और तीव्र उन्माद। 27. खलिहानों को जलाने वाली बिजली। 28. भरम के खलिहान। 29. तल्लीन। 30. भयभीत। 31. शराब न पीने वाला व्यक्ति। 32. ब्राह्मण का बहुवचन।

बर्ग-ए-गुल³ ज्यूँ चश्महाँ को हो ढके हुए ।

लब-ए-अनफ³ ज्यूँ गुँचें⁴ खिलते हुए ॥

बनाऊँ मैं बुर्त⁵ की तस्वीर हिज़⁶ में ।

आँखों में आते, जब अश्क⁷ लुढ़के हुए ॥

सुर्ख-रुखसारों पे⁸ है जवाँ मश्शातगी⁹ ।

ज्यूँ¹⁰ आब-ए-शबाब¹⁰ आईना-ए-रू¹¹ पे दहके हुए ॥

2 फूल की पंखुड़ी। 2. आँखें। 3. नासिका के पुट का किनारा। 4. गुँचे (कली का बहुवचन)। 5. प्रेमिका। 6. विरह। 7. आँसू। 8. लालिमा लिए गालों पे। 9. प्रसाधन। 10. बहार की छटा। 11. चेहरे का दर्पण। 12. चौंद रूपी माथा। 13. टुड्डी से माथे तक। 14. होठ से पलक तक। 15. नासिका का सौन्दर्य। 16. आँधी अदा (बन्द आँखें)। 17. भौंह के धनुष तले। 18. कांति। 19. बरौनी के तीर। 20. कौमार्य। 21. चौंद के चारों ओर पड़ने वाला घेरा (चन्द्रमण्डल, लक्ष्यार्थ मुखमंडल)। 22. भौंह। 23. माथा रूपी आईना। 24. सुब्ह की (प्रभातकालीन) रोशनी।

जबिं-ए-मेह¹² को चूम रही हैं, जुल्फों की लटें ।
 हय! तू रह गया, तू जुल्फ बाँधते हुए ॥
 ज़क़न ता जबी,¹³ लब ता मिश;¹⁴ चाहूँ भटकूँ ।
 सो हुस्न-ए-अनफ¹⁵ नज़र से है टकराते हुए ॥
 अदा-ए-निगूँ¹⁶ चश्म की, कमाँ-ए-अब्रू तले¹⁷ ।
 पलक या दो सीप मुँह बन्द किए हुए ॥
 सुकूँ से झुकी है पलक चश्म पे ।
 कि पलक के फ़रोग¹⁸ पे तीर-ए-मिश;¹⁹ तने हुए ॥
 जुल्फ देख रही है दोशीज़गी²⁰ माँग की ।
 हल्क़:-ए-माह,²¹ अब्रू²² से लिपटी लट उकेरते हुए ॥
 अब्रू और माँग की दोशीज़गी के बीच ।
 आईना-ए-जबी²³ शुआअ-ए-सुब्ह²⁴ को आजमाते हुए ॥

कमाँ²⁵ है किनारा-ए-लब,²⁶ पर नहीं तीर-ए-नवा²⁷ ।
 सुर्ख लब लब पे है यूँ रु²⁸ पे सिले हुए ॥
 मुँहबन्द शगुफ़तगी²⁹ है रु पे घुटके, सो लगे ।
 रु लब-ए-दहन-ए-अनफ³⁰ को दोगुना खोले हुए ॥
 कमाँ-ए-लब³¹ से उभर दो तीर-ए-ख़त³² ।
 खुले दहन-ए-अनफ³³ पे रहे तने हुए ॥

11

25. कमान। 26. लब का वर्तुलाकार किनारा। 27. आवाज़ का तीर। 28. चेहरा। 29. खिलावट। 30. नासिका के पुट का किनारा। 31. लब रूपी धनुष। 32. लकीर का तीर। 33. नासिका का पुट। 34. भौंह। 35. स्वेद। 36. बरौनी के नोक। 37. पुतली। 38. सुनहली किरणों। 39. सुर्ख होंठ पे आई मुस्कराहट। 40. आँसू। 41. आँखों की शुद्ध शराब। 42. शराब जैसे रंग वाली। 43. आँख की पुतली की सुनहली रोशनी।

मेरी गर्मि-ए-नज़र से, अब्रू³⁴ से पलक पे लुढ़क ।
 अरक³⁵ सिनाँ-ए-मिश;³⁶ पे मचलते हुए ॥
 तेरी तस्वीर भी नाराज़ तुझसी मुझसे, बोले नहीं ।
 मिलाए न नज़र, चश्महा पलकें हैं मुँदे हुए ॥
 लाला-ए-चश्म³⁷ की तेरी ज़री-शुआओ³⁸ से चाहूँ ।
 देखना, ख़ंद:-ए-लब-ए-सुर्ख³⁹ को तेरे खेलते हुए ॥
 बना के तस्वीर, फिर उमड़े अश्क⁴⁰ हैं ।
 मिलाने को आँखें, मय-ए-नाब-ए-चश्म⁴¹ को याद करते हुए ॥
 तू बेरुख़ी से क्या चाहे, मुझे सुधारना ।
 हाल बिगड़ा है यूँ, कि बिगड़ूँ तो लगूँ सुधरते हुए ॥
 तेरी मयगूँ⁴² शुआअ-ए-ज़रीन-ए-लाला-ए-चश्म⁴³ को ।
 हय! फिर हो गए मुझे महीनों तरसते हुए ॥

नज़र से दिल में उतरी तेरी तस्वीर ।
 रहूँ तस्वीर पे, दिल से नज़र के आगे खींचे हुए ॥
 कह गयी, कि मेरी तस्वीर से बहल लेना ।
 सो तेरी तस्वीर देख रहता निहाँ⁴⁴ कहते हुए ॥
 हय! वो जादू गोरी नैना की कजरारी आँखों का ।
 जवाँ जिस्म थके है, ज़बाँ से निहाँ कहते हुए ॥
 वो बेरुख़ी पे आमाद⁴⁵ रहे, और हम ।

12

44. छिपी हुई (प्रेमिका)। 45. तत्पर। 46. प्रतिक्षण। 47. मूर्तिमान। 48. प्रेमी की लगन से। 49. प्रेमिका का अस्तित्व। 50. मूर्ति। 51. विरह की रात। 52. सात रंग। 53. चित्ताकर्षक।

बुत में रहे दम-ब-दम⁴⁶ वफ़ा मुजस्सम⁴⁷ करते हुए ॥
 वफ़ादारि-ए-आशिक से⁴⁸ वजूद-ए-बुत⁴⁹ जो ।
 वही रहे आजरी⁵⁰ पे सितम करते हुए ॥
 शब-ए-हिज्र⁵¹ गुज़रे हर रात तेरे हफ़तरंग⁵² हुस्न से ।
 उठा तुझमें दिलकश⁵³ रंग, तुझे निहारते हुए ॥

इंतहा-ए-उल्फ़त¹ कोई रस्म-ए-परस्तिश-ए-बुतपरस्त² में
 देखे ।
 आशिक-ए-मजून³ की हय! मुहब्बत-ए-यकरुख में⁴ देखे
 ॥
 वो शोख, गज़ाल⁵ सी, तीर-ए-नज़र चला कर छुप गई ।

13

1. प्रेम की अति। 2. मूर्तिपूजक के प्रेमोत्कर्ष की रीति। 3. पागल प्रेमी। 4. एक तरफ़े प्यार में। 5. मृग। 6. संज्ञाशून्यता, उद्विग्नता। 7. प्रतिक्षण। 8. महफ़िल। 9. बार-बार। 10. सर से पाँव तक। 11. प्रतिबिंब। 12. दिल का दर्पण। 13. फ़ासला। 14. जिस्म का बहुवचन। 15. विरह का भय। 16. लोभी। 17. बहुत चंचल मृग। 18. संसार से दूरी। 19. टेढ़ी-मेढ़ी चाल। 20. बाँहें फैलाये हुए। 21. बाजू की गति। 22. प्रेम की अति। 23. हिरण के ज़ख़्म की। 24. ग़ज़ल का व्युत्पत्तिमूलक अर्थ ज़ख़्मी हिरण (ग़ज़ाल) की आह होता है।

हय! बदहवासी⁶ उसे, दम-ब-दम⁷ ख़याल के अंजुमन⁸ में
 देखे ॥
 दम निकले जब वो सँवरने को, मेरी हसरतों को पूरी करने
 को ।
 बारहा⁹ सरापा¹⁰ अपना अक्स,¹¹ मेरे आईना-ए-दिल¹² में
 देखे ॥
 जनाबत¹³ को न खींचने दूँ अज्जाम,¹⁴ एक पल को भी मैं ।
 ख़ौफ़-ए-हिज्र,¹⁵ किस क़दर चाहूँ उसे, कोई मुझ
 बुल्हवस¹⁶ में

देखे ॥

ठहरे जिसे देख शोख़ आहू-ए-ततार¹⁷, भूले बुतपरस्त बुत
 को ।
 तसव्वुफ़-ए-ख़ुदाई¹⁸ में नहीं, इसे इश्क़ के पेच-ओ-ख़म¹⁹
 में

देखें ॥

आग़ोशकुशा²⁰ जुम्बिश-ए-बाजू²¹ लिए, इंतहा-ए-उल्फ़त²²
 से देख

रहा उसे ।

मेरी हालत कोई, ज़ख़्म-ए-ग़ज़ाल की²³ आह या ग़ज़ल²⁴
 में

देखे ॥

14

जो नहीं भी हैं शुआये¹ हुस्न-ए-निगार-ए-नाज़ में²
अपने आप में ।
मेरी सिफ़त-ए-दिल³ के असर से, वो भी नज़र आती हुस्न
की

जात⁴ में ॥
जाँ गुदाज़⁵ थी, पर मुझसे ही मेरे लिए हुई है जाँसितो⁶ ।
समझ मेरा असर खुद पे बेअसर, वो इतराये है अपने आप
म ।
ग़ारतगर-ए-खुर⁷ की गर्दिश⁸ जाँगुसिल,⁹ पर मुझसे रंगीं
म र ।
हिज़ ।
मदार-ए-माह-ओ-साल¹⁰ पे नाचता बाँझ वक्त, रहे क्यूँ
मेरी

आँख में ॥
मय-ए-दुआतश¹¹ के नशे में पुकारूँ तुझे ऐ
वजह-ए-निहाँ-ए-निशात¹² ।
तेरी आँखों की मय-ए-नाब¹³ दुबारा खेच हिज़ में
अपनी आँख में ॥

¹ शुआअ (रोशनी) का बहुवचन । 2. चंचल प्रेमिका के सौन्दर्य में । 3. दिल की विशेषता । 4. वजूद । 5. जान को पिघलाने वाली । 6. जानलेवा । 7. सूरज रूपी लुटेरा । 8. गति । 9. दिल को चाक कर देने वाली । 10. साल और महीने का अक्ष (Axis) । 11. दो बार खींची हुई शराब । दो बार खींची शराब, बहुत तेज़ शराब होती है । 12. खुशी की छिपी वजह । 13. शुद्ध शराब ।

ज़िक्क-ए-यार¹ से दिल जिंद² ।
नज़्द-ओ-दूरी³ भरम कल्ब⁴ ताबिंद⁵ ॥
अश्क-बमिश⁶ गौहर-ए-खाब⁷ ।
फ़िक्क बसोज़-ए-दरू⁸ रविंद⁹ ॥
ख़याल-ए-आवार: ख़ुम-बसाकी¹⁰ ।
खाब-ए-ता'बीर¹¹ शोख़ आहू-ए-रमिंद¹² ॥
फन्द:-ए-जुल्फ़-ए-दराज़¹³ ।
मिस्ल-ए-जुल्मत-ए-शब-ए-हिज़¹⁴ ।
जाँ में जाँ नहीं, फिर भी जिंद: ॥
गोरी नैना की आँखें कजरारी ।
दिल-ए-निहाँ¹⁵ फ़ाश, वजूद-ए-ज़ाहिद¹⁶ ताबिंद¹⁷ ॥
वो खंद:-ए-चश्महा¹⁸ और तने अब्रू¹⁹ ।
खंद:-ए-सुब्ह²⁰ रु-ए-यार²¹ लब-बदंद²² ॥
वो निशाँ-ए-वज्ज:-ए-चप-ए-जाना²³ ।
ज़ख्म-ए-वस्ल,²⁴ दंद:²⁵ की रसाई²⁶ समझ वो खंद:²⁷ ॥
कुदसिउल²⁸ मजाज़ी-इश्क़-ए-फ़ानी²⁹ चूँ जिस्म³⁰ ।
दिल नूर-ए-का'ब:-ए-नाफ़-ए-खाक³¹ ताबिंद:³² ॥

1. प्रेमिका की चर्चा । 2. जीवित । 3. फासला और समीपता । 4. हृदय । 5. प्रकाशमान । 6. आँसू के साथ पलक । 7. खाब का मोती । 8. प्रेम की आग लिए । 9. गतिशील । 10. शराब का घड़ा लिए साकी । 11. नींद में आया खाब । 12. भागने वाला मृग । 13. लम्बे बाल का फन्दा । 14. हिज़ के रात की अंधयारी की तरह । 15. छिपा दिल (प्रेमिका) । 16. संसार से विरक्त (प्रेमी) का अस्तित्व । 17. प्रकाशमान । 18. आँखों की मुस्कराहट । 19. भौंहें । 20. सुब्ह की मुस्कराहट । 21. प्रेमिका का चेहरा । 22. दाँत पर होंठ रखे हुआ । मुस्कराहट के समय होंठों के खिंचाव के समय दाँत का दिखना । 23. प्रेमिका के गाल पे एक तरफ़ कटे का निशान । 24. मिलन चिन्ह । 25. दाँत । 26. पहुँच । 27. मुस्कराहट । 28. पवित्र । 29. झूठा नश्वर प्रेम । 30. जैसे तन । 31. मक्का की पवित्र ज़मी, जिसे पृथ्वी की नाभी (नाफे-खाक) कहते हैं, में स्थित काबे में जलती पवित्र दीये की रोशनी । 32. प्रकाशमान । 33. अदृष्ट-दृष्ट । 34. अप्रकट-प्रकट ।

हुजूर-ओ-गैब³³ आश्कार-ओ-निहाँ³⁴ खुदा औ बुत ।
दिल-ए-पाक को लगे जहाँ दरिदः ॥

मस्कन-ए-महबूब¹ फिर का'बः लगे है ।
ज़ियारत-ज़ियारत² जी कह उठे है ॥
कू-ए-जाँ³ में डेरा काफ़िर⁴ लुटेरों का ।
खंजर-बकफ⁵ वाँ लोग बसे हैं ॥
आशिक की ज़ात रहे लिल्लाह⁶ मज्नून⁷ ।
तर्ज-ए-जहाँ से उसे कब डर लगे है ॥
इश्क से पस्त तसव्वुफ⁸, बुलन्द आबरू-ए-बुत⁹ ।
हर आशिक को महबूब खुदा लगे है ॥
ज़ाहिद-ए-दिल¹⁰ मस्त आँखों की शराब से ।
कि वाँ बेशअ¹¹ मजाज़ी¹² ईमाँ रहे है ॥

1. प्रेमिका का घर। 2. तीर्थयात्रा। 3. प्रेमिका की गली। 4. नास्तिक, जो दिल को नहीं मानते।
5. हथेली में खंजर लिए। 6. ईश्वर के लिए। 7. पागल। 8. वैराग्य। 9. प्रेमिका की प्रतिष्ठा।
10. दिल रूपी तपस्वी। 11. धर्म रहित। 12. सांसारिक।

शिकस्त:हिम्मत¹ खौफ़ज़दा पुरन्दर² है ।
कि ज़ब्ब:-ए-जवाँ आज हुए कलन्दर³ है ॥
'आतशनफ़स⁴ मैं' लिपटा हूँ लौअ⁵ की लपट से ।
कि मुझमें आतिशफ़िश⁶ बेकाबू समन्दर है ॥
बिजली गिरी है बर्क-ए-निगाह-ए-नाज़⁷ से ।
ज़ौक⁸ से लबरेज़⁹ हो वजूद हुआ जन्दर¹⁰ है ॥
पंजर¹¹ है आलम-ए-सुग्रा¹² गोया रसाई-ए-खुदा¹³ से
दीद-ए-यार¹⁴ में ।
महवियत-ए-बेखुदी¹⁵ खड़ी गोया दर-ए-मन्दिर¹⁶ है ॥
मह्व हूँ उस जल्वा में जिससे फ़ना¹⁷ सब जल्वे ।
दीद-ए-बुत¹⁸ में ज्यूँ दीद-ए-खुदा-ए-मन्दिर¹⁹ है ॥
दम-ब-दम दम में निहाँ ज्यूँ खुदा ।
कभी नज़र के आगे कभी अन्दर है ॥

17

18

1. जिसकी हिम्मत टूट गई है। 2. किलों को तोड़ने वाला (पुरंदर का यहाँ दिलों को तोड़ने वाले के अर्थ में प्रयोग किया गया है)। 3. गुस्ताख़ (धृष्ट)। 4. बेचैन प्रेमी। 5. प्रेम की आग।
6. आग उगलता। 7. प्रेमिका की आँखों की बिजली। 8. आनंद। 9. लबालब। 10. कोताह (अल्प)। 11. खिड़की। 12. मनुष्य का शरीर। 13. खुदा की पहुँच। 14. प्रेमिका का दीदार।
15. बेसुध अवस्था की तल्लीनता। 16. खुदा के दरवाजे पर। 17. नष्ट। 18. प्रेमिका का दर्शन। 19. मंदिर में रहने वाले खुदा का दर्शन।

दम-ए-यक-ए-आलम-ए-तसव्वुर-ए-जानाँ¹ ।
 सद-अस-ए-रवाँ² बसद-जहान-ए-ताजः³ ॥
 पा गिराफ्तः⁴ मैं हुआ कुछ यूँ, के ।
 हर शौक-ए-उमूमी⁵ को लगूँ आवारः ॥
 गज़ालचश्म⁶ मुश्कबू-जुल्फ़दराज⁷ ।
 ज़ेर-ए-जुल्फ़⁸ चश्मनुमाई,⁹ नफ़स¹⁰ मुश्क-ए-जानाँ¹¹ ॥
 जी था, सो खींच लिया बाँहों में ।
 दम निकले थे देख खम्याज़ः-ए-जानाँ¹² ॥
 कल्ब¹³ छलकाये आँखों से मय-ए-नाब¹⁴ ।
 अनफ़ के किनारे¹⁵ तन कर कँपकँपाये दुरोया¹⁶ ॥
 ज़िक्र-ए-महबूब¹⁷ फ़िक्र-ए-ज़ात¹⁸ मेरी, सो ।
 जाँ में¹⁹, फिर वही दीद-ए-खम्याज़ः-ए-जानाँ²⁰ ॥

¹ प्रेमिका की कल्पना से जन्मी दशा का एक क्षण। 2. सैकड़ों प्रवाहमान युग। 3. सैकड़ों ताज़ा संसार के साथ। 4. जड़ (निश्चेष्ट)। 5. सर्वसाधारण ख्वाहिश। 6. मृगशावक नयनी। 7. सुगंधित लम्बे बाल। 8. जुल्फ़ के साये में। 9. आँख तरेरना। 10. साँस। 11. प्रेमिका की सुगंध (Musk)। 12. प्रेमिका की अँगड़ाई। 13. हृदय। 14. निर्मल शराब। 15. बीनी (Nose) के पुट का किनारा। 16. दोनों तरफ़। 17. प्रेमिका की चर्चा। 18. वजूद की फ़िक्र। 19. दिल में (प्रेम संसार में)। 20. प्रेमिका की अँगड़ाई का दर्शन।

रंगीं-खम्याज़ः-ए-बेसाख़्तगि-ए-वजूद¹ मुहब्बत जिंदः ।
 वज्ह-ए-रफ़ाक़्त² न मालूम, ज़ब्बः³ शोख़ आहू-ए-रमिंदः⁴
 ॥
 न जिस्म-ए-जानाँ, न जुल्फ़-ए-दराज⁶, न
 शुआअ-ए-ज़रिं-ए-लाला-ए-चश्म⁷ ।
 पर ज़िक्र-ए-जानाँ⁸ हो इनसे ही, इनसे ही कल्ब⁹ ताबिंदः¹⁰
 ॥
 हुज़ूर-ओ-ग़ैब¹¹ हय! बस तू ही दिखे ऐ बुत,¹² ख़ुदा नहीं
 ।
 जुल्फ़-ए-दराज¹³ से हिज़ में, जाँ में जाँ नहीं, फिर भी
 जिंदः ॥

1. वजूद की स्वतःस्फूर्त रंगीन अँगड़ाई। 2. लगाव का कारण। 3. भावना। 4. भागता हुआ चंचल हिरण। 5. प्रेमिका का तन। 6. लम्बे बाल। 7. पुतली की सुनहली रोशनी। 8. प्रेमिका की चर्चा। 9. हृदय। 10. प्रकाशित। 11. अप्रत्यक्ष-प्रत्यक्ष। 12. प्रेमिका। 13. लम्बी जुल्फ़ों की याद।

एक नहीं, दो बुतों¹ हैं साथ में मेरे ।
 इक वस्ल², इक हिज्र³ के अज़ाब⁴ में मेरे ॥
 इक है शरीर⁵, है खंजर-ए-उल्फ़त⁶ ।
 इक नाजुक खयाल-ए-अश्कबार⁷ में मेरे ॥
 इक है, जो पेशेनज़र कभी-कभी रहे ।
 इक है दम-ब-दम⁸ हिज्र-ए-नामुराद⁹ में मेरे ॥
 इक बेसब्र-सब्र¹⁰, इक मुजस्सम उल्फ़त¹¹ ।
 एक दूर, एक साथ ज़ब्ब-ए-जवान¹² में मेरे ॥
 मेरी पनाह¹³ में, ये कौन निगार-ए-नाज़¹⁴ है ।
 बाँहों में आ, हो ज़ाहिर दर्द-ए-निहाँ में¹⁵ मेरे ॥

1. प्रेमिका। 2. मिलन। 3. विरह। 4. यातना। 5. चंचल। 6. आँसू बरसाती कल्पना। 7. हर पल। 8. अवांछित विरह। 9. धैर्य रहित धैर्य। 10. मूर्तिमान प्रेम। 11. तीव्र भावना। 12. आश्रय। 13. गर्वशील प्रेमिका। 14. छिपे हुए दर्द में।

देख जिसे लगे अच्छा, वो खुदा लगता है ।
 लगे जो दिल को बुरा, वो बुरा लगता है ॥
 एक ही जलाल¹ हिज्र-ओ-वस्ल² में नुमूद³, एक ही ।
 जमाल⁴, जिससे जो है ये होश मेरा, वो उड़ा लगता है ॥
 दम-बजुल्फ⁵ होऊँ नहीं तो भी अज़ल⁶ से ।
 रहे साँस में मुश्क⁷ औ उसका वो तुर्र⁸ लगता है ॥ 21
 ब सोज़-ए-कल्ब⁹ हवास-ए-खम्स¹⁰ पूछे, ज़िक्र-ए-हिज्र¹¹
 से ।
 वस्ल¹² की फ़िक्र क्यूँ न करे, क्या वो बुरा लगता है ॥

1. तेज़। 2. मिलन और विरह। 3. प्रकट। 4. सौन्दर्य। 5. जुल्फ़ के पास साँस। 6. बहुत पहले से। 7. सुगंध (Musk)। 8. बालों की लट। 9. हृदय की तपन लिए। 10. इन्द्रियों। 11. विरह में (प्रेमिका की) चर्चा से। 12. मिलन।

बादः-ए-वस्ल¹ में सर ता पा² गर्क है हवास³ वस्ल में ।
 है नफसकुशी-ए-तसव्वुफ⁴ आश्कार⁵ खाकसार-अस्ल⁶ में ॥
 हिम्मत-ए-कशाकश-ए-जुनूँ-ए-शौक-ए-आगोश⁷
 यकलख्त⁸ ।
 इंतहा-ए-शौक⁹ पे पहुँच टूटी, खींच पनाह-ए-यार¹⁰ वस्ल
 में ॥
 मुद्दतों हिज¹¹ में वो होश जो रहा पागल तेरे लिए ।
 तेरी पहनाई-ए-सरापा पे¹² अब है बदहवास¹³ अस्ल में ॥
 बेशअ¹⁴ खानः-ए-दिल¹⁵ है खानकाह-ए-बुताँ-ए-नाज¹⁶ ।
 दम¹⁷ में मुश्क-ए-जुल्फ-ए-रसा,¹⁸ तौहीद-ए-हवास¹⁹
 अस्ल में ॥

1. मिलन की शराब। 2. सर से पाँव तक। 3. चेतना के अंग (इंद्रियाँ)। 4. संसार से दूर रहने का इंद्रिय संयम। 5. प्रकट। 6. विनम्र यथार्थ। 7. आगोश की इच्छा के उन्माद की खींचतान की हिम्मत। 8. अचानक। 9. चाहत की अति। 10. प्रेमिका की पनाह। 11. विरह। 12. यहाँ से वहाँ तक के विस्तार पर। 13. संज्ञाहीन। 14. नास्तिक। 15. दिल का घर । 16. नाजनीन प्रेमिका की कुटिया 17. साँस। 18. लम्बे बालों की सुगंध (Musk)। 19. संवेदनाओं की एकात्मकता।

ऐ मेरी जान ऐ मेरी मता-ए-जान¹ ।
 क्या कहूँ मैं तुझसे, कि तू जाये मान ॥
 तेरी खम्याज² मेरी रंगीनि-ए-वजूद³ ।
 मेरी जान में तेरी रंगीनि-ए-जान⁴ ॥
 करीब नहीं, पर दिल के करीब हूँ तेरे ।
 हिज⁵ में रुका है जिससे दम में दम-ए-जान ॥
 नाब-मय,⁶ पी है तेरी आँखों से ।
 अपनी रंगीनी मेरी रंगीनी में जान ॥
 तेरी शोखियाँ नाराज क्यों है मुझसे ।
 तुझसे दम में जान, तू है जान-ए-जान⁷ ॥
 खौफ़-ए-कुफ़-ए-ज़हन⁸ खाक इंतहा-ए-शौक से⁹ ।
 बेशअ¹⁰ खानः-ए-दिल¹¹ में जान-ए-जान ॥

1. प्राण की पूँजी। प्राण का मूल। 2. अँगड़ाई। 3. अस्तित्व की मस्ती। 4. सौन्दर्य (जान) का उन्माद। 5. विरह। 6. शुद्ध शराब। 7. प्रेमिका। 8. बुद्धि की नास्तिकता का भय। 9. चाहत की अति से। 10. धर्म रहित। 11. दिल का घर।

मज्जून¹ आशिक की बदहवास² महवियत³ में खुदा जिये है
 /
 कोई तो है जो हनोज़⁴ बुत को बुत, खुदा को बुतगर कहे
 है ॥
 हनोज़ इक बेखौफ़ बुत-ए-क़ल्ब-ए-दैर⁵ की नवा⁶ लिए
 हुआ⁷ /
 सर-ए-चश्म⁸ बारहा ढूँढे उसे, जिसे बुत बुतों⁹ कहे है ॥
 महवियत-ए-तसव्वुफ़¹⁰ कहे खुदा को महबूब, महबूब को
 खुदा ।
 भूला था जिसे वो बुत थी, सो वो बुत फिर से बुत बने है
 ॥

1. पागल। 2. उद्विग्न। 3. तल्लीनता। 4. अभी तक। 5. मंदिर में स्थित हृदय रूपी मूर्ति। 6. स्वर। 7. आँख के आगे। 8. प्रेमिका। 9. दुनिया से दूर रहने की तल्लीनता।

खिरद¹ से हमें नहीं कोई रिश्त:-ओ-वास्ता ।
 महबूब खुदा, हमें उस खुदा से वास्ता ॥
 उठाये तेग-ओ-खंजर² पस्त होकर भी न हुए पस्त ।
 नूर-ए-एहसास³ तरबतर जिससे, उस आलम-ए-बेखुदी⁴ से
 वास्ता ॥
 यक खुदा है, दुई मिटी जिससे महबूब, खुदा औ मुझमें⁵ ।

1. अक्ल। 2. खंजर और तलवार। 3. अनुभूति की रौनक। 4. बेसुध अवस्था की दशा। 5. नश्वर संसार। 6. आनन्दित करने वाला सौन्दर्य। 7. लम्बे बालों का अंधकार। 8. विरह। 9. प्राणों को पिघलाने वाले तन की कल्पना। 10. नश्वर तन। 11. रौशन दिल। 12. प्रेमिका का तन।

इस जहाँ-ए-फ़ानी⁵ में, उस हुस्न-ए-दिलकुशा⁶ से वास्ता
 ॥
 जुल्मत-ए-जुल्फ़-ए-दराज़⁷ से, जिससे रोशन हिज़्र⁸ की
 रातें ।
 जाँ के ख़याल-ए-तन-ए-गुदाजाँ,⁹ हमेशः उससे वास्ता ॥
 जिस्म-ए-फ़ानी¹⁰ है, तो तू भी है, मैं भी हूँ ।
 क़ल्ब-ए-ताबिंदः¹¹ से पाक जिस्म-ए-जानाँ¹² से वास्ता ॥

अभी बाकी हैं कुछ और इन्साँ आने के लिए ।
 फिर आयेगा खुदा मुझे समझाने के लिए ॥
 ख़िरदबाख़्ता¹ जहाँ को पस्त कर, हुआ हूँ दिलबाख़्ता² मैं ।
 है किसी में बची ताक़त तो आ जाए, वो भी ख़ुद को
 आज़माने के
 लिए ॥

1. बुद्धि से हारा हुआ। 2. दिल से हारा हुआ। 3. प्रेमिका। 4. प्रेमिका का अनास्थावान हृदय।
 5. तपस्वी। 6. ब्राह्मण। 7. ईश्वरत्व और सांसारिकता। 8. प्यार का घोंसला। 9. इन्द्रियाँ।
 10. उद्धिग्न। 11. संदेश देने वाला। 12. स्नायुमंडल।

समझने-समझाने की हदों के आगे निकल चुका हूँ मैं ।
 मेरी बिगड़ी तबीयत सुधरे, जो आए वो बुताँ³ गले से लगाने
 क
 लिए ॥
 समझा-समझा थक गया हूँ मैं, दिल-ए-काफ़िर-ए-बुत⁴
 को ।
 सो अब चाहूँ मैं अपना सर धड़ से उड़ाने के लिए ॥
 जाहिद,⁵ बराहिम:⁶ डरे हैं, चुप मंदिर के पुजारी ।
 न जाने कब कोई आ जाए, ख़ुदाई⁷ को आज़माने के लिए
 ।
 उठ रहीं आँधियाँ नशेमन-ए-इश्क⁸ उजाड़ने के लिए ।
 मुस्कुरा रहा हूँ मैं, ख़ुदा को सताने के लिए ॥
 नींद आती नहीं जब रात में और हवास⁹ रहते बदहवास¹⁰ से
 ।
 तो बनाता हूँ एहसास को कासिद,¹¹ उसे ख़ाब में बुलाने के
 लिए ॥
 उसे क्यूँ कर भुलाऊँ जीते जी, जबकि मेरी जाँ है वो ।
 भींचती मुट्ठी तन जाते अज़लात,¹² जब कोई कहता उसे
 भुलाने के
 लिए ॥

टूटे दिल यार की नवा-ए-दिल¹ सुनने को मरते रहते हैं
/

धड़कते दिल से तो सब, हम मुहब्बत इक बुत-ए-संग² से
क र त
हैं ॥

हिज्र के हिजाब का ओट किए बगैर वो गज़ालचश्म³ देखती
न ह ी
मुझे ।

देखे तो कोई कि हम उस शोख⁴ पे क्यूँ इस तरह से मरते
ह / ।

चाहत की इंतहा क्या जाने उम्मीद पे जीने वाले लोग ।
क्या जाने के नाउम्मीदी में हम खुश किस ढंग से रहते हैं
/ ।

चाहूँ के उसका दिल धड़के, मेरे दिल की तरह, चाहत का
ह / य
असर ।

सो उस निगार को बना बुत, यकरुख⁵ मुहब्बत हम उससे
क र त
हैं ॥

खींचने लगता है मजाज़ी इश्क⁶ को जब इश्क-ए-हकीकी⁷
ह क⁸
की दार पे ।

तो मजाज़ी⁹ चाहत लिए दीद¹⁰ को मज्नून¹¹ हो हम,
जानिब-ए-कू-ए-यार¹² हुए रहते हैं ॥

अदा-ए-आश्ना

1. दिल की आवाज़। 2. पत्थर की बनी मूर्ति। 3. मृगशावक नयनी। 4. चंचल। 5. एक तरफ। 6. भ्रम में डालने वाला प्रेम। 7. सच्चा प्रेम। 8. सत्य। 9. साधारण। 10. दीदार। 11. पागल। 12. प्रेमिका की गली की तरफ।

सरापा हस्न-ए-जवानी जैसे बेजान आईने में देखे ।

पैरहन² बदल के, कभी जुल्फों को बिखरा, कभी बाँध ।
मेरी नज़र से अनजान, वो खुद को तनहाई में अजब तरह
स

देखे ॥

थी तो पहले भी जाँसिताँ³

आराइश-ए-मशशातगि-ए-शबाब-ए-तन⁴ ।
पहली दफ़े खुमारी⁵ आँखों की, जुल्फ़ झटक के देखे ॥
मर्मरी तन पे उभरी हुई तराश, मर्मरी बाजूओं को, सर ब
क फ

हुए ।

अपने आब-ओ-ताब-ए-जवानी⁷ को बेसाख्तः⁸ करके देखे
/

1 दिल का आईना । 2. वस्त्र । 3 प्राणघातक । 4. तन की बहार के प्रसाधन का अलंकरण । 5. मद । 6. सर के बाल हाथों से सँवारते हुए । 7. जवानी की चमक-दमक । 8. सहज । 9. कजरारी आँखें । 10. लबों की लाली ।

देर तक निहारे अपनी सुर्मगी⁹ आँखों का जादू अपनी
 अ १ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २० २१ २२ २३ २४ २५ २६ २७ २८ २९ ३० ३१ ३२ ३३ ३४ ३५ ३६ ३७ ३८ ३९ ४० ४१ ४२ ४३ ४४ ४५ ४६ ४७ ४८ ४९ ५० ५१ ५२ ५३ ५४ ५५ ५६ ५७ ५८ ५९ ६० ६१ ६२ ६३ ६४ ६५ ६६ ६७ ६८ ६९ ७० ७१ ७२ ७३ ७४ ७५ ७६ ७७ ७८ ७९ ८० ८१ ८२ ८३ ८४ ८५ ८६ ८७ ८८ ८९ ९० ९१ ९२ ९३ ९४ ९५ ९६ ९७ ९८ ९९ १००
 मेरे लबों पे थरथराती अपनी सुर्खि-ए-लब¹⁰, अपने लबों पे
 देखे ॥

वो दम-ब-दम¹ खुद को मेरी आँखों में लिए रहती हैं ।
 ज़बाँ जिसे दराज़ जुल्फ़,² ग़ज़ालचश्म,³ निहाँ कहती है ॥
 उस कम उम्र निगार⁴ का हुस्न मुझपे मेहरबाँ कुछ यूँ ।
 के वो मुझे तुम, पर मेरी ज़बाँ उसे आप कहती है ॥
 सित्तःअशर-उज़्वों पे⁵ आरास्तगी⁶ से सजी हुई वो ।
 अपनी सुर्मगी⁷ आँखों से मुझे बेकरार किये रहती हैं ॥³¹
 खींच लेती वो शब-ए-हिज़ मे⁸ मुझे, शबिस्ता⁹ में अपने ।
 आँखें जी भर सोये उन्हें, निहारते रातभर रहती हैं ॥
 जागे हिसस-ए-समानिया-ए-तन-ए-जवाँ¹⁰ से शर्माकर ।
 मेरे सीने पे रख अपना सर, चेहरा छुपाये रहती हैं ॥
 हय! मुझे बाँहों में भरने की ये अँगड़ाई ले लेती जान ।

1. पल-पल । 2. लम्बे बाल वाली । 3. मृगशावक नयनी । 4. प्रेमिका । 5. सोलह अंगों पे ।
 6. श्रृंगार । 7. कजरारी । 8. विरह की रात्रि में । 9. शयनकक्ष । 10. सजीले तन के आठ अंग ।
 11. मिलने के समय की हया ।

शर्म-ए-वस्ल¹¹ को छोड़, जो हिज़ में बेबाक हुए रहती हैं
 ॥

अभी वो भीग रही थी, अब वो शायद बदल पैरहन² रही
 होगी ।
 बारिस की बूँदों से सरापा वो मुश्कबू² महक यूँ उठी होगी
 ॥
 खड़ा हूँ मैं उसके घर के आगे और, और वो चली गयी,
 सोचूँ ।
 नज़र के आगे न सही शबिस्ता³ में दहक वो भी रही होगी
 ॥
 पड़ी थी तो कुछ शोख बूँदें बारिस की, सफ़ेद तंग पैरहन
 पे ।
 मुझे देखा होगा तो झुँझला, शोखि-ए-अब्र⁴ पर अब बरस
 रही होगी ॥

2 वस्त्र । 2. कस्तूरी जैसी सुगंध वाली । 3. शयनकक्ष । 4. बादल की शोखी । 5. बचे हुए पानी
 से । 6. अभी तक । 7. सुगंध । 8. गाल । 9. बुद्धिजीवी (Intellectual) । 10. डेकार्ट का
 प्रसिद्ध वाक्य (I think therefore I exist) । 11. प्रेमिका की गली । 12. देखभाल । 13.
 पहला । 14. तिमार शब्द के अक्षर समूह । 15. सरफिरा । 16. उद्यम के मकाम ।

कमर तक खुली जुल्फें होंगी तर आब-ए-पसखुर्दः⁵ से,
हनोज़⁶

मुश्क⁷ से ।
झटक जुल्फों से बूँदें, जवाँ मर्मरी बाँहें उठाये उन्हें अब
बाँध

रही होगी ॥
चूम रही होंगी क्यूँ खुशबख्त बूँदें फिसल कर फूल से
आरिज़⁸

को ।
आईने के आगे होगी तो, आईने के दिल में आग जल
रही होगी ॥
मुहब्बत में गिरा जाता हूँ, महक रही साँस याँ जाँ की गीली
खुशू से ।
मुझसे भी बड़ी ज़हीन⁹ है वो, 'सोचूँ तो हूँ',¹⁰ वाँ ये वो
दुहरा

रही होगी ॥
कू-ए-जानाँ¹¹ की तिमार¹² पुर'दर्द, क्यूँ नाम कहे अव्वल¹³
हरूफ़-ए-तिमार¹⁴ ।
खड़ा घर के आगे सोचूँ, दिन ढले, ये कहाँ से अब लौट
कर आ

रही होगी ॥
मैं आशिक़ सरगश्ता¹⁵ बेवज्ह दिमाग़ खपाऊँ, अरे
मुक़ाम-ए-कार¹⁶

को ।
दिनभर किताबें उलट, महकती पैरहन लिए बैठी, फिर पढ़
रही होगी ॥

बार-ए-शबाब¹ कान्हों पे लिए, यूँ थकी-थकी सी मेरी
जान चले ।

थके-थके से लगे अज़लात-ए-ज़ानू² हय! लगे कि
बला-ए-मता-ए-ख़िराम³ चले ॥
दिलकश⁴ है बहुत, सुस्त ख़िराम⁵ से पा की जानिब⁶
लचकती ये

जुम्बिश⁷ ।
सो बेहिस-बुतों सा⁸ बस देखता रहूँ, जब यूँ मेरे आगे मेरी
बला-ए-जान⁹ चले ॥
हर जुम्बिश-ए-पा¹⁰, हुस्न-ए-रवाँ¹¹ से, गिराने को इक
बिजली

दिखा के रुक जाए ।
मेरे देखे से ये परवान चढ़ी क़यामत, या अपने आप ही, यूँ
ही

बला-ए-जान चले ॥
बार-ए-कार-ए-उल्फ़त से¹² हय! बिठा के मेरे दिल की
ज़मीन,

कल बारहा ।
बाद मुद्दत आज देख मुझे, भागी यूँ, ज्यूँ कोई तिपल¹³ भाग
बर्क़ख़िराम¹⁴ चले ।

1. बहार का भार। 2. घुटनों की ताकत। 3. मृदुल गति के उत्कर्ष की मुसीबत। 4. चित्ताकर्षक। 5. मृदुल गति। 6. तरफ़। 7. गति। 8. जड़ मूर्तियों सा। 9. प्राण का संकट। 10. पैर की गति। 11. गतिशील सौन्दर्य। 12. प्रेम के कारोबार के वज़न से। 13. बच्चा। 14. बिजली की गति।

तेरी जुल्फों की खुशबू आती है ।

अब क्या बताऊँ मुझे तुझमें क्या अच्छा लगता है ।
 जिसे देख कहें अच्छा, उससे ज़्यादा तू अच्छा लगता है ॥
 तुझे देखे वस्ल-ओ-फ़स्ल¹, सो हिज़² खींचे बाँहों में ।
 तू रहे आगे तो दिल को ज़्यादा अच्छा लगता है ॥
 मेरी फ़िक्र में दम-ब-दम³ रहे महवियत-ए-ज़िफ़⁴ ज्यूँ दम
 ।
 न देखूँ तो भी तुझे देखूँ, जज़्बः यूँ होशजदा अच्छा लगता
 है ॥

मेरी हथेली से तेरी जुल्फों की खुशबू आती है ।
 कहूँ जो ये बात, तो वो मुश्कबू¹ तस्वीर-ए-बुत² मुझसे
 शर्माती है ॥
 ख़िरदबाख़ता³ हूँ नहीं, तो फिर क्यों कोई मुझे समझाये ।³⁷
 खुदा से पूछूँ, कि वो बुतों⁴ क्यों नहीं गले से लग जाती है
 ॥
 पुकारूँ क्यों न तुझे, तेरे नाम के हर्फ़-ए-इल्लत⁵ को बिगाड़
 ।
 ऐ निहाँ! तू क्यों यूँ मेरी तबीयत बिगाड़े जाती है ॥
 अपनी जान उससे एक, पर जाने फिर भी क्यों ।
 मेरी बाँहों में आने से उसे झिझक सी आती है ॥
 इतना ही लिहाज़, तो क्यों बनाती जुल्फों को मेरा सिराहना
 ।
 मुझे पास बुलाने को हर शब⁷ एकटक निहारे जाती है ॥

1 मिलन और दूरी। 2. विरह। 3. पल-पल। 4. चर्चा की तल्लीनता।

1. कस्तूरी जैसी सुगंध वाली। 2. प्रेमिका की तस्वीर। 3. अक्ल का मारा। 4. प्रेमिका। 5. स्वर। 6. कवि प्रेमिका के नाम को बिगाड़ कर निहाँ कहता है। 7. रात।

इक नाहिद—ए—जवाँ के शानेँ पे, सर रख कर बलखाई
हुई सी।

मुझे देख रही, मेरी नींदों में आकर, वो कुछ यूँ शरमाई हुई
सी ॥

याँ शिकवाआमेज़³ लहजे में पुकार रही है उसे, मेरे दिल
की

बेकरारी ।

और वाँ वो है, महव—ए—खुमार—ए—रंगीनि—ए—उल्फ़त⁴
अलसाई

हुई सी ॥

नहीं ये कोई एहसास—ए—उमूमी⁵, दिल लगाने की हसीं
सज़ा पा

रहा ।

पहले—पहल तुझसे मिला हूँ, और फिर से है मिलने की
चाहत

आई हुई सी ॥

मशशातः—ए—शबाब⁶ पर, गोयाँ ख़म⁷ खा मुझे देखते हुए ।

रात भर वो नींदों में रही, मुझे जगाये शरमाई हुई सी ॥

1 युवा सखी। 2. कंधे। 3. शिकायत पूर्ण। 4. प्रेम की रंगीनी के मद में तल्लीन। 5. साधारण
एहसास। 6. जवानी की प्रसाधिका। 7. मानो। 8. वक्रता।

वही जो ख़राबी है।

मजाज़¹ की बर्बादी है॥

तू शोख़ आहू—ए—ततार² ।

शौक़—ए—जाबिर³ जगाती है॥

लफ़्ज़—ए—ख़ित्बत⁴ से पहले ही।

तू बुज़ाँ नज़र आती है॥

थकी सी ख़िराम⁵ रात में।

पाज़ेब खनकाती है॥

सो के जगूँ तो मुझसे।

हय! तेरी महक आती है॥

1. संसार। 2. ततार प्रदेश का चंचल हिरण। 3. पकड़ने की इच्छा। 4. वह लफ़्ज़ जो
धर्मोपदेशक विवाह के समय पढ़ता है। 5. हृदयस्थ प्रेमिका के साथ की चाह। 6. मृदुल गति।

चला हूँ जिस राह में, उस राह—ए—उल्फ़त का अंजाम
क्या होगा ॥

सोचा ही नहीं, कि मुझे न मिली तुम, तो मेरा क्या होगा ।
मेरी महवियत—ए—रंगीनी¹, मेरी बेकरारी का क्या होगा ॥
पहले—पहल आँखें मिला के ही तुझसे, ज़ब्बे हुए हैं यूँ
बेसाख्त² ।
तू हिज़³ का जब ओट किए आयेगी पास, तो क्या होगा ॥
पुकार उठी है बेज़बॉ⁴ हो ज़बॉ, तुझे गज़ालचश्म,⁵
जुल्फ़दराज़⁶

कह ।

सोचा ही नहीं के तू न आयेगी, तो नालः—ए—दिल का
क्या होगा ॥
हसीं है सदर् धुंध में लिपटी ये जो फ़िज़ाएँ तेरी रंगीनी से
।

¹रंगीनी में खोई तल्लीनता। ². सहज। ³. विरह। ⁴. मौन। ⁵. मृगशावक नयनी। ⁶. लम्बे बाल वाली। ⁷. दिल से निकली फ़रियाद।

आज फिर वही पहले—पहल तुझसे मिलने का लम्हः याद
आया है।
मिली है आँखें, गुँचा—ए—नीमबाज़¹ सा हुस्न तेरा शर्माया है
॥
यकायक² मिलते ही आँखें, झुक गई हैं तेरी पलकें मेरे आगे
।
तन उठा तेरा लब—ए—अनफ़³, तेरे सुर्ख लबों पे फड़क
आया है॥
यूँ क्यूँ तू अब आई है नीन्दों में उतर! अब मेरे ख़ाब में ।

¹. अधखिली कली। ². अचानक। ³. नासिका के पुट का किनारा।

गुज़र चुकी है अब जब सारी रात, जागने का वक़्त जब
आया
है ॥

महव हूँ गिरफ़्त-ए-जुल्फ़-ए-मुश्कबू³ ।
बेकस⁴ है दम कुछ एक महीने से ॥
छलक रही है मेरी आँखों से शराब ।
फुर्सत नहीं मय-ए-चश्महा-ए-यार⁵ पीने से ॥
लगी है आग रक़ीबों⁶ के दिल में ।
ज़ाहिदों को नहीं नींद, कुछ एक महीने से ॥
लब-बलब⁷ लबों पे थरथराये है लब
मड़का लब-ए-अनफ⁸, रोक जुम्बिश¹⁰ सीने से ॥
न सोऊँ, न जागूँ, न रोऊँ ख़ुमारी में¹¹ ।
खंजर-ए-उल्फ़त,¹² यूँ है गुज़रता सीने से ॥
मेरे आलम-ए-मस्ती¹³ को कौन जाने ।
जाने वो, जो लगा है मेरे सीने से ॥
आग पे ज्यूँ बरसे आब-ए-हयात¹⁴, यूँ ।
लगा के आग लिपट जाये सीने से ॥
जौक¹⁵ से खंजिल¹⁶ तंग पैमाना-ए-जौक¹⁷ ।
होश का समन्दर ग़क¹⁸ बेखुदी¹⁹ के सफ़ीने²⁰ में ॥

नशे में चूर हूँ, कुछ एक महीने से ।
गुल-ए-निगार¹ को लगाये सीने से ॥

कौन कहता है, कि मुद्दत हुई है बिछड़े हुए मुझे तुझसे ।
नींद में अभी तो देखा था तुझे, कुछ रुठी हुई सी मुझसे
॥
मेरे कान्हें पे अपनी बाँह रख शानः-बशानः¹ हुई ।

1. प्रेमिका रूपी फूल। 2. लीन हूँ। 3. कस्तूरी जैसी सुगंधित जुल्फों के बंधन में। 4. असहाय।
5. प्रेमिका के आँखों की शराब। 6. दुश्मनों। 7. नहीं पीने वालों को। 8. होंठ पे होंठ रखे। 9.
बीनी (Nose) के पुट का किनारा। 10. गति। 11. नशे में। 12. प्रेम का खंजर। 13. मस्ती की
दशा। 14. अमृत। 15. खुशी। 16. शर्मिदा। 17. खुशी का पैमाना। 18. निमग्न। 19. बेसुध
अवस्था। 20. नाव।

1. कंधे से कंधा सटाये। 2. टुंडी।

तू महक रही थी साँस में, पर नज़र न मिला रही थी मुझसे
॥

मेरे शाने से जुदा शाने पे अपना ज़क़न^१ रख तू तू देख ।
रही थी जाने किधर, जाने क्यूँ नींद में भी रुठी हुई थी
मुझसे ॥

न वस्ल^१ की चाहत है मुझे, न मुझे है हिज़^२ से कोई गुरेज़
।

पहले पहल की चाहत का रहे लम्हः, बस यूँ ही
क़यामतख़ेज़^३ ॥

आँखों का तुझसे मिलते ही, ये तेरी पलकों का झुकना ।
ये पहले-पहल की रंगीनी, रहे हमेशः यूँ ही कमआमेज़^४ ॥
मेरी महवियत^५ में महर्व^६ रहे, यूँ ही तेरी मस्त आँखें ।
मेरे तसव्वुर^७ में रहे तेरा ख़याल ऐ मेरी जान! यूँ ही
ज़रख़ेज़^८ ॥

1. मिलन । 2. विरह । 3. उथल-पुथल मचाने वाला । 4. अंतर्मुखी । 5. तल्लीनता । 6. खोयी । 7.
ध्यान । 8. उर्वर ।

वो पहले-पहल तुझसे मेरी आँखों का मिलना ।
तेरी पलकों का उठना, झुकना, और फिर न उठना ॥
प्यार के पहले-पहल के लम्हों की बेकरारी से ।
ताज़-दर्म यँ, जिस्म हो जागा ज्यूँ देख कोई हसीं सपना ॥
तेरी मूँदी पलकों पे मेरी नज़रों के उठने-गिरने से ।
तेरे थरथराते लबों से मेरी धड़कनों का धड़कना ॥

1. स्फूर्त (तरो-ताज़ा) ।

हूँ महव बेखुदी में

हूँ महव¹ बेखुदी में, लम्हात-ए-वस्ल² है, या है फिराक³,
कोई

हमे बताये ।

वो मेरे सामने है तो ठीक, नहीं तो मेरी जानिब कोई उसे

बुलाये ॥

जुल्फ-बदोश⁴ जुल्फ-ए-दराज⁵ खोले, वो मुश्कबू⁶ अब
सता

रही है मुझे ।

मेरी महक उठी साँस को उसकी जानिब ले जा,
तेजरौ-हवा⁷

कोई उसे सताये ॥

तू सो रही, तू अब जाग रही,

महव-ए-खयाल-ए-खाब-ए-हसिं-ए-गुजश्तः-शब⁸ तू
अब

खम्याजः खींच रही⁹ ।

हर हसीन लम्हे तेरे रहते पेशेनजर, जिसने की है ये

हालत-ए-दिल, उसका हाल-ए-दिल भी कोई हमें बताये

॥

उसके चश्महा-ए-सफ़ी से¹⁰ फूटा है, मेरे दिल में
मय-ए-नाब¹¹

का झरना ।

उसके आँखों की मय-ए-तुंद¹² उतर आई है इन आँखों में,
ये

1. खोया हुआ। 2. मिलन के लम्हे। 3. विरह। 4. कंधे पर जुल्फ बिखरे। 5. लम्बे बाल। 6. कस्तूरी जैसी सुगंध वाली। 7. शीघ्रगामी हवा। 8. बीते रात के हसीन स्वप्न के खयाल में खोई। 9. अँगड़ाई ले रही। 10. स्वच्छ आँखों से। 11. स्वच्छ शराब। 12. तेज़ शराब।

बात कोई उसे बताये ॥

उसके फ़रोग-ए-हुस्न से, मेरे वजूद में, रक्स-ए-बेखुदी¹
कभी

ख़त्म न हो ।

वो हो मेरे आगे तो, वो न हो तो भी, ये आलम-ए-बेखुदी²
कभी

ख़त्म न हो ॥

महव हूँ उसके तसव्वुर³ में, और महक उठा है मेरी ज़ुलूम⁴
का

कोना-कोना ।

नौअरुस⁵ वो नज़र आयी है अब हमें पेशेनजर, ये

नज़ारः-ए-बेखुदी⁶ कभी ख़त्म न हो ॥

जुल्फ-बदोश⁷ जुल्फ-ए-दराज⁸ खोले, फिर से वो मुश्कबू⁹
सता

रही मुझको ।

नीमबाज-आँखों से¹⁰ है मय-ए-दुआतशः¹¹ छलकती, ये

नशा-ए-बेखुदी¹² कभी ख़त्म न हो ॥

1. आत्मविस्मृती का नृत्य। 2. बेसुध होने की दशा। 3. ध्यान। 4. अस्तित्व। 5. नव-वधू। 6. बेसुध अवस्था में नज़र आने वाला दृश्य। 7. कंधे पर जुल्फ बिखरे। 8. लम्बी जुल्फें। 9. कस्तूरी जैसी सुगंध वाली। 10. अर्ध-उन्मीलित आँखों से। 11. दो बार खींची हुई शराब। 12. बेसुध अवस्था का नशा। 13. प्रेम की अनुभूति का एहसास। 14. होश की पायल। 15. बेसुध अवस्था की चंचलता। 16. स्नेहसिक्त आँखों से। 17. झरना। 18. शुद्ध शराब। 19. बेसुध अवस्था का मद।

रक्स-ए-एहसास-ए-मुहब्बत¹³ में पाज़ेब-ए-होश¹⁴ खुल के है

फिंक गई कहीं ।

के अब बस तू तू नज़र आये है हमें, ये रंगीनि-ए-बेखुदी¹⁵ कभी

ख़त्म न हो ॥

तेरी आशना-आँखों से¹⁶ मेरी ज़ात में सरापा ज्यूँ फूटा हो कोई

आबसार¹⁷ ।

मय-ए-नाब¹⁸ तेरी आँखों की छलक उठी है मेरी आँखों से, ये

खुमारि-ए-बेखुदी¹⁹ कभी ख़त्म न हो ॥

मेरे वजूद में निहाँ²⁰ हो तो हो, मेरी आँखों के आगे भी यूँ ही रहो

तुम, के तुझे देख सकूँ ।

जौक-ए-दीद-ए-जान²¹ है जिस दुई²² में, वो दुई बनी रहे, ये

तसव्वुफ़-ए-बेखुदी²³ कभी ख़त्म न हो ॥

वो दीद-ए-बुताँ²⁴ ही क्या के बाद दीदार, हर बार हसरत-ए-दीद²⁵ न बनी रहे ।

मय-ए-वस्ल²⁶ का तलबगार²⁷ मैं नहीं, ये
खुमारि-ए-जमाल-ए-बुताँ,²⁸ ये हश्र-ए-बेखुदी²⁹ कभी
ख़त्म

न हो ॥

इस आलम-ए-रंगीनि-ए-मस्ति-ए-बेखुदी¹ से अब
कमबख़्त

20. छिपी हुई। 21. प्रेमिका के दर्शन का आनंद। 22. द्वैत। 23. बेसुध दशा में सांसारिक विषयों से विरक्ति की अवस्था। 24. प्रेमिका का दर्शन। 25. देखने की इच्छा। 26. मिलन की शराब। 27. आकांक्षी। 28. प्रेमिका के सौन्दर्य से जन्मे नशे में उँघने की अवस्था। 29. बेसुध अवस्था की मुसीबत।

1. बेसुध अवस्था के आनंद की रंगीनी की अवस्था। 2. शुद्ध शराब। 3. कजरारी। 4. बेसुध अवस्था। 5. खोयी। 6. चेहरा। 7. तल्लीनता। 8. संयम। 9. नासा-पुट का किनारा। 10. आनंद की थरथराहट। 11. लाल। 12. लाल शराब। 13. संयम के अत्याचार की अति। 14. मिलन की अधियारी। 15. कजरारी आँख का किनारा। 16. निडर। 17. बिजली। 18. भरम में डालने वाला सौन्दर्य। 19. सच्ची शराब। 20. उन्माद की शराब के नशे का आवेग। 21. संवेदना रूपी जाहिर। 22. आसमाँ की गति। 23. सामीप्य। 24. अमृत। 25. विषमिश्रित।

कोई न मुझे जगाये ।
 कि मय-ए-नाब¹ छलकाती तेरी सुर्मगी³ आँखों से, फिर से
 हम हैं
 आँखें मिलाये ॥
 मेरी बेखुदी⁴ में मह्व⁵ तेरी मस्त आँखों से तेरे रू⁶ की
 महवियत⁷
 का जब्⁸ ।
 रुक-रुक कर कँपकँपाने को, तने लब-ए-अनफ⁹ पे
 लर्ज:-ए-जौक¹⁰ है जगाये ॥
 तेरा सुर्खगूँ¹¹ लब छलका रहा ला'ल-ए-मुजाब,¹²
 इंतहा-ए-जौर-ए-जब्¹³ से कँपकँपा ।
 तारीकि-ए-वस्ल¹⁴ दिखा, लब-ए-सुर्मगि-ए-चश्म¹⁵ हो
 बेबाक,¹⁶
 नज़र से बक¹⁷ है गिराये ॥
 तेरे हुस्न-ए-मजाज़ी¹⁸ की मय-ए-हकीकी¹⁹ से छलके हैं
 मेरे
 जिस्म-ओ-जान ।
 तैश-ए-नशा-ए-मय-ए-जुनूँ²⁰ से, मेरा जाहिद-ए-जब्ब²¹
 गर्दिश-ए-गदूँ²² को है डराये ॥
 के जिसकी कुर्ब²³ से मेरे भीतर फूटता है दम-ब-दम
 आब-ए-हयात²⁴ का झरना ।
 वो मेरी ज़हरआलूद²⁵ चाहत मेरे पास है तो ठीक, नहीं तो
 पास
 कोई उसे बुलाये ॥

ये महल:-ए-राह-ए-नौ-ए-ज़िन्दगी¹
 मुक़ाम-ए-फ़ना-ए-तसव्वुफ² मुझे नज़र आए ।
 ता'बीर³ तू खाब तू आँखें खोलूँ तो तू तू न हो तो भी
 तू मुझे नज़र आए ॥
 नूर-ए-सफ़ी-ए-चश्म-ए-आश्ना⁴ से तेरे, फूटा है
 नूर-ए-आबसार-ए-आब-ए-हयात⁵ दिल में ।
 ख़ामोश नवा-ए-नाशिकस्त:-ए-फ़ाश-ए-वजूद⁶ मेरी,
 शिकस्त:हिम्मत⁷ मुझे नज़र आए ॥
 तेरे आगे रक्स-ए-बेखुदि-ए-एहसास⁸ की महवियत⁹ में
 होश-ए-बेहोशी¹⁰ भी जब न रहे ।
 फ़ैज-ए-नज़र¹¹ तेरा फ़ैज-ए-ख़ुदा¹² लगे जब मुझे, कैसे
 ख़ौफ़-ए-कुफ¹³ मुझे नज़र आए ॥
 आज पेश-ए-जहाँ-ए-मुहरिक¹⁴ एक नई
 तौज़ीह-ए-ज़हन¹⁵
 उभरती है, महव-ए-फ़िक्र-ए-नौ¹⁶ ।
 आज मसाइल-ए-जहाँ¹⁷ का सच, जहाँ का सच, अस्ल में
 आज
 भरम मुझे नज़र आए ॥
 बारहा मराहिल-ए-फ़िराक़ से¹⁸ गुज़र कर भी, अब भी
 हिज़्र¹⁹ वही,
 पर जाँगुसिल²⁰ नहीं ।
 मेरी आँखों में जो आज देखे तू तो तेरी ही आँखों की
 मय-ए-तुंद²¹ तुझे नज़र आए ॥

1. ज़िन्दगी के नये रास्ते का पड़ाव। 2. सांसारिक विषयों से विरक्ति के खत्म होने का समय। 3. स्वप्न काल। 4. स्नेहसिक्त आँखों से उतरी पवित्र रोशनी। 5. अमृत के झरने की आभा। 6. अस्तित्व की न थकने वाली आवाज़। 7. हत् उत्साह। 8. एहसास से जागी बेसुध अवस्था का नृत्य। 9. तल्लीनता। 10. होश न होने का होश। 11. दृष्टि की दानशीलता। 12. भगवान का उपकार। 13. नास्तिक को मिलने वाली सज़ा का डर। 14. गति देने वाले संसार के आगे। 15. अक़ल की व्याख्या (Interpretation)। 16. नयी फ़िक्र में तल्लीन। 17. जहाँ की समस्या (झंझट)। 18. विरह की मंजिलों से। 19. विरह। 20. कष्टप्रद। 21. तेज़ शराब।

खलिश-ए-बेखुदी¹ चाहती है, कि मेरी नज़रों के आगे
हमेशः तू यूँ

ही बनी रहे ।

मेरे आलम-ए-तसव्वुर² में है महवियत-ए-हक-ए-नौ,³ ये
महवियत-ए-नौ⁴ यूँ ही बनी रहे ।।

ऐ गुँचःदहन!⁵ ऐ ख़ंदःदहन!⁶ मेरी ज़ात में यूँ ही रहे हमेशः
तेरी

बेखुदि-ए-हस्ति-ए-रंगीन⁷ ।

मेरे वजूद में निहाँ⁸ तू पेशेनज़र⁹ भी कि तुझे देख सकूँ,
पेशेनज़र

भी तू यूँ ही बनी रहे ।।

नशा, खुमारी¹⁰, नुआस-ए-बेखुदी,¹¹ फिर कोई
क़त्रः-ए-मय¹² तेरे

53

54

हुस्न का, और फिर नशा ।

मय-ए-वस्ल¹³ नहीं, मेरे तसव्वुफ़¹⁴ को दुई¹⁵ की चाह है,
दुई, कि

जिसमें पेशेनज़र हमेशः तू यूँ ही बनी रहे ।।

1. बेसुध अवस्था की उलझन। 2. प्रेम-संसार। वह संसार जहाँ आशिक प्रेमिका की कल्पना किए हुए पहुँचता है। 3. नवीन सच की तल्लीनता। 4. नयी तल्लीनता। 5. कली जैसे सुंदर मुँह वाली। 6. जिसके चेहरे पर हर समय हँसी खेलती रहती है। 7. रंगीन हस्ती की बेसुध अवस्था। 8. छिपी हुई। 9. नज़र के आगे। 10. नशे की ऊँघ। 11. बेसुध अवस्था की ऊँघ। 12. शराब का कतरा। 13. मिलन की शराब। 14. संसार से विरक्ति। 15. द्वैत।

सुरुर-ए-इश्क¹ बस बना रहे, होश से बेगाना मैं रहूँ ।
नज़र के आगे तू रहे, औ होश से बेगाना मैं रहूँ ॥
लम्हात-ए-कुर्ब-ए-वस्ल² को कुर्ब-ए-फ़ासला-ए-फ़िराक³
के

लम्हात-ए-जाँगुदाज⁴ में मिला ।
तुझे बस जी भर देखता रहूँ मैं, होश से बेगाना मैं रहूँ ॥
तू अब सो रही, अब जाग कर अपने खम्याज़-ए-बेखुदी⁵
से मुझे

जगा रही ।
तेरे हर लम्हे रहते नज़र के आगे, होश से बेगाना मैं रहूँ
॥
खुशबू-ए-पसखुर्द-ए-खाब-ए-हसी⁶ गुज़श्त-शब की,⁷ है
तेरी

जुल्फों में ।
तू बाँहों में यूँ ही खड़ी रहे, होश से बेगाना मैं रहूँ ॥
तुझे न पाकर नज़र के आगे, अशकबार⁸ क्यूँ हो गई है
आँखें ।

नुआस-ए-बेखुदी⁹ में फिर तू नज़र आये, होश से बेगाना
मैं रहूँ ॥

महव¹⁰ रहें मेरी आँखें तेरे चश्म-ए-नीममस्त में¹¹, जैसे तू
महव मेरे

वजूद में ।
महव तू मेरी बेखुदी¹² में यूँ ही दम-ब-दम¹³ रहे, होश से
बेगाना

मैं रहूँ ॥

गज़ाल-ए-एहसास¹ मैं, तू मुश्कबू², दश्त आवार³ मैं ।

साथ तू हर वक़्त, पेशेनज़र भी तुझे ढूँढता मैं ॥

तेरी शुआअ-ए-चश्महा⁴ से फूटा है वजूद⁵ में,

चश्म-ए-आब-ए-हयार्त⁶ ।

एक और तीर-ए-नज़र माँगता, आहू-ए-बिस्मिल⁷ का

चश्महा-ए-नादौ⁸ मैं ॥

खम्याज़-ए-खयाल-ए-रंगी⁹ से रहती है ज़ात आजर्किल
कुछ

और रंगी ।

दश्त-ए-सन्दल-ए-तसव्वुर-ए-जानौ¹⁰ से आती

हवा-ए-सरगश्ता¹¹ मैं ॥

मेरी बेखुदि-ए-ज़ात¹² में महव¹³ है,

जौर-ए-खम्याज़-ए-बेखुदि-ए-जाँ¹⁴ ।

1. प्रेम का चढ़ता नशा। 2. मिलन की समीपता के लम्हे। 3. विरह की दूरी में अनुभूत समीपता। 4. चित्त को द्रवित करने वाले लम्हे। 5. बेसुध अवस्था की अँगड़ाई खींच। 6. हसीन खाब की बची हुई खुशबू। 7. बीते रात की। 8. आँसू बहाने वाली। 9. बेसुध अवस्था की ऊँघ। 10. खोयी। 11. नशीली आँखों में। 12. बेसुध अवस्था। 13. पल-पल।

1. एहसास का हिरण। 2. कस्तूरी जैसी (खुशबू)। 3. वन में भटकने वाला। 4. आँखों की रोशनी। 5. अस्तित्व। 6. अमृत का स्त्रोत (झरना)। 7. घायल मृग। 8. नासमझ आँखें। 9. चंचल कल्पना की अँगड़ाई। 10. प्रेमिका की कल्पना का चंदन-वन। 11. भटकी हुई हवा। 12. अस्तित्व की बेसुध अवस्था। 13. तल्लीन। 14. प्रेमिका की बेसुध अँगड़ाई का अत्याचार। 15. खुश। 16. नाखुश। 17. नवीन वैराग्य। 18. नया गंतव्य (मंजिल)। 19. बेसुध अवस्था की अँगड़ाई। 20. प्रतिक्षण। 21. नये यथार्थ की तल्लीनता। 22. कल्पना (ध्यान)। 23. वस्त्र और आभूषण आदि जो ब्याह से पहले दुल्हन के घर जाते हैं।

कभी शाद,¹⁵ कभी सरगिराँ,¹⁶ अपने तसव्वुफ़-ए-नौ¹⁷ का
नौ-मर्हल:¹⁸ मैं ॥

तू नींद में, खाब में, खम्याज़:-ए-बेखुदी¹⁹ में, मुझमें
दम-ब-दम²⁰

बस तू ।
तुझे महवियत-ए-हक़-ए-नौ²¹ ने तसव्वुर²² में जो भेजा है,
वो

दस्तपैमाँ²³ मैं ॥

समझा रहे मुझे ज़ाहिद-ओ-कैस-ओ-फ़रहाद,²⁴ और न
बढ़, इस

राह-ए-नौ-ए-ज़िन्दगी²⁵ पे ।
खौफ़-ए-हश्र-ओ-क़यामत²⁶ जिसको नहीं हुआ, हूँ वो
नौआमोज़²⁷

फ़ना²⁸ मैं ॥
न हो खौफ़ कुफ़्र²⁹ का, यूँ रहे तू मेरे पैकर-ए-ख़याल³⁰ में
ढल,

दिल में उतर ।
हनोज़ नाआश्ना³¹ था जिस सरचश्म:-ए-ज़ौक़³² से, वही तू
फ़रेष्ट:³³ मैं ॥

24. फ़रहाद, मजनूँ और विरक्त। 25. जीवन का नया पथ । 26. प्रलय और मुसीबत का भय। 27. नव शिक्षित। 28. बर्बादी। 29. अकृतज्ञता। 30. कल्पना से बनी आकृति। 31. अपरिचित। 32. आनंद का उद्गम (स्रोत)। 33. मुग्ध।

एहसास-ए-निहाँ: ज़ब्ब:-ओ-कशिश

एहसास-ए-निहाँ: ज़ब्ब:-ओ-कशिश

चिनार

ज़ेर-ए-बर्फ़¹ सुलग उठी गर्मि-ए-बहारों से, लगी थी कब
की

आग रुद-ए-चनाब² में ।
अ ब ज ा क ' व ा '
ज ाहिर, नौ-रंग-ए-बर्ग-ए-दम-ए-ईसा-ओ-दम
ए-तस्लिम-ए-चनार³ में ॥
ख़ांद-ए-सुब्ह-ए-रू⁴ से तेरे, सुर्खा लबों की झड़ रही
ि च ग ा र ी
सुर्खगूँ-बर्ग-ए-चनार पे⁵ ।
होते होंगे चनार शब में शररखोज़⁶, अभी तो शररफ़शाँ⁷ हैं
रोज़-ए-बेहिजाब⁸ में ॥
गर्मि-ए-रवानी-ए-जवाँ⁹ का मुश्क तेरी साँस में, ताब¹⁰
लब-ए-सुर्मगिं-ए-चश्म-ओ-लब-ए-सुर्ख पे¹¹ ।
तेरी खुशबू-ए-नफ़स¹² को छू नसीम¹³ रुका हुआ, मेरे दम
स ा ह ी
दम-ए-बेदार¹⁴ में ॥

1. बर्फ़ तले। 2. चनाब नदी की धारा 3. चिनार की अंतिम साँस और उसमें पुनःप्राण (दम-ए-ईसा) फूँकने वाले चिनार के पत्तों का नवीन रंग, पतझड़ की तरफ़ इशारा। जब पहाड़ पतझड़ से पीला पड़ जाता है, तब चिनार के पत्ते लाल हो उठते हैं। पतझड़ में चिनार के पत्तों का सुर्ख (जो कि बहार का रंग है) होना विरह की अति के क्षणों में बीते हुए मिलन के सबसे उत्कट अनुभवों के क्षणों के याद आने के सदृश है। 4. चेहरे रूपी सुब्ह की मुस्कान। 5. चनार के लाल रंग के पत्तों पे। 6. आग बरसाने वाला। 7. उपद्रवी। 8. बेपर्दा दिन। रात्रि के घूँघट के बगैर। 9. तेज़ प्रवाह की ऊष्णता। 10. ताप। 11. लाल होंठ और आँख के काजल लगे किनारे पे। 12. साँस की महक। 13. धीमी हवा। 14. जागृत दम

कुर्ब-ए-जाँ गुदाज़-ए-हिज़¹ भी है खाकसार², अब तू है
मेरी

बाँहों में यूँ
न पूछ आतश-ए-चनार³ से लगी है आग, इन ज़र्दगूँ⁴
नज़ारों में

क्यूँ ॥
गर्द-ए-सुर्ख-ए-बर्ग-ए-चनार-ए-रोज़⁵ झड़ती है
अक्स-ए-शरर-ए-लब⁶ पे ।
सुर्खगूँ-साया-ए-चनार⁷ तेरे लबों को चूमती है मेरी आँखों
में

यूँ ॥
के तेरे ख़ांद-ए-सुब्ह-ए-रू⁸ के आगे तेरे सुर्ख लबों से
झड़ती

चिंगारी ।
गर्मि-ए-खुशबू⁹ से तपती रंगीनी में पिघल रही तू मेरी
बाँहों में

यूँ ॥
तेरे गर्म-मुश्क-ए-नफ़स से साँसों में रुकी है
गर्मी, गर्मि-ए-तस्लीम-ए-वादी¹⁰ सी यूँ ।

1. विरह में चित्त के द्रवित करने वाली समीपता। 2. विनम्र। 3. चिनार की आग। 4. पीले रंग वाले। 5. दिन के समय के चिनार के पत्ते की लाल गर्द। 6. लब से झड़ती चिंगारी का प्रतिबिंब। 7. चिनार की लाल परछाई। 8. चेहरे पर आई सुब्ह की मुस्कराहट। 9. खुशबू की ताप। 10. वादी की आखिरी गर्मी। 11. सुर्खाब (चकवा) का दिन, मिलन का दिन। चकवा के लिए प्रसिद्ध है कि इनका जोड़ा रात में अलग हो जाता है और दिनभर साथ-साथ रहता है। 12. शोले जैसा। 13. आगोश की थिरकन। 14. चेहरे पर आई सुब्ह की मुस्कराहट। 15. घूँघट। चिनार से रात में चिंगारी झड़ने की बात की जाती है।

तेरी सुर्मगीं आँखों से रोज़-ए-सुर्खाब¹¹ ठहरा है मेरी
आँखों में

ये शोल-गूँ¹² नज़ारें न रहेंगे यूँ ही, पर हम रहे साथ यूँ ही
जैसे ।
है अभी जुम्बिश-ए-आगेश¹³ रोके भींचे है खुद को
एक-दूजे की

बाँहों में ज्यूँ ॥
तेरी सुर्मगीं आँखों से रात का, तो खंदः-ए-सुब्ह-ए-रू¹⁴
से दिन

का भरम ।
सो सुर्ख बर्ग-ए-चनार से बरसे यूँ शोले, बरसे रात के
हिजाबों¹⁵

में ज्यूँ ॥
एक और सराब¹ है, सराब-ए-जल्बः-ए-बर्ग-ए-सुर्खगूँ-ए-
चनार² से ।
नज़ारों में लगी आग लगती है,
बोसा-ए-शुआअ-ए-आफ़ताब

से³ ॥
एक और नज़ारः है सुर्ख-बर्ग-ए-चनार⁴ सा तेरे लालगूँ
लबो

से⁵ ।
झड़ती चिंगारी चनारों से दिन में ही तेरे रू-ए-बेहिजाब⁶
से⁷ ॥

1. मृग तृष्णा। 2. चिनार के लाल पत्तों के जल्वे से उत्पन्न मृग तृष्णा। 3. सूरज की किरण के स्पर्श से। 4. चिनार के लाल पत्ते सा। 5. रक्तिम होठों से। 6. अवगुंठन विहीन चेहरे से। 7. पीला। 8. होंठ रूपी लाल शराब। 9. चित्त को द्रवित करने वाली कँपकँपी। 10. चिंगारी का कारण। 11. बहार की आग। 12. पतझड़ की आग (चिनार के पत्ते पतझड़ में सुर्ख हो उठते हैं)। 13. बहार की अंतिम साँसों से। 14. जवानी के आरम्भ की साँस से।

एक और रंग है बर्ग-ए-चनार पे जलकर जर्दगूँ हो गिर
जाने

का ।
तेरे ला'ल-ए-मुज़ाब-ए-लब⁸ की छलक के लर्जः-ए-जाँ
गुदाज⁹

से ॥
वज्ह-ए-शरर¹⁰ दोनों की जुदा, याँ आतिश-ए-बहार,¹¹
वाँ आतिश-ए-खिजा¹² ।
एक दम-ए-तस्लीम-ए-बहार से¹³, एक दम-ए-उन्फुवान-
ए-शबाब से¹⁴ ॥

खम्याज़ः-ए-महवियत-ए-फ़जा¹ यकलख़्त²
दामन-ए-बहाराँ

नज़ारों से खींचे है ।

1. फ़जा की तल्लीनता की अँगड़ाई। 2. अचानक। 3. बहार का दामन। 4. नदी की धारा की आग। 5. बहार की उखड़ती साँस की रंगीनी। 6. रंग बिखेरने वाली। 7. मुरझाये (पीले पड़े)। 8. पतझड़ का दृश्य। 9. चिनार के लाल पत्ते। जब पहाड़ पतझड़ से पीला पड़ जाता है, तब चिनार के पत्ते लाल हो उठते हैं। 10. नवीन सौन्दर्य के शोले से। 11. चिनार की परछाई से रक्तिम हुए दृश्य में। 12. चेहरे पर सुब्ह की मुस्कराहट। 13. खोई हुई। 14. आसमाँ तले। 15. खोयी हुई। 16. कजरारी (लक्ष्यार्थ कजरारी आँखों वाली)। 17. साँस की सुगंध। 18. बाँहों में भरने की गति।

पिघल उठी है बर्फ, आतश-ए-रुद-ए-दरिया⁴ से लगी
आग,

लगी नज़र के पीछे है ॥

खुशबुओं की गर्मी में तपती हुई रंगीनि- ए-दम -ए-
तस्लीम-

ए- बहार⁵ हुई है रंगअफ़श⁶ ।

कि ज़र्दगूँ⁷ नज़ार:-ए-ख़िज़ाँ⁸ को
बर्ग-ए-सुर्ख़गूँ-ए-चनार⁹

शोल:-ए-हुस्न-ए-नौ से¹⁰ सींचे है ॥

इस जल्व:-ए-सुर्ख़-ए-साया-ए-चनार में¹¹ ख़ंद:-ए-

सुब्ह-ए-रू¹² से तेरे, तेरे लबों की झड़े चिंगारी ।

बाँहों में महव¹³ तू, पता न चले ज़ेर-ए-आसमाँ¹⁴ ज़मीं, के
आसमाँ

ज़मीं के नीचे है ॥

गर्मि-ए-आब से तर ज़मीं सी तू बाँहों में ख़ाब में महव¹⁶
हो, तक

रही मुझे ऐ सुर्मगी¹⁷ ।

तेरे मुश्क-ए-दम¹⁸ से रुका है दम मेरा,
जुम्बिश-ए-आगेश¹⁹ और

तुझे बाँहों में भींचे है ॥

शेख़ि-ए-गुफ़्तार

महवियत-ए-वक्फ़:-ए-वस्ल-ए-रंगी¹ में तू कब आई थी ।
यूँ वस्ल² की बाँहें, कब हिज³ की बाँहों में समाई थी ॥
ये निशाँ-ए-निहाँ-ए-ज़ख्म-ए-वज्ज⁴ कैसा है, ऐ मेरी
जान ।

कब गुल-ए-आरिज़⁵ पे तेरे, मेरी हुई यूँ रसाई⁶ थी ॥
बेपैरहन⁷ न थी, न हो महव-ए-नदामत,⁸ ऐ खंदःदहन⁹ ।
गुज़श्तः शब सरापा तुझपे, मेरे तन की पहनाई¹⁰ थी ॥
ऐ गज़ालचश्म,¹¹ ऐ खंदःदहन, यही कल तबस्सुम¹² था ।
मेरे चश्महा को दहका, लबों पे मेरे जब तू भड़क आई थी
॥

पनाह-ए-वस्ल में परछाई तक न थी, जाँगुसिल
ग़म-ए-हिज¹³

की ।

पनाह-ए-हिज में यकलख्त,¹⁴ यूँ पनाह-ए-वस्ल उतर आई
थी ॥

1. चुलबुले मिलन के ठहराव की तल्लीनता। 2. मिलन। 3. विरह। 4. गाल पे कटे के निशाँ। 5. गाल रूपी फूल। 6. पहुँच। 7. पैरहन के बगैर। 8. हया में लीन। 9. जिसके मुँह पर हमेशः हँसी खेलती रहती है। 10. विस्तार। 11. मृगशावक नयनी। 12. मंदहास। 13. विरह में दिल को चाक कर देने वाला ग़म। 14. अचानक।

हय! मेरी ख्वाहिशें उसे जगाना चाहती हैं ।
और वो पेशेनज़र, नज़र के आगे सोये रहना चाहती है ॥
नीमशब¹ है वो सो गयी होगी, सो रातभर ।
मेरी हसरतें उसे निहारना चाहती हैं ॥
आँखों में आलम-ए-शब-ए-शबिस्ताँ-ए-निगार² ।
वो करवट बदल लिपट जाना चाहती है ॥
मैं भी बढाऊँ तेरी जानिब³ हाथ तो ।
कमरे की दीवारें टकराना चाहती हैं ॥
हय! ये आगोश को करवट लेती जुम्बिश⁴ ।
बिस्तर से मुझे नीचे गिराना चाहती है ॥
नीम-बरहन⁵ सीने पे खुली दराज-जुल्फ⁶ ।
अब मेरा सिराहना होना चाहती हैं ॥
खींच चादर छुपा लेती तू खुद को, जब ।
आँखें तुझे और निहारना चाहती हैं ॥
थकी-थकी सी जो चले वो खिराम,⁷ खाब में ।
पाँव मेरे पाँ पे खनकाना चाहती है ॥

1. अर्धरात्रि। 2. प्रेमिका के शयनकक्ष के रात की दशा। 3. तरफ़। 4. गति। 5. अर्द्धस्पष्ट। 6. लम्बे बाल। 7. मृदुल गति। 8. पाँव

महवियत-ए-तसव्वुर¹ में मेरी, जैसे तू नज़र आये मुझे, वैसे ही तू

मेरी नज़र के आगे आ ।

जौर-ए-बेखुदी² मेरी जात³ की, मुझपे कुछ और बढ़े, तू ऐसे⁶⁸

मेरी नज़र के आगे आ ।।

मय-ए-कशिश-ए-मय-ए-वस्ल⁴ छलकने दो फिजाओं में, दुई⁵ में

जो मज़ा, वो कहाँ एक जाँ होने में ।
ये तश्नगी⁶ मेरी नज़र की बुझेगी कहाँ वस्ल⁷ से, सो यूँ कर, के

प्यास से मर जाऊँ मैं, आज ऐसे तू मेरी नज़र के आगे आ ।।

मुश्कबू-जुल्फ़-ए-दराज़⁸ तू खोले मेरी बाँहों में, आज मैं खो जाऊँ

तेरी आँखों में, तू मेरी आँखों में ।

वैसे ही तू बेइंतिहा क़हर है, आज इंतहा हो जाए इस क़हर की,

1. कल्पना की तल्लीनता। 2. बेसुध अवस्था का अत्याचार। 3. वजूद। 4. मिलन की शराब के आकर्षण का नशा। 5. द्वैत। 6. प्यास। 7. मिलन। 8. सुगंधित लम्बे बाल। 9. अमर तृष्णा। 10. इन्द्रियाँ। 11. निमग्न। 12. खुशी की अति।

कुछ और बन-सँवर के, तू आज मेरी नज़र के आगे आ ।।
हो जाए पागल होश मेरा, इंतहा हो जाए तुझे देखने की
बेइंतिहा तश्नगी-ए-जाविदाँ⁹ की ।
हवास¹⁰ सब गक़¹¹ हो जाए बदहवासी में, इंतहा-ए-ज़ौक¹²
से

तुझे देखकर ही, तू ऐसे मेरी नज़र के आगे आ ।।

जुल्फ़-बकमर¹ वो शोख़,² दराज़-जुल्फ़-ए-मुश्कबू³ खोले मेरे

आगे से गुज़रे ।

हो वो जुल्फ़-बदोश,⁴ तो फिर कोई खयाल-ए-हसी⁵
उसकी

पनाहों में गुज़रे ।।⁶⁹

मय-ए-नाब-ए-चश्महा-ए-यार⁷ से, फिर जा रही मुझ
बुतपरस्त

काफ़िर-ए-ज़ाहिद⁸ की जान ।

1. कमर तक बाल बिखरे। 2. चंचल। 3. कस्तूरी जैसी सुगंधित लम्बी जुल्फ़। 4. कंधे पर बाल बिखरे हुए। 5. खुशनुमा कल्पना। 6. प्रेमिका की आँखों की शराब। 7. नहीं पीने वाले नास्तिक। 8. मिलन के चेहरे का स्वेद (सात्विक अनुभाव)। 9. मिलन का ठहराव। 10. खुशी के उतार का आगमन। 11. बीनी (Nose) के पुट का किनारा। 12. दमकयुक्त स्वेद। 13. फरियाद के संयम के जुल्म को। 14. चित्त को द्रवित करने वाला। 15. स्वेद लिए। 16. कँपकँपाते होंठों की लाल शराब। 17. चित्त का विक्षोभ। 18. अद्वितीय। 19. अचानक। 20. होंठ की लाली। 21. अनछुआ सौन्दर्य। 22. लब पर लब रखे। 23. सर पर लब रखे। 24. बार-बार।

अरक-ए-रू-ए-वस्ल¹ को चूमते हुए, गुज़रे कोई,
 वक्फ़:-ए-वस्ल⁹ यार की पनाहों में गुज़रे ॥
 आमद-ए-जज़-ए-जौक¹⁰ से, फड़कने को तना
 लब-ए-अनफ¹¹,

अरक-ए-रौगनी¹² से दमक ।
 जौर-ए-जब्त-ए-फुगों को¹³ तोड़, लर्ज:-ए-जौ गुदाज¹⁴
 लिए

मेरी नज़र के आगे से गुज़रे ॥
 अरकआलूद:¹⁵ ला'ल-ए-मुज़ाब-ए-लब-ए-लर्जी¹⁶ पे तेरे,
 कँपकँपाता है अब फुगों¹⁷ ।
 तेरे रू पे जाने कितने रंगीं यकता¹⁸ जलवे, हय! यकलख्त¹⁹
 मेरी

निगाहों से गुज़रे ॥
 अब तेरी सुर्खि-ए-लब²⁰ उठा तेरी दहकती माँग की
 दोशिज़गी²¹

में रंग भर दूँ ।
 लब-बलब²² उलझ, लब-बसर²³ हो बारहा²⁴, कि अब हर
 लम्ह:

तेरी बाँहों में गुज़रे ॥
 तेरी ख़म्याज़:¹ से है मेरे वजूद में रंगीनि-ए-निहाँअ² ।

1. अँगड़ाई। 2. छिपी रंगीनी। 3. लम्बी जुल्फ़ वाली। 4. प्राणों की पूँजी। 5. आँखों के सौभाग्य। 6. प्रतिस्पर्धा में लीन। 7. इन्द्रियाँ। 8. हृदयस्थ प्रेमिका के साथ की चाह। 9. छिपी हुई। 10. मूर्तिमान इच्छा से जगी रंगीनी की बेसुध अवस्था का अत्याचार। 11. बीते हुए क्षण के दर्पण पे। 12. अभी तक। 13. अँगड़ाई का प्रतिबिम्ब। 14. सर पे हाथ रखे। लक्ष्यार्थ बालों को सँवारते। 15. गाल, और बाँहों (खऑँ) पर पड़ा तंग वस्त्र। 16. सुगंधित बिखरी लट। 17. बाँह, कंधा और चेहरा। 18. होंठ की लाल शराब। 19. कजरारी आँखें। 20. साँस। 21. सजीले तन की ताज़ी खुशबू। 22. लम्बी जुल्फ़। 23. बेसुध अवस्था में खोये सौन्दर्य। 24.

अब तो करीब आ ऐ दराज़-जुल्फ़³, ऐ मेरी जान की
 मताअ⁴ ॥
 खुशबख़्त-ए-चश्म⁵ को देख महव-ए-रश्क⁶ बाकी बचे
 हवास⁷ ।
 दूँढ रहे पस्त हो तुझपे, यहाँ-वहाँ सामाँ अपना-अपनाअ
 ॥

शौक-ए-बुज़ाँ⁸ से हूँ बुझा-बुझा, कि तू अब ज़ाहिर जो थी
 निहाँ⁹ ।
 ऐ जौर-ए-बेखुदि-ए-रंगीनि-ए-बुज़ाँ-ए-मुजस्सम¹⁰ की
 मताअ ॥

आईना-ए-लम्ह:-ए-गुज़श्त: पे¹¹ ठहरा हुआ हनोज़¹²
 अक्स-ए-ख़म्याज़:¹³ ।
 दस्त-बसर¹⁴ हो, जुल्फ़ सँवारते मुझे देखने की तेरी कातिल
 अदाअ ॥
 ऐ पर्द:-ए-तंग-ए-हज़-ओ-आरिज़¹⁵ की मुश्कबू-काकुल-
 ए-परीश¹⁶ ।

मेरे रू-ओ-शान:-ओ-बाजू¹⁷ पे खुली जुल्फ़ का साया
 गिराअ ॥
 न दे लब को मय-ए-लाला:फ़ाम-ए-लब¹⁸ ऐ सुर्म: आलूद

चश्महा¹⁹ ।
 नफ़्स²⁰ को तो दे मुश्क-ए-तर-ए-तन-ए-जवाँ²¹ में
 लिपटी

जुल्फ़-ए-रसाअ²² ॥
 महव-ए-बेखुदी हुस्न²³ पे तेरे, ख़ाकसार²⁴ है अब
 शोख़ि-ए-

हुस्न²⁵ ।
 अब तो बर्क़-ए-नज़र²⁶ से मय-ए-नाब²⁷ पिला ऐ शबाब
 की

मताअ ॥

विनीत। 25. सौन्दर्य की चंचलता। 26. आँखों की बिजली। 27. खालिस शराब। 28. इन्द्रियों का उपद्रव। 29. मिलन की शराब। 30. निमग्न। 31. इन्द्रियाँ।

फ़िल्नः—ए—हवास²⁸ पूछे, कि हुस्न मेहरबाँ क्यूँ है चश्म पे ही
/ बादः—ए—वस्ल²⁹ में ग़र्क³⁰ कर हर हवास³¹ का शौक, ऐ
हवास की

मताअ ॥

जी चाहे, ऐ मेरी जान, मेरी जान की मताअ¹, तुझसे यूँ ही
बेदार²

रहने को ।

कहूँ मैं हिज्र को अच्छा, वस्ल को बुरा, बुजौँ³ को बेकिनार
करने को ॥

मुझे तकती गोरी नैना की कजरारी आँखों की
गर्मि—ए—महवियत⁴ ।

हय! ये खुली मुश्कफ़ार्म⁵ जुल्फ़—ए—रसा,⁶ चाहूँ अब
बेइख़्तियार⁷

रहने को ॥

दीद—ए—यार⁸ के जौक⁹ की छटपटाहट की जुम्बिश¹⁰ न मर
जाये कहीं ।

थामे हूँ मैं शौक की हर जुम्बिश,¹¹ खुद को और बेकरार
करने

को ॥

रह यूँ ही जाँसितौँ¹² फ़ासला लिए, कि तुझमें ग़र्क¹³
चश्म—ओ—दम¹⁴ को देखू ।

लिल्लाह! बाकी बचे हवास¹⁵ तड़पाते रहें मुझे बे—इमान
करने

को ॥

1. प्राणों की पूँजी। 2. जगा हुआ। 3. हृदयस्थ प्रेमिका के साथ की चाह। 4. तल्लीनता की गर्मी। 5. काले रंग वाली। 6. कमर तक लम्बे बाल। 7. बेकाबू। 8. यार का दीदार। 9. आनंद। 10. थिरकन। 11. गति। 12. जान को तड़पाने वाला। 13. निमग्न। 14. सौँस और आँख। 15. इन्द्रियाँ। 16. वस्त्र। 17. सजीला तन। 18. तन की सुगंध की गर्मी से उत्पन्न सौँसों की मृगतृष्णा। 19. नास्तिक। 20. दिल का घर। 21. लम्बे बाल की शुद्ध सुगंध। 22. कुटिया। 23. सजीले तन की खुशबू।

तेरे मलबूस¹⁶ से छिटक तपते रंगों की खुशबू तेरा
अंदाम—ए—जवाँ¹⁷ ।
सराब—ए—नफ़स—ए—गर्मि—ए—मुश्क—ए—तन¹⁸ से चाहे बेराह
करने

को ॥

बेशर्मा¹⁹ खानः—ए—दिल²⁰ है,
मुश्क—ए—तर—ए—जुल्फ़—ए—रसा²¹ की

खानकाह²² ।

बेईमान तेरे मुश्क—ए—तन—ए—जवाँ²³ से रहूँ, यूँ ही बेहाल
रहने

को ॥

रंगों में चाहत की चिंगारी से फूटे जौक²⁴ का निकालूँ दम
ज़ब्त²⁵

से ।

इंतहा—ए—जौक—ए—अज़ाब²⁶ से, दम—ब—दम बेआराम रहने
को ॥

जवाँ हिज्र का हिजाब लिए तू खुद ही रहती जवाँ
खम्याजः²⁷

खींचे ।

वस्ल में रहे तू ही यूँ, मैं नहीं रहता तुझे बेहिजाब करने को
॥

ऐ मेरी मुजस्सम²⁸ शौक—ए—बुजौँ,²⁹ तुझे देखता मैं तुझसे
रहूँ

जगा ।

अपनी चाहत को और बुल्हवस³⁰ कर, हिज्र में तुझे बेदार
करने

को ॥

24. आनंद। 25. संयम। 26. छटपटाहट से उत्पन्न आनंद की अति। 27. अँगड़ाई। 28. मूर्तिमान। 29. हृदयस्थ प्रेमिका के साथ की चाह। 30. लालची। 31. सौँसों को प्रिय। 32. आँख को प्रिय।

तेरे लबों से झड़ती रंगीनी से गिरती गर्म साँसें मुझपे ।
अब नहीं ये बेदार रंगीनी नफ़सआज़ार³¹, चश्मआज़ार³² हटने
को ॥
आजकल नींदों में तुझे बाँहों में लिए देर तक सोये रहता
हूँ तू
देर तक सोये रहती है ।
न कर तू ऐतबार, अब मैं भी नहीं रहा खुद पे ऐतबार करने
को ॥

बेराह

उसी को देख बुल्हवस¹ हो रातभर जागते हैं हम ।
 उसी को देख बुल्हवस हो सो जाते हैं हम ॥
 सित्तःअशर-उज्ज्वों पे² आरास्तः³ है मुजस्सम-बुज्जों⁴ ।
 सीने से लगे रू⁵ को उठा, उसे निहारते हैं हम ॥
 उठ बैठकर शबिस्ताँ-ए-हिज्र⁶ में रोज़ ही नींदों से जगा ।
 रातभर सोये निगार⁷ के हुस्न को निहारते हैं हम ॥
 खींचती है वो, नीमशर्ब⁸ में अपने शबिस्ताँ⁹ में यूँ ।
 के जवाँ चाहत लिए, बेहाल से हुए जाते हैं हम ॥
 मुझसे छोटी उस निगार का हुस्न मेहरबाँ कुछ यूँ ।
 कहती वो तुम, पर आप उसे कहते हैं हम ॥
 अदू¹⁰ को देख जिस नुऊज़¹¹ से जागे जुनूँ-ए-कुश्तो खूँ¹²
 ।
 उसी नुऊज़¹³ से बेहाल हुए तुझे देखते हैं हम ॥

1. लोभी । 2. सोलह अंगों पे । 3. सुसज्जित । 4. हृदयस्थ प्रेमिका के साथ की मूर्तिमान चाहत । 5. चेहरा । 6. विरह का शयनकक्ष । 7. प्रेमिका । 8. अर्धरात्रि । 9. शयनकक्ष । 10. दुश्मन । 11. उत्तेजना । प्राचीन मिस्र की चित्र-लिपी (कुछ हाएरोग्लिफ़) से व्युत्पन्न संदर्भ के अर्थ में प्रयुक्त हुआ है । 12. मारकाट का उन्माद । 13. उद्दीपन ।

एहसास-ए-निहाँ: ज़ब्ब:-ओ-कशिश

वो वाँ करवट बदलती हैं शबिस्ताँ¹ में अपने, और याँ मेरे
 बिस्तर

पे सिलवटें पड़ी जाती हैं ।
 दिनभर के ज़ब्त² से बेकस मेरे ज़ब्ब:-ए-जवाँ³ की बेदारी⁴,
 रात में

अपना असर दिखाती है⁷⁷ ॥
 ख़याल-ए-आवारः⁵ साँसों पे, खींचे है
 अंदाम-ए-जवाँ-ए-जानों⁶

से खुशबू-ए-पैरहन⁷ का फ़ित्नः⁸ ।
 जाँ गुदाज़⁹ शब-ए-हिज्र¹⁰ याद-ए-दम-ए-यक-ए-रंगीनि
 -ए-वस्ल¹¹ से जाँसितों¹² हुई जाती है ॥
 हय! ये बदहवास¹³ होश-ओ-हवास-ए-हिज्र¹⁴, कि लबों पे
 थरथराती सुखि-ए-लब-ए-जानों¹⁵ ।
 वाँ महव-ए-खाब¹⁶ जुम्बिश-ए-तन¹⁷, याँ जुल्फ़-ए-जानों¹⁸
 ख़म-ब-ख़म¹⁹ मेरे सिराहने खुली जाती है ॥
 वो वाँ करवट बदलती हैं शबिस्ताँ में अपने, और याँ मेरे
 बिस्तर पे

सिलवटें पड़ी जाती हैं ।
 बातों बातों में गुज़रे हैं वस्ल के दिन, आँखों आँखों में
 हिज्र²⁰ की

रात कटी जाती है ॥

1. शयनकक्ष । 2. संयम । 3. तीव्र आकुलता । 4. जागृति । 5. पथभ्रष्ट कल्पना । 6. प्रेमिका का सजीला तन । 7. वस्त्र से उठी खुशबू । 8. उपद्रव । 9. चित्त को द्रवित करने वाली । 10. विरह की रात । 11. मिलन की रंगीनी के एक क्षण की याद । 12. प्राणघातक । 13. उद्विग्न । 14. विरह की अकल और तमीज़ । 15. प्रेमिका के होंठ की लाली । 16. नींद में खोयी । 17. तन की गति । 18. प्रेमिका की जुल्फ़ । 19. एक-एक लट । 20. विरह ।

एहसास-ए-निहाँ: ज़ब्ब:-ओ-कशिश

वो हसीं तस्वीर-ए-यार दिल में, कि खुद ही खुद में
बेदार¹ हुए

रहता हूँ ।
आँखें खोलूँ तो देखूँ उसे ही, जिसे देख खाब² में बेकरार
हुए

रहता हूँ ॥
नींद भी वही, खाब भी वही, आँखें खोलूँ तो भी वही, सोते
जागते

बस वही ।
वो मेरी बुजु³ की चाह मुझमें यूँ निहाँ, कि दम-ब-दम⁴
बुजु³ से

बेकिनार हुए रहता हूँ ॥
उसकी सुर्मगी⁵ आँखों में देखते ही, जब झड़ने लगती
उसके लबों

से चिंगारी ।
तो नज़रों से चूम उसे सरापा, कभी ग़ज़ालचर्म⁶, कभी
जुल्फ़

दराज़⁷ कहता हूँ ॥

1. जगा हुआ । 2. नींद । 3. हृदयस्थ प्रेमिका की प्रत्यक्ष चाह । 4. प्रतिक्षण । 5. कजरारी । 6. मृगशावक नयनी । 7. लम्बी जुल्फ़ वाली ।

उमूमी⁸ ज़ौक-ए-मजाज़ी⁹ हय! कब मुझे खींचे है ।
वो वस्ल¹⁰ ही क्या, जिसमें हिज्र¹¹ सा दम नहीं निकले है ॥
शौक-ए-जाबिर¹² जो भागे शोख¹³ ग़ज़ाल¹⁴ के पीछे ।
वही ग़ज़ालचर्म¹⁵ को बाँहों में हुए अब खींचे है ॥
हय! वो हिज्र के सामने खड़ी तू, पर हाथ न आये ।
हय! ये वस्ल के हाथ आई तू तो हाथ खींचे है ॥
पलटकर मुझे भाग जाने की हनोज़ है जुम्बिश लिए ।
तेरी शोखि-ए-जवाँ¹⁶ जो मेरे तन-ओ-जाँ¹⁰ के नीचे है ॥
दस्त-बकफ़¹¹ उलझ काबू में करूँ उस शोख को तो ।
वो पा-ए-नाज़¹² पे छटपटाकर नौ-दम खींचे है ॥
हाथ आ हाथ में छटपटाये जैसे शोख मछली ।
मुझपे तेरी पहनाई-ए-सरापा¹³ हुई लगे कुछ ऐसे है ॥

79

80

1. साधारण । 2. भरम में डालने वाला आनंद । 3. मिलन । 4. विरह । 5. पकड़ने की चाह । 6. चंचल । 7. हिरण । 8. मृगशावक नयनी । 9. तीव्र चंचलता । 10. जान और तन । 11. हथेली में हाथ पकड़कर । 12. गर्वशील पैर । 13. सर से पोंव तक सौन्दर्य । 14. मुग्धा । 15. बिछड़ने को । 16. जिस्म का बहुवचन ।

हय! उस शोख दोशिजा¹⁴ पे चाहूँ फिर से मर मिटना ।
जनाबत को¹⁵ जवाँ अज्जाम¹⁶ जिस्म से जब खीचें है ॥
सब की नज़र से बचके जो इन बाँहों में है अभी ।
निहाँ-निहाँ कहूँ जिसे, उसके लिए दम निकले है ॥

वो तस्वीर-ए-बुताँ¹ दिल में, कि हर मुजस्सम-हुस्न² की
जान पर
बनी रहती है ।
लब गुलाब, जुल्फ़ घटा, सुर्म:-ए-चश्म³ तारीकि-ए-वस्ल,⁴
हर
बला एक जगह हुई रहती है ॥
कैसे कहूँ के कोई फ़र्क़ दिल में बसे अक्स-ए-बुत,⁵ और
बुताँ में,
जबकि रोज़ ।
वो याँ इसी अक्स में खुद को देख, मेरे आगे बन सँवर के
रहती
है ॥

1. प्रेमिका की तस्वीर। 2. मूर्त सौन्दर्य (दिख सकने वाला सौन्दर्य)। 3. आँखों का काजल।
4. मिलन की अंधियारी। 5. प्रेमिका की तस्वीर। 6. प्रेमिका। 7. प्रतिबिंब। 8. मृगशावक
नयनी। 9. सोलह। 10. अंगों। 11. वस्त्र। 12. प्रतिस्पर्धा। 13. विनम्र।

वो गुज़ालचश्म⁸ जब मुझे तकती है सित्तःअशर⁹ उज़्वो¹⁰ पे,
पैरहन¹¹
पे सजी हुई ।
जल उठती हैं हूरें रश्क¹² करती हुई, उसे देख के
खाकसार¹³
होके सजदे करती हैं ॥

महीनों से वो आलम-ए-मस्ती,¹ कि होश का कुछ अता पता
नहीं ।
इक हसीं तस्वीर-ए-यार है दिल में, कुछ इससे ज़्यादा
पता
नहीं⁸¹ ॥

1. हर्षोल्लास की दशा। 2. प्रतिबिंब। 3. प्रतिक्षण। 4. खुद की कृपादृष्टि। 5. आँखों का
काजल लगा किनारा। 6. मिलन की रात (लक्ष्यार्थ रात की अंधियारी)। 7. मुसीबत। 8.
प्राणघातक (अति आकर्षक)।

मेरे दिल में बसे अपने अक्स¹ में देख अपना अक्स, सँवरने
को ।

रहती वो मेरे आगे दम-ब-दम,³ क्यूँ इस क़दर है
फ़ैज़-ए-ख़ुदा⁴

पता नहीं ॥

गुलाब लब याँ, जुल्फ़ें घटा, लब-ए-सुर्मगिं-ए-चश्महा⁵
शब-ए-वस्ल⁶ याँ ।

एक जगह यूँ देख हर बला⁷ हुआ वो हाल-ए-दिल, कि अब
हालत-ए-दिल का पता नहीं ॥

मेरी हसरतों में ढल कर तू यूँ ही सँवरती रह मेरे आगे
दम-ब-दम ।

देखता रहूँ तुझे यूँ ही, तुझे, कि है किस क़दर तू जाँसिताँ⁸
पता

नहीं ॥

न जाँसिताँ¹ हिज़ में तड़पूँ, न महव-ए-इन्तज़ार-ए-वस्ल²
में

जिऊँ ।

गुज़रे जो वो क़रीब से, तो उसकी ख़ुशबू-ए-तर³ से मरूँ
॥

हुस्न-ए-जवाँ-ए-निगार है पुरज़र,⁴ जिस मुश्कबूँ दराज़
जुल्फ़

से ।

वो खुली रही बिस्तर-ए-हिज़⁶ पे सिराहने, सरनिगूँ⁷ मैं रहूँ
॥

वो साया-ए-जुल्फ़⁸ में छिपा ख़यालों में मुझे गले लगाये ।
थरथराये मेरे लब पे उसके गुलाबी लब, ज़ब्त⁹ मैं करूँ ॥

1. जानलेवा । 2. मिलन के इंतज़ार में खोये हुए । 3. ताज़ी ख़ुशबू । 4. समृद्ध । 5. सुगंधित ।
6. हिज़ का बिस्तर । 7. अधोमुख । 8. जुल्फ़ की ओट । 9. संयम ।

पहचानता हूँ मैं तेरी इस खुरबू-ए-तर¹ को ।
 शब-ए-वस्ल² सा दहकते लब-ए-सुर्मगिं-ए-चश्म को³ ॥
 खयालों में जिसमें छिपा कँपकँपाये ये सुख लब ।
 तेरी इस दराज़ जुल्फ़ के, हर मुश्कबू-ख़ाम⁴ को ॥
 बाँहों में बाँहें डाली नहीं है हनोज़,⁵ पर ।
 पर, सुनता सीने पे तेरे सीने की धड़कन को ॥
 देख रही तू मुझे, देख रहा तुझे मैं एकटक ।
 देख तेरे यकलख़्त तन उठे लब-ए-अनफ़ को⁶ ॥

83

अच्छा भी लगता है, बुरा भी लगता है ।
 खुदा भी मुझे बिल्कुल तुझसा लगता है ॥
 चश्म-ए-यार से छलक उठती मय-ए-नाब⁷ ।
 सुख⁸⁴-लब-ए-यार⁹ जब धाह देने लगता है ॥
 अपने आप में भी हुस्न उसका जाँ गुदाज़¹⁰ ।
 पर सिफ़त-ए-दिल¹¹ से जाँसितो¹² सा लगता है ॥

1. ताज़ी सुगंध। 2. मिलन की रात। 3. आँख के काजल लगे किनारे को। 4. सुगंधित लट
 । 5. अभी तक। 6. बीनी (Nose) के पुट के किनारे को।

1. प्रेमिका की आँखों से। 2. शुद्ध शराब। 3. प्रेमिका का रक्तवर्णी अघर। 4. प्राणों को
 पिघलाने वाला। 5. दिल की विशेषता। 6. प्राणघातक।

जज़्ब:-ओ-काशिश

एहसास-ए-निहाँ: ज़ब्ब:-ओ-कशिश

एहसास-ए-निहाँ: ज़ब्ब:-ओ-कशिश

फिर से चाहती है मेरी नज़र, तुझे जी भरके निहारना।
तेरी जुम्बिश-ए-खामोश-ए-रू,¹ सुर्मगी² आँखें दिल में
उतारना ॥

ठंडी हवाएँ सावन की, तन को छू मुझमें लगा रही आग ।
अब तो चाहूँ मैं, हो खुली तेरी जुल्फें मेरे सिराहना ॥
देखूँ तेरे सुर्ख लब पे उतर, छिटकती
शुआअ-ए-ज़रिं -ए-लाला-ए-चश्म³ ।
पर अब तू सो गई होगी, सो अब बस चाहूँ तुझे रात भर
सरापा
निहारना ॥

हनोज⁴ ज़ाहिद⁵ था, पर हुआ हूँ मैं अब मैकश⁶ क्योंकि ।
कि मेरे लबों से लगा है इश्क का जाम⁷ क्योंकि ॥
तुझमें रहना चाहूँ खोये, न होना चाहूँ तुझसे जुदा ।
तेरी गिरफ्त-ए-आगोश को⁸, हुआ हूँ मैं जौक-ए-आज़ाद⁹
क्योंकि ॥
ज़ब्त-ए-जौक⁷ से जुम्बिश¹ को रोके, रोके हूँ जान ।
आलम-ए-तसव्वुर⁹ की सुन, कि मुझसी तू भी है बेज़ार¹⁰
क्योंकि ॥

1 चेहरे के मौन की गति। 2. कजरारी। 3. पुतलियों की सुनहली रोशनी।

2 अभी तक। 2. विरक्त। 3. शराबी। 4. प्याला। 5. बाँहों के बंधन के लिए। 6. मुक्त-आनंद।
7. आनंद की सहनशीलता। 8. गति। 9. प्रेम-लोक (वह संसार जहाँ प्रेमी अपनी प्रेमिका के
ध्यान में पहुँच जाता है)। 10. उत्कंठित।

ये जो नशा है तेरी मय-ए-चश्म¹ का, उसे निहारना चाहूँ ।
 महव-ए-बेखुदी² में उसे तेरी आँखों में चूमना चाहूँ ॥
 इंतहा-ए-कुर्बत³ के बाद भी, और कुर्ब⁴ को तड़पता है ये
 दिल ।
 तन से निकल उठी है जान, आज तुझपे मरना चाहूँ ॥
 कहकर ये कि ये पैरहर्न⁵ है मैं नहीं, ये तन है तू नहीं ।
 अज़ाब-ए-वस्त्र⁶ और बढ़ा, और सिमट, तुझसे और
 लिपटना
 चाहूँ ॥

1. आँख की शराब । 2. बेसुध अवस्था में खोया । 3. सामीप्य की अति । 4. सामीप्य । 5. वस्त्र ।
 6. मिलन की तकलीफ़ ।

हय! बह रही हैं ठण्डी हवाएँ सावन की ।
 दिल न सुने अब काफ़िर¹ बिरहमन की ॥
 भीग रही है ज़मीं, जल रहा है तन ।
 बिछड़े दिलों में जगी है चाहत कुर्बत² की ॥
 सदर् झोकें दरीचों³ से आ-आ के सिहरा रहे ।
 मौसम ने हय! फ़ज़ाएँ क्यूँ है इस सूरत की ॥
 नीमशर्ब⁴ सा कर आसमाँ को उमड़ कर घटार्ये ।
 याद दिलाये यार के दराज़ जुल्फों के⁵ जुल्मर्त⁶ की ॥

1. नास्तिक । 2. सामीप्य । 3. खिड़की । 4. अर्धरात्रि । 5. लम्बी जुल्फों के । 6. अधियारी ।

तरह-तरह से तू मेरी आँखों के आगे सजी रहती है ।
 खुली रहती जुल्फ़-ए-दराज़, सुस्त ख़िराम¹ लचकती है ॥
 देखूँ जिसे पैरहन² पे सजी, उसे ही बरहन³ भी ।
 खुशबू-ए-गर्मि-ए-वस्ल,⁴ मेरे अक्माम⁵ पे महकते रहती है
 ॥
 तेरी सुर्मगी⁶ आँखों से मिलाये आँखें हुए हूँ मैं ।
 तेरी आँखों की कशिश⁷ से उतर मय-ए-नाब⁸ छलकती है
 ॥
 जिस्म का क्या, जागता है और सो जाता है, हर रोज़ ।
 पर दिल की आग में हर रोज़, कोई नौ हसरत मरती है ॥

1. चलने की मृदुल गति। 2. वस्त्र। 3. बेपर्द। 4. मिलन की गर्मी की खुशबू। 5. आस्तियों।
 6. कजरारी। 7. आकर्षण। 8. तेज़ शराब।

हवास-ए-बदहवास¹ पे होश-ए-बदहवास² खींच ।
 आँखों में मय-ए-नाब-ए-वश्म-ए-निगार³ खींच ॥
 बाद:-ए-वस्ल⁴ में ग़र्क⁵ हो सरापा हवास-ए-ज़ाहिरी⁶ ।
 पनाह-ए-यार⁷ में नफ़सकुशी⁸ का रहा करामात⁹ खींच ॥
 सुकूत-ए-महवियत-ए-वस्ल¹⁰ को तोड़ने को शौक ।
 मद-ए-जुम्बिश से¹¹ फिर रहा तेरा लब-ए-लाला:फ़ाम¹²
 खींच ॥

1. उद्विग्न संवेदना। 2. उद्विग्न चेतना। 3. प्रेमिका की आँखों की निर्मल शराब। 4. मिलन की शराब। 5. निमग्न। 6. गोचर संवेदना। 7. प्रेमिका की पनाह। 8. इच्छाओं का दमन। 9. चमत्कार। 10. मिलन की तल्लीनता की चुप्पी। 11. हरकत के ज्वार से। 12. रक्तवर्णी होंठ।

हुस्न-ए-जवाँ-ए-निगार¹ अपना असर पुरअसर करने को
 /
 दराज़ जुल्फों से मुझे चाहे और बुल्हवस² करने को ॥
 पैरहन-ए-नाज़³ से उठ के आती खुशबू-ए-तन को उसके
 /
 है अरक-ए-गर्मी-ए-शौक-ए-वस्ल⁴ पुरज़र⁵ करने को ॥
 देख कर सुर्मगी⁶ आँखों में उसकी, छूँ उसकी गुलाबी लब
 /
 सिराहने खुली मुश्कबू-जुल्फे⁷, मुझे चाहे बेबस करने को
 ॥

1. प्रेमिका का जवाँ सौंदर्य। 2. लोभी। 3. नाज़नीन वस्त्र। 4. मिलन की इच्छा से जगी गर्मी का स्वेद। 5. समृद्ध। 6. कजरारी। 7. कस्तूरी जैसी सुगंध वाली जुल्फें।

वो वाँ अपने शबिस्ता¹ में करवटें बदलती है ।
 और याँ सिलवटें मेरे बिस्तर पे उभरती हैं ॥
 जाँसिताँ रातें ये हिज़ की, मुझ मज्जून² की बदहवासी के
 आगे ।
 याद-ए-दम-ए-यक-ए-वस्ल-ए-रंगी³ के आगे कब
 95
 ठहरती
 हैं ॥
 खींच खम-ब-खर्म खुली अपनी जुल्फों के जुल्मत⁴ के
 साये ।
 सुर्खि-ए-लब-ए-जानाँ,⁵ मेरे लबों पे लबों से दहकती है ॥
 घुलती रहती खुशबू-ए-तर⁶ मेरी साँसों में रात भर ।
 बाँहों में तू यूँ सोये मेरे सीने पर हाथ रखे रहती है ॥

2 शयनकक्ष। 2. प्राणघातक। 3. पागल। 4. रंगीन मिलन के एक क्षण की याद । 5. एक-एक लट (वक्रता)। 6. अधियारी। 7. प्रेमिका के होंठ की लाली। 8. ताज़ी खुशबू।

जाँगुसिल-हिज्र¹ हो या वस्ल² हो, तू मेरी नज़र के आगे रहे
 /
 फोड़ लूँ लाला-ए-चश्म,³ जो न तू मेरी नज़र के आगे रहे
 //
 महव⁴ रहे तू मुझमें, मेरी नज़र में मेरी लौअ⁵ से ।
 दम में दम-ए-जौ⁶ रहे, जो तू मेरी नज़र के आगे रहे ।।
 मय-ए-नाब⁷ छलके तेरी आँखों से, कभी
 ज़हरआलूद-चाहत⁸ ।
 ऐश लगे मुझे फिराक,⁹ जो तू मेरी नज़र के आगे रहे ।।

1. प्राण को संकट में डालने वाला विरह। 2. मिलन। 3. आँख का पर्दः। 4. तल्लीन। 5. प्रेम की लपट। 6. प्राण की ताकत। 7. शुद्ध शराब। 8. विषमिश्रित चाहत। 9. विरह।

तू है, तो हकीकत महव-ए-ख्वाब¹ ।
 नवा-ओ-नगम:-ए-नौबहार² ।।
 तू है गर नौअरुस³ पेशेनज़र⁴ ।
 तो मुझे भी नौआमोज⁵ जान ।।
 नींद के सुकूँ में सो वही सकता ।
 जो शिकस्त:-ए-ख्वाब⁶ न देखे ख्वाब ।।

1. स्वप्न में डूबी। 2. नयी बहार का गीत और स्वर। 3. नव-दुल्हन। 4. नज़र के सामने। 5. नव-शिक्षित। 6. सोते हुए जाग जाना। 7. नवीन मंज़िल। 8. संसार से विरक्ति। 9. प्रेम का चढ़ता नशा। 10. स्वप्निल ऊँघ। 11. मुश्क जैसी सुगंध फैलाने वाली। 12. बनाव श्रृंगार और टाट-बाट से उपस्थित। 13. ब्रह्माण्ड का तन और बहार की रौनक (जान)। 14. नष्ट। 15. वजूद में मौजूद बेचैनी (Anxiety) की दशा। 16. आँखों के होंठ से। 17. विरह। 18. मिलन। 19. शोख प्रेमिका। 20. घमण्ड और प्रतिष्ठा। 21. मिलन के लम्हे की। 22. खुशी। 23. शयनकक्ष।

ये मर्हलः-ए-नौ⁷ है तसव्वुफ⁸ का ।
 सुरु-ए-इश्क⁹ खाबआलूद-नुआस¹⁰ ॥
 तू खड़ी है मेरी बाँहों में, हय !
 सो तेरी जुल्फें हुई हैं मुश्कबार¹¹ ॥
 तेरे जल्वों से है जल्वःआरा¹² ।
 जान-ए-फजा-ओ-जिस्म-ए-कायनात¹³ ॥
 फना¹⁴ है आलम-ए-गम-ए-हस्ती¹⁵ यूँ ।
 कि आह की कट गई है ज़बान ॥
 लब-ए-चश्महा से¹⁶ छू रहा तुझे मैं ।
 लबों में कहाँ बची है जान ॥
 हिज¹⁷ सा ही दम से दम निकले ।
 वस्ल¹⁸ में भी ऐसे आ ऐ मेरी जान ॥
 बुताँ-ए-नाज़¹⁹ है जो इज्ज-ओ-नाज़²⁰ ।
 है वो लम्हः-ए-वस्ल की²¹ निशात²² ॥
 कुछ दर-ओ-दीवार के बाद ।
 इसी ज़मीं पे उसका शबिस्तान²³ ॥
 ज़मीं का ये शोख टुकड़ा हिले ।
 गिरे दीवार, एक हो जाए शबिस्तान ॥
 जाँसिताँ है वो, पर ज़बाँ मेरी उसे मेरी जान कहे जाती है
 ।
 निकल रही है जाँ याँ, पर अभी तक वस्ल² की रात नहीं
 अ । त है ॥
 ज़िद थी के जिसे देखूँ पैरहन पे सजी हुई, उसके सिवा न
 ि क स ी
 को बरहन³ भी ।

1. जिससे जान पर बन आये। 2. मिलन। 3. स्पष्ट। 4. तीव्र संवेदना। 5. दुश्मन। 6. प्रेमिका। 7. उद्दीपन का कारण। 8. आगोश की तल्लीनता। 9. विरह। 10. मिलन। 11. कस्तूरी जैसी।

सो ये हसरत पूरी करने को आजकल तू, नज़र दुल्हन सी
 ब न ी
 आती है ॥
 चाहूँ मैं कि मेरा होश रहे होशज़दः, जब भी तुझे देखूँ
 ज । ग त य ।
 सोते ।
 सो जब भी तू आती खाब में, तो आँखों से नींद दूर चली
 ज । त ी
 है ॥
 अपने ज़ब्ब:-ए-जवाँ से पूछूँ, न अदूँ, न निगार⁴ तो फिर
 क य य
 बेहोश तू ।
 बाइस-ए-इश्तियाल⁵ कोई नहीं, तो जिस्म को नींद क्यों
 न ह ी अ । त ी
 है ॥
 जुदा रहते बदन, पर महवियत-ए-आगोश⁸ की खुशबू से
 म ह क
 उठता मैं ।
 जब कोई शोख हवा तेरे लिबास की खुशबू दूर से उड़ा के
 ल । त ी
 है ॥
 होश नहीं हिज⁹ औ वस्ल¹⁰ के फर्क का, रहते जुदा, रात
 २ । र न ी द
 नहीं आती ।
 सुब्ह होती तो हथेली से मुश्कबू¹¹ खुशबू तेरी जुल्फों की
 अ । त ी
 है ॥

रात आई है फिर, फिर बेचैनी बढ़ने लगी है ॥
दिल सा ही हुआ है फ़िल्तःखू³ जिस्म भी, जिसे कहता था
ज़हर ।
वो ज़हरआलूद⁴ चाहत, सच में ज़हर लगने लगी है ॥
बदहोशी में उलझ गये हैं अज्जसार्म⁵ फिर से हिज़्र में ।
तेरे मुश्कबू-तन से⁶ मेरी साँसें, फिर महकने लगी हैं ॥
इब्तदा⁷ में खयाल-ए-वस्ल⁸ से रंगीं लगती थी जो रातें ।
तेरे बग़ैर अब वो अज़ाब⁹ लगने लगी हैं ॥
जवाँ ज़ब्बो¹⁰ की बेदारी से, आ मुझे निज़ात दिला ।
बाँहें तेरे गले में फँसाने को, साँसें अब फँसने लगी हैं ॥
जाँ निकले है, पर हनोज़¹¹ न आई है वस्ल¹² की रात ।
इन्तज़ार तेरा, न आई तू, रात फिर से ढलने लगी है ॥
बिगाड़ दी जिसने तबीयत, बिगाड़ कर उसके नाम को ।
फ़ुग़ाँ-ए-बुलबुल¹³ सी ज़बाँ निहाँ-निहाँ कहने लगी है ॥

1. तल्लीनता। 2. शुद्ध शराब। 3. चेहरे की खमोशी। 4. बीनी (Nose) के पुट का किनारा।
5. विनीत। 6. प्रेम की राह में।

एहसास-ए-निहाँ: जज्ब:-ओ-कशिश

एहसास-ए-निहाँ: जज्ब:-ओ-कशिश

फुसूँगर¹ है सुरूर-ए-इश्क², अब्र³ गौहरबार⁴ है ।
 खूँबर्हा⁵ दे रहा, हिज्र जो बदज़ात है ॥
 कुछ और ठहर मेरी आँखों के आगे ।
 तू है तो लगे हकीकत महव-ए-ख़ाब⁶ है ॥
 हय! भौंहों पे है कमाँ ना का, और मुझे ।
 तीर-ए-नज़र⁷ पिला रहा मय-ए-नाब⁸ है ॥
 निगार-ए-नाज़⁹, जो हनोज¹⁰ ज़हरआलूद¹¹ ।
 चश्म पे आज सरापा¹² आब-ए-हयात¹³ है ॥
 नशा-ए-मय¹⁴ है होश में चश्म-ए-यार¹⁵ से ।
 कहना न अब मुझसे, कि तू बादःख़वार¹⁶ है ॥
 होली है, रंगीनि-ए-होली सी दिख रही वो ।
 क्या सच में पेशेनज़र रोज़-ए-सुर्खाब¹⁷ है ॥
 कुर्ब-ए-वस्ल¹⁸ का भरम है आज मुझे ।
 कुछ दिनों से नाराज़ मेरा हमख़्वाब¹⁹ है ॥
 पिघल रही मेरी जाँ में मेरी जाँ ।
 साँसों को भड़का रही जुल्फ़-ए-मुश्क़बार²⁰ है ॥
 नहाया सा हूँ ज़री²¹ पुतलियों की शुआओ²² में ।
 और नज़र पे रुद-ए-गंगा²³ सी माँग है ॥

101

102

दामनकषाँ

1. जादूगर। 2. इश्क का चढ़ता नशा। 3. बादल। 4. मोती बिखेरने वाला। 5. खून करने के उपरांत क्षतिपूर्ति देना, वह धन जो जान के बदले में दिया जाये। 6. ख़्वाब में खोया (लीन)। 7. नज़र का तीर। 8. शुद्ध शराब। 9. नाज़नीन प्रेमिका। 10. अभी तक। 11. विषमिश्रित। 12. सर से पाँव तक। 13. अमृत। 14. शराब का नशा। 15. प्रेमिका की आँख। 16. शराब पीने वाला। 17. सुर्खाब (चकवा) का दिन, मिलन का दिन । चकवा के लिए प्रसिद्ध है कि इनका जोड़ा रात में अलग हो जाता है, और दिनभर साथ-साथ रहता है। 18. मिलन का सामीप्य। 19. प्रेमिका। 20. कस्तूरी जैसी सुगंध बिखेरती जुल्फ़। 21. सुनहली। 22. रोशनी। 23. गंगा की धारा।

मह्व-ए-चश्म-ए-यार¹ कोई आशिक अपनी महवियत² को
आजमाये है ।
ज़ाहिद-ए-मैकश³ मैकदे⁴ से निकल बुत-ए-बुतकदा⁵ से
टकराये

है ॥

रवायत-ओ-तंज़ीम⁶ में जीता होगा खुदा, मेरे दिल में तो
नहीं

जीता ।

सरगिराँ⁷ होश-ए-सरगश्ता⁸ खुदा के आगे अब खुदा पे
चिल्लाये

है ॥

ज़मीं के इसी टुकड़े पे कुछ हजार दीवारों के बाद सोया
वो

शबिस्ता⁹ में अपने ।

सो ढाह कर दीवारें समा पनाह-ए-यार¹⁰ में, कोई
यार-ए-बेज़ार¹¹

को आजमाए है ॥

खुदा और महबूब दोनों एक थे, सो अब न खुदा है, न
महबूब है ।

पी तलख-मय-ए-जहाँ¹², पी मय-ए-नाब,¹³ अब कोई
ज़ाहिद¹⁴

बड़बड़ाये है ॥

रवायत-ओ-तंज़ीम⁶ में जीता होगा खुदा, मेरे दिल में तो
नहीं

जीता ।

हसरतों से जो पस्त¹⁵ है वो ज़ाहिद³ हूँ मैं, कैसे कहूँ कि मैं
नहीं

पीता ॥

न वज्ह-ए-निशात¹⁶ तो जान-ए-दम¹⁷ क्यूँ, जान-ए-ज़ाज़¹⁸
नहीं तो

जान में जान क्यूँ ।

मरूँ मैं तेरे लिए ऐ मेरी जान! तेरे दिल में जीता के नहीं
ज ी त । । ।

‘तू जिसे कहे खुदा वो तेरी नज़र के आगे क्यूँ आश्कार¹⁹
न ह ी , ह ’

गर खुदा ।

खुम-ए-बाद²⁰ लबों पे रख साकी पूछे, ‘तू ज़ाहिदों के दिल
म ’ त । ’

नहीं जीता’ ॥

1. प्रेमिका की आँखों में खोया। 2. तल्लीनता। 3. शराब न पीने वाला शराबी। 4. शराबखाना। 5. मन्दिर की प्रतिमा। 6. सामाजिक संस्थान और परंपरायें। 7. अप्रसन्न। 8. सरफिरा होश। 9. शयनकक्ष। 10. प्रेमिका की पनाह। 11. नाराज़ प्रेमिका। 12. जहाँ की कड़वी शराब। 13. शुद्ध शराब। 14. शराब न पीने वाला।

1. सामाजिक संस्था और परंपरा। कवि कबीर द्वारा लिखित ‘मोको कहाँ ढूँढ़े बंदे, मैं तो तेरे पास में पर व्यंग्य करता है। ईश्वर में आस्था एक बाह्य दिखावा भर लगता है। राजनीति में समूह-राजनीति तथा समाज में बाह्य दिखावे से जुड़े क्रियाकलापों के लिए धार्मिक संस्था के अभिन्न अंग के रूप में खुदा को याद किया जाता है। 2. थका हुआ। 3. वह व्यक्ति जो शराब नहीं पीता। 4. खुशी का कारण। 5. दम में जान। 6. प्रेमिका। 7. प्रकट। 8. शराब का घड़ा। 9. विरह का शयनकक्ष। 10. उद्विग्न चेतना। 11. जहाँ रूपी नुमूद (नुमूद एक अत्याचारी शासक था, जो खुद को खुदा कहता था)। 12. विरहग्रसित। 13. प्रेमी रूपी इब्लिश (लोगों को राह से दिग्भ्रमित करने वाले के अर्थ में इब्लिश का प्रयोग हुआ है)।

शबिस्ताँ-ए-हिज्र⁹ कहे निगार को बदज़ात, मेरे
हवास-ए-बदहवास¹⁰ को देख ।
'दर-ओ-दीवार पे सर फोड़ने देता तुझे, गर वो भी तेरे
बगैर नहीं
जीता' ॥
नुम्रूद-ए-जहाँ¹ के सदहज़ार नुमाइंदों से घबरा खुदा हो
हिज्रजद¹² ।
मैकदे में नशे में बैठा कहे 'ऐ इब्लिश-ए-आशिक'¹³ तू
नहीं पीता
तो मैं भी नहीं पीता!' ॥

बिन बुलाये बुतों के जैसे कोई काफ़िर किसी मन्दिर में
जाये ।
कुछ ऐसे ही डूब हम चश्म-ए-मस्त-ए-यार¹ के समन्दर में
जायें ॥
लम्हात-ए-फुर्कत में² खोया हूँ,
जुम्बिश-ए-आगोश-ए-यार³ की
गहमागहमी में ।
ज़ौक-ए-नाज़-ए-वस्ल-ए-यार⁴ उतर चश्म-ए-नर्म⁵ के
समन्दर
में जाये ॥
माना यार को खुदा, तो वो करने लगा है खुदा की ही
तरह

1. प्रेमिका की मस्त आँख। 2. विरह के लम्हों में। 3. प्रेमिका के आगोश की हरकत। 4. प्रेमिका से मिलन का गर्वशील आनंद। 5. भीगी आँख। 6. प्रेमी रूपी पथभ्रष्ट फरिश्ता (इब्लिश-एक पथभ्रष्ट फरिश्ता था)। 7. जिब्रील की आवाज़ (जिब्रील एक फरिश्ते का नाम)। 8. वंचित। 9. मुहब्बत की दौलत।

दिल्लीगी ।
सो इब्लिश-ए-आशिक⁶ नवा-ए-जिब्रील⁷ लिए सरेआम
किसी
मन्दिर में जाये ॥
दामन-ए-खुदा महरूम⁸ है खज़ाना-ए-मुहब्बत⁹ से, मेरा
दिल
नहीं ॥
जाये जिन्हें चाहिए दौलत-ओ-शोहरत, हम क्यों किसी
मन्दिर
में जायें ॥

बेवज्ह है सब कुछ, वज्ह कोई नहीं ।
मेरे दिल में तू और इसकी वज्ह कोई नहीं ॥
पुकारता है कब किसी को बुत-ए-बुतकदा¹ ।
यूँ ही चले जाये हैं, वज्ह कोई नहीं ॥
मैं होऊँ आशिक मिज़ाज, तो वो शोख कह उठे ।
तुझसे मुहब्बत करूँ, इसकी वज्ह कोई नहीं ॥

1. मंदिर की प्रतिमा।

लफ़्ज़-ए-निहाँ

कुछ कहे हैं निहाँ,¹ खुदा को ।
 पुकार को, मैं कहूँ बुताँ को ॥
 बला-ए-जाँ कहे है खिरद⁴ ।
 मेरे दिल की मता-ए-जाँ को ॥
 ज़री-शुआअ-ए-रक्सकुनॉ लबों से छिटक ।
 रौशन करे ज़र्दरंग⁷ हिजाँ को ॥
 जो दिखे हिज्र-ओ-वस्ल⁹ में ।
 रोक सद-अस-ए-रवाँ¹⁰ को ॥
 मैं जैसे, वैसे ही अब वो देखे मुझे ।
 कोई समझाये बुताँ¹¹ को ॥

1 छिपा हुआ। 2. प्रेमिका। 3. जान पर मुसीबत। 4. अक्ल। 5. प्राण रूपी पूँजी (प्रेमिका)। 6. नृत्यशील सुनहली रोशनी (आँख की पुतलियों की)। 7. पीले रंग वाले। 8. विरह। 9. मिलन और विरह। 10. सैकड़ों गतिशील युग। 11. प्रेमिका।

ज़ब्ब:-ए-दिल यूँ खाम्याज़:¹ खींचे है ।
 लगे यूँ के आसमाँ पाँव के नीचे है ॥
 हय! के तू है नज़र के आगे और ।
 ज़ब्बे ज़बाँ से हफ़² सब खींचे है ॥
 ज़बाँ हो गई है मेरी बेज़बाँ क्यूँ ।
 एहसास-ए-निहाँ³ एहसास को भींचे है ॥
 खोल के बिखरा दे अब मुश्कबू⁴ जुल्फ़ें ।
 के कहूँ नफ़र्स⁵ साया-ए-जुल्फ़⁶ के नीचे है ॥

1. अँगड़ाई। 2. अक्षर। 3. छिपे एहसास। प्रेमिका का एहसास। 4. कस्तूरी (Musk) जैसी सुगंधवाली। 5. साँस। 6. जुल्फ़ की परछाईं।

कोई पूछे क्यों, कि ये कौन है निहाँ ।
जिसे ढूँढे मेरी नज़र यहाँ-वहाँ ॥
दिलों में उतरे हैं इश्क अपनी तरह ।
देख उसे वहाँ, रसाई-ए-खुदा¹ दिखे जहाँ ॥
मुश्कबू वो, और मैं ग़ज़ाल-ए-एहसास² ।
होश-ए-गुमगश्तः,³ फिर भी ढूँढे उसे यहाँ-वहाँ ॥
ख़ुदा भी, नाख़ुदा⁴ भी ख़ामख़याल-तसव्वुर⁵ ।
क्या कहूँ अपनी महवियत-ए-हक्-ए-निहाँ⁶ ॥

1.खुदा की पहुँच। 2. एहसास का मृग। 3. उद्विग्न होश। 4. सहारा। 5. अपरिपक्व विचार से जन्मी कल्पना। 6. छिपे प्रेम की तल्लीनता।

ये जो तुझसे लिपटी नासाजी¹ है ।
ख़ित्ब² की चाह से जगी ख़राबी³ हैं ॥
साँसों लगे छू लेंगी राहत-ए-जाँ⁴ ।
गर्मि-ए-वस्ल⁵ से तू यूँ हुये जाती है ॥
जो ख़िराम⁶ बार-ए-जवाँ⁷ से थकी लगे ।
वही पाँ पे मेरे, खनक उठाती है ॥
तू शोख⁸ होकर आहू-ए-ततार सी¹⁰ ।
मुझमें क्यों शौक्-ए-जाबिर¹¹ जगाती है ॥
लफ़्ज़-ए-ख़ित्बत-ए-बिरहमन¹² से पहले ही ।
हय! तेरी महक अक्माम से¹³ आती है ॥
उसी का नाम लूँ, जब कहूँ निहाँ ।
वो जानती है, पर इतराती है ॥

1. अप्रसन्नता। 2. सगाई। 3. बुराई। 4. प्राणों का सुख। 5. मिलन की गर्मी। 6. मृदुल गति। 7. सजीले भार (बोझ) से। 8. पाँव। 9. चंचल। 10. बहुत चंचल हिरण। 11. पकड़ने की इच्छा। 12. ब्राह्मण द्वारा पढ़ा गया विवाहमंत्र। 13. आस्तिनों से।

मज्जून¹ आशिक को महबूब खुदा लगे है ।
 चाहे उसे यूँ, कि अब खुदा रश्क² करे है ॥
 वही सिफ़त-ए-हुस्न-ए-मजाज़ी³ खींचे दम-ए-जनाबत⁴ ।
 वही जो याँ मुझसे हर दम उलझा लगे है ॥
 उधड़ कर फिंक जाये होश की पाज़ेब जिससे ।
 वही गर्दिश-ए-खूँ-ए-गर्म⁵ रगों में रक्र्स⁶ करे है ॥
 शौक-ए-जाबिर⁷ भींचे तुझको बाँहों में ।
 मेरी साँसो पे यूँ मसामात⁸ तेरे महकने लगे हैं ॥
 हय! ये उलझे अज्सा⁹ की नफ़सकुशि-ए-हवास¹⁰ ।
 वस्ल औ, ज़ौक-ए-जाँसिताँ¹¹ से हिज्र सा दम निकले है
 ॥
 चाहूँ तुझे पुकारना तेरे नाम से हर बार, पर ।
 हर बार ज़बाँ हर्फ़-ए-इल्लत¹² बिगाड़ निहाँ कहे है ॥

1. पागल। 2. प्रतिस्पर्धा। 3. भौतिक सौन्दर्य का गुण। 4. पृथक्ता का दम। 5. गर्म खून की गति। 6. नृत्य। 7. पकड़ने की इच्छा। 8. रोम-रोम। 9. तन। 10. इन्द्रियों का इन्द्रिय दमन। 11. प्राणघातक खुशी। 12. पहला अक्षर।

उसे पता नहीं, उसको देख, ये मेरा क्या हाल हुआ है ।
 आता नहीं, क्यूँ नहीं तू! आखिर तुझे क्या हुआ है ॥
 खुली जुल्फ़¹ तेरी, रंगीनी-ए-वस्ल² को घेरे हैं यूँ ।
 तेरी जुल्फ़-ए-दराज़³ सा वक्फ़:-ए-शब-ए-हिज्र⁴ और
 दराज़⁴
 हुआ है ॥
 हिज्र-ए-जाँसिताँ पे हय! ये सितम-ए-साया-जुल्फ़-ए-
 -दराज़⁶ ।
 यूँ लगे, खुली जुल्फ़ों से नियाज़-ए-रंगीनि-ए-विसाल⁷
 हुआ है ॥
 न आये वो तबियत बिगाड़, जिसके नाम को बिगाड़ कहूँ
 निहाँ ।
 हय! मज्जून-हिज्र⁸ में हालत, न पूछ! ये क्या हाल हुआ है
 ॥

1. मिलन की रंगीनी। 2. लम्बे बाल। 3. विरह की रात का ठहराव। 4. लम्बा। 5. प्राणघातक विरह। 6. लम्बे बालों की परछाई का अत्याचार। 7. मिलन की रंगीनी का उपहार। 8. पगलाये हिज्र।

मेरे जज़्ब-ए-जवाँ को तेरी जवाँ गुदाजौँ पनाह चाहिए ।
तू ही ऐ जुल्फ़ दराज़ चाहिए, तू ही ऐ ग़ज़ालचश्म³ चाहिए
॥

ख़ानकाह-ए-दिल⁴ में नहीं चाहिए आश्कार⁵ खुदा तेरे सिवा
।

नज़्म के आगे निहाँ⁶ को, आँखों में वही
बेकरारि-ए-बेहिजाब⁷

चाहिए ॥

तेरे सित्त-अशर⁸ आरास्त⁹ हिसस-ए-तन¹⁰ पे भटकने को ।
मेरी बाँहों में तेरा अज़ख़ुद रफ़्त¹¹ जवाँ अंदाम¹² चाहिए ॥
दम-ए-वस्ल-ए-रंगीन को¹³ मेरे चाहिए, यही

दम-ए-जाँसिताँ-ए-हिज़¹⁴ ।

सोने को मेरे सिराहने, खुली तेरी जुल्फ़ दराज़ चाहिए ॥
जिस्म को बहलाने के लिए हैं, हज़ार अज्जाम-ए-ख़ुबाँ-ए-
-जवाँ¹⁵ ।

पर मुझे तो, वही ग़ज़ालचश्म चाहिए, वही जुल्फ़ दराज़
चाहिए ॥

के जिससे मेरी दुनिया-ए-उल्फ़त¹⁶ गूँजे
नवा-ए-बाज़ग़श्त¹⁷ से

तेरे नाम की ।

मेरे नुत्क¹⁸ को निहाँ-निहाँ पुकारती, वही ज़बाँ-ए-बेकरार
चाहिए ॥

1. उत्कट आकर्षण। 2. प्राणों को पिघलाने वाली। 3. मृगशावक नयनी। 4. दिल की कुटिया। 5. प्रकट। 6. प्रेमिका। 7. संकोचरहित बेचैनी। 8. सोलह। 9. सुसज्जित। 10. तन के अंग। 11. निश्चेष्ट। 12. तन। 13. चुलबुले मिलन के क्षण को। 14. विरह का प्राणघातक क्षण। 15. जवाँ माशूकों के तन। 16. प्रेम संसार। 17. प्रतिध्वनित (टकराकर लौटी) आवाज़। 18. बोलने की शक्ति। 19. आँखों के लिए पूँजी (आकर्षण)। 20. बहार का भार। 21. मृदुल गति। 22. पायल। 23. जिस्म का बहुवचन। 24. अधखिली कली का अल्हड़पन।

मता-ए-चश्म¹⁹ है, जो बारे शबाब²⁰ लिए थकी सी ख़िराम²¹
।

मेरे पा पे पाज़ेब²² खनकाने को, वही ख़िराम चाहिए ॥

तेरी मर्मरीं जवाँ बाँहों में उलझे जब जवाँ अज्जाम²³ ।

चश्म को तेरे रू पे दोशिज़गि-ए-गुँचा-ए-नीमबाज़²⁴
चाहिए ॥

मेरे जज़्ब-ए-जवाँ को तेरी जवाँ गुदाजौँ पनाह चाहिए ।

मुझे देख तेरे रू पे जो आई थी पहले-पहल वही

नौ-निखार

चाहिए ॥

सवाल-ए-यार हैं कई, पर मेरे दिल का जवाब एक ही ।

कि दहके जिससे मेरी जान, वो मेरी जान एक ही ॥

सदहज़ार नीमकुशत:-हसरतें,¹ पर एक ही अज़ाब² ।

न है ग़म का इलाज, कि है कातिल ग़मख़वार³ एक ही ॥

तू खुद ही चली आई थी जज़्ब:-ए-उल्फ़त लिए⁴ ।

सज़ा भुगतूँ बारहा, किया था तो बस गुनाह एक ही ॥

वक्फ़:-ए-रोज़⁵ में बन्द थी रंगीनि-ए-शब-ए-वस्ल⁶ ।

वक्फ़:-ए-वस्ल⁷ में सीनों में था, दम-ए-जाँ गुदाजौँ एक
ही ॥

सदहज़ार ज़ख्म, पर एक ही है मेरा चारासाज़⁸ ।

तेरी पनाह-ए-पहनाई-ए-तन,¹⁰ ग़म का इलाज एक ही ॥

1. तड़पती ख्वाहिशें। 2. कष्ट। 3. ग़म का इलाज करने वाला। 4. प्रेम की भावना लिए। 5. दिन का ठहराव। 6. मिलन के रात की छटा। 7. मिलन का ठहराव। 8. प्राणों को पिघलाने वाला दम। 9. ज़ख्म का इलाज करने वाला। 10. तन की पहनाई (विस्तार) की पनाह। 11. शाम का ठहराव। 12. अभी तक। 13. धर्म रहित। 14. दिल का घर। 15. प्रेमिका रूपी खुदा। 16. प्रकट।

निहाँ रही जो वक्फ़ः—ए—शाम¹¹ तक, जो हनोज़¹² मुझमें
निहाँ ।
बेशअ¹³ ख़ानः—ए—दिल¹⁴ में खुदा—ए—यार¹⁵ आश्कार¹⁶ एक
ही ॥

रहा न यूँ किसी का खयाल अब तक तेरे सिवा ।
किसी को खुदा, ऐ निगार¹ ! कहे न उल्फ़त तेरे सिवा ॥
सित्तःअशर—उज़्वो² पे, पैरहन³ पे सजी हुई तुझे ही देखूँ ।
जीते जी न देखूँ किसी निगार को बरहन⁴, तेरे सिवा ॥
ख़ानः—ए—दिल⁵ है, तेरे मुश्क—ए—तर्न⁶ की ख़ानकाह⁷ ।
नहीं कोई आश्कार⁸ यहाँ, ऐ निहाँ,⁹ दम—ब—दम तेरे सिवा
॥
मेरे आगे तू तरह—तरह से सजी हुई रहती है ।
न देखूँ मैं किसी को भी इस तरह, तेरे सिवा ॥

1. महबूबा । 2. सोलह अंगों । 3. बेपर्द । 4. स्पष्ट । 5. दिल का घर । 6. तन की खुशबू । 7. कुटिया । 8. प्रकट । 9. प्रेमिका को संबोधित ।

धुआँ उड़ा कर ज़ाहिर¹ को कर निहाँ ।
निहाँ—निहाँ कहूँ मैं, निहाँ—निहाँ ॥
कुछ एक महीने से नशे में चूर था ।
अब टूटा है नशा, सो कहूँ मैं निहाँ—निहाँ ॥
कल हिज़² की रात, औ वो थी मेरी बाँहों में ।
सो रक़ीबों के दिल में लगी है आग, जहाँ—तहाँ ॥
वो मेरे अन्दर भी, बाहर भी, नज़र के आगे भी ।
फिर भी ढूँढे नज़र उसे यहाँ—वहाँ ॥
शौक—ए—बुज़ौ³ से हूँ बुझा—बुझा ॥

1. प्रकट । 2. छिपा हुआ । 3. विरह । 4. हृदय में छिपी प्रेमिका के साथ की चाहत ।

सो निहाँ निहाँ कहूँ मैं, निहाँ-निहाँ ॥

ऐ लफ़्ज़-ए-निहाँ की हॉ⁵, हॉ! आ पेशेनज़र नज़र के
अ I ग , अ I ,
अब तो आ ॥

अपने नाम के हर्फ़-ए-इल्लत¹ की सिफ़त² का भरम रख
के आ।
वक्फ़:-ए-आख़िर-ए-तलफ़्फ़ुज़-ए-लफ़्ज़-ए-निहाँ³ कहे
अ I , अ ब
तो आ ॥
हर्फ़-ए-सहीह पे⁴ क्यूँ न ठहर जाये जुबाँ, तू न आये तो
व य न क ह न
निहाँ ।

मय-ए-हलाल¹ अब वो कातिल है ।
जो है ज़ालिम, पर नहीं मुक़ाबिल है ॥
इस तसव्वुफ़ में⁹ है वो नशा ।

1. स्वर (अवूमस)। 2. गुण। 3. निहाँ शब्द के उच्चारण का अन्तिम ठहराव। 4. व्यंजन (बवदेवदंदज) के अक्षर पे। 5. निहाँ शब्द की हॉ।

1. विहित शराब। 2. दुनिया से दुराव रखने में। 3. जहाँ की खुशी। 4. खोटा। 5. तुच्छ प्याला। 6. हर तरफ़। 7. शराब न पीने वाला। 8. विष में मिली हुई (विष मिली हुई चाहत)। 9. अमृत। 10. छिपी हुई। 11. प्रेम।

कि हर ज़ौक-ए-जहाँ^१ लगता मुझे कासिद^४ है ॥
जाम-ए-शहवतखेज^५ ठुकराने की अदा से हरसूँ^६ ।
खौफ़जदा मुझसे सब ज़ाहिद^७ हैं ॥
जिस ज़हरआलूद^८ से फूटा है आब-ए-हयात^९ ।
वो निहाँ,^{१०} उल्फ़त^{११} में मेरी ज़ाहिर है ॥

तू है निहाँ,^७ मेरी ज़ात^८ में यूँ ज्यूँ ।
मौज^९ पे मौज, मौज उठाये समन्दर है ॥

वो दुश्मन अदू-ओ-दुश्मन^१ है ।
कातिल है, पर हात में नहीं खंजर है ॥
ज़री^२ शुआअ-ए-चश्म^३ है यूँ जाँ गुदाज़^४ ।
पैमाना-ए-ज़ौक^५ हुआ खंजिल^६ है ॥

न खुदा, न नाखुदा^१, न बराहिम^२, न ज़ाहिद^३ ।
याँ ता वाँ बस तू ही, कभी निहाँ, कभी ज़ाहिर ॥

1. दुश्मन और दुश्मन। 2. सुनहली। 3. आँख की रोशनी। 4. चित्त को द्रवित करने वाली।
5. खुशी का पैमाना (पात्र)। 6. शर्मिदा। 7. छिपी हुई। 8. वजूद। 9. तरंग।

1. सहारा। 2. ब्राह्मण। 3. तपस्वी। 4. मृगतृष्णा में तल्लीन। 5. हिरण की प्यास का उद्बोध।
6. सर से पाँव तक। 7. प्रेममग्न। 8. किसी के खयाल में खोये रहने से उत्पन्न विरक्ति।
9. पड़ाव। 10. धर्म विरुद्ध स्वर। 11. शराब से जन्मा आवेश। 12. नास्तिकता। 13. प्रेमिका के
आगे। 14. बेसुध अवस्था का अत्याचार। 15. प्रत्यक्ष। 16. वास्तविक प्रेम। 17. सांसारिक प्रेम
के आगे। 18. खुशी का कारण। 19. मर्हला (पड़ाव) का बहुवचन।

महव-ए-सराब⁴ ज़ौक-ए-तश्नगि-ए-ग़ज़ाल⁵ में ।
कि सरापा⁶ हूँ मैं शौक-ए-यार से हाइम⁷ ॥
न का'बः, न कलीसा, न तसव्वुफ़⁸, न मर्हलः⁹ ।
कश्ती-ए-होश डूबी, नहीं दिखता कोई साहिल ॥
मेरी चश्म-ए-नम मस्त है, चश्म-ए-मस्त-ए-यार से ।
मेरी नवा-ए-मुल्हिदानः¹⁰ में खुदा है ज़ाहिर ॥
जोश-ए-क़दह¹¹ से, कि मेरे इल्हाद¹² में ।
पेश-ए-यार¹³ जौर-ए-बेख़ुदी¹⁴ है मुक़ाबिल¹⁵ ॥
इश्क़-ए-हकीकी¹⁶ सर पटके पेश-ए-इश्क़-ए-मजाज़ी¹⁷ ।
याँ न कोई खुदा, न वज्ह-ए-निशात¹⁸, बस कई मराहिल¹⁹
॥

नैना

याद-ए-जुल्फ़-ए-दराज़ को¹, वो लम्बी रातें
जुल्मत-ए-हिज²

की, दे गई ।

गोरी नैना की कजरारी आँखें, मेरा चैन-ओ-करार ले गई
॥

वो करवटें बदले वाँ, और पड़े याँ सिलवटें मेरे बिस्तर पर
।

सूझे नहीं, कि वस्ल³ या हिज⁴, सब होश-ओ-हवास ले गई
॥

दम-ए-यक-ए-रंगीनि-ए-वस्ल⁵ से कर मेरे होश को
नाबूद⁶ ।

छलका आँखों से मर⁷, जाँ लेने को जाँसिताँ⁸ बेखुदी⁹ दे
गई ॥

नुऊज़¹⁰ से बेदार¹¹ रखने को कुर्ब-ए-अज्जाम¹² की चाहत
जगा

वो ।

मेरे जज़्ब:-ए-जवाँ को अज़ाब¹³ अपनी
खुशबू-ए-जुल्फ़-ए-जवाँ

का दे गई ॥

1 लम्बी जुल्फ़ की याद को। 2. विरह का अंधकार। 3. मिलन। 4. विरह। 5. मिलन की रंगीनी का एक क्षण। 6. नष्ट। 7. शराब। 8. जान लेने वाला। 9. बेसुध अवस्था। 10. उद्दीपन। 11. जागृत। 12. तन की समीपता। 13. तकलीफ़।

जब हालत-ए-दिल संगदिल¹ काफ़िर-ए-बुत² को मालूम
नहीं ।

हम से भी न पूछिए! हमें भी हाल-ए-दिल मालूम नहीं ॥
क्या है गोरी नैना की कजरारी आँखों का जादू मुझपे ।

क्यूँ चाहूँ मैं अपनी ये आँखें हिज³ में फोड़ना, मालूम नहीं
॥

इक नाहिद-ए-जवाँ के शाने पेँ सर रख, वो क्यूँ शर्मायी
सी ।

वो क्यूँ देख रही मुझे चेहरा छुपाये यूँ, हमें मालूम नहीं ॥
पहले-पहल मिली है नज़र, और फिर से चाहूँ नज़र
मिलाना ।

कमआमोज़¹ अभी, क्यूँ ये बेइख़्तियारी, बेकरारी मालूम नहीं
॥

1. पत्थर दिल। 2. प्रेमिका रूपी काफ़िर (आस्थाहीन)। 3. विरह। 4. जवाँ लड़की। 5. कंधे पे। 6. नव-शिक्षित।

अंदाम-ए-मजाज़ि-ए-निगार-ए-नाज़¹ का है, ये
 इंतहा-ए-हुस्न
 -ए-खाक² जो ।
 हाँ! उसी से, उसी से है मुझमें बेदार,³ ये जवाँ बुजॉ,⁴ है
 बेक्रिनार
 जो ॥
 उससे कई हैं, मैं मानूँ न मानूँ, पर वो गैब⁵ की बला भी
 नहीं ।

1. गर्वशील प्रेमिका का भरम में डालने वाला तन। 2. ज़मी के सौन्दर्य का उत्कर्ष। 3. जागृत। 4. हृदयस्थ प्रेमिका के साथ की उत्कट चाह। 5. अदृश्य लोक। 6. हृदयस्थ प्रेमिका के साथ की मूर्त चाह। 7. विशेषता, गुण। 8. प्रेमिका के तन के सजीलेपन के सौन्दर्य से। 9. दृश्य की खिलावट। 10. तीव्र स्पष्टता। 11. भरम उत्पन्न करने वाला। 12. सजीले तन का सौन्दर्य। 13. लोभी। 14. मर्मरी (धवल प्रभा लिए) गति। 15. अँगड़ाई। 16. प्रकट। 17. संवेदना की जागृति। 18. पुट। 19. नासिका। 20. कली। 21. अधखिले। 22. प्रेमिका। 23. चेहरे की सजावट। 24. नये आये हुए रोयें (अल्हड़ता, लक्ष्यार्थ)। 25. विष में बुझे हुए

मेरी मुजस्सम-बुजॉ⁶ में ढल, मेरी सिफ़्त⁷ से ही धधकती
 न न नाज़ जो ॥
 हुस्न-ए-जवानि-ए-अंदाम-ए-निहाँ से⁸ मेरी आँखों में वही
 जल्वे ।
 शिगुप्तगि-ए-नज़ार:⁹ के जवाँ होते जल्वों में,
 रहनगि-ए-जवान¹⁰
 जो ॥
 उसी मजाज़ी¹¹ हुस्न-ए-अंदाम-ए-जवाँ¹² को तुझपे देख
 हुआ हूँ
 मैं बुल्हवस¹³ ।
 जुम्बिश-ए-मर्मरी¹⁴ को खींच खम्याज़:¹⁵ जुल्फ़ सँवार कर,
 करे
 फ़ाश¹⁶ जो ॥
 बेदारि-ए-जज़्ब:¹⁷ से दहन¹⁸ के किनारों पे तनती हय!ये
 अनफ़¹⁹ ।
 छटपटाये उसी गर्मी से, जिससे मुँह खोले गुँचें,²⁰ हैं
 न ी म ब । ज
 जो ॥
 अभी मेरी जान²² लापरवाह दीन दुनिया से, सँवरने की अदा
 अधूरी,
 सो देखूँ ।
 आराइश-ए-रू²³ से भड़क उठे नौआमद: रोयें,²⁴ वश्म पे
 लगे
 ज़हरताब²⁵ जो ॥

हूर तो देखी नहीं, पर तेरी शोख अदा मुझे बेइख़्तियार
 करके ।

जगाये वही शौक-ए-जाबिर,²⁶ जगाये
शोखि-ए-आहू-ए-ततार²⁷

जो ॥

मुझे जगा जवाँ हुस्न से, अब तू बाँहों में न आने को यूँ
छटपटाये।
छटपटाये कफ²⁸ में कोई शोख मछली, न आये हाथ आये
हाथ

जो ॥

चाहूँ उन गुनाहों के हौसलों की खराबी, जो मिटा दे
शायस्तगी²⁹।
मेरी सिफ़त-ए-निहाँ-ए-वजूद³⁰ खुल के आये, करूँ खुद
को यूँ

खराब जो ॥

जवाँ अरक³¹ से लथपथ तन-ए-बुत-ए-नाज़³², दमक
पैरहन³³ के

किनारे पे ।

छिटके तपते रंग से छिटकती वही गर्म खुशबू, जमीं से
गर्मि-ए-आब³⁴ जाँ²⁹ ॥
जवाँ मश्शातगी³⁵ के बार³⁶ से थके से है अज़लात³⁷ दोनों
ज़ानूओं

के³⁸ ।

थकी-थकी सी चले अब मेरी जान, कभी होती होगी
बर्क़ख़िराम³⁹

जो ॥

जिसे देखने की मेरी महवियत⁴⁰ टूटती नहीं, जिसकी मस्त
आँखों

26. पकड़ने की इच्छा। 27. ततार प्रदेश का चंचल हिरण। 28. हथेली। 29. शिष्टाचार। 30. वजूद में छिपी विशेषता (गुण)। 31. स्वेद। 32. नाज़नीन प्रेमिका का तन। 33. वस्त्र। 34. पानी की गर्मी (जो फूलों के रंग और खुशबू में खुद को प्रकट करती है)। 35. जवाँ प्रसाधन। 36. बार। 37. स्नायु। 38. घुटनों के। 39. क्षिप्रगति वाली (विद्युत-गति वाली)। 40. तल्लीनता। 41. आँख के काजल लगे किनारे से। 42. बिजली गिराने वाली नज़र। 43. तरफ़। 44. मुसीबत।

से ।
वो मुझे तकते ही रहती है, है लब-ए-सुर्मगिं-ए-चश्म से⁴¹

बर्क़-निगाह⁴² जो ॥

आँखों में खिंची रहे जिसकी आँखें, खिंचूँ उसकी जानिब⁴³
तो

कयामत⁴⁴ ।

झड़ती उसके लबों से चिंगारी, बाँहों में होऊँ डालने को
बाँह जो ॥

कभी बेबाक⁴⁵, कभी चुप सी, कभी
दोशिज़ा-ए-शर्म-ए-मुजस्सम⁴⁶

सी दिखी वो ।

जन'मो ना'मुराद भटकना चाहूँ जिसको, आज मेरे गले की
फाँस

जो ॥

बेपैरहन⁴⁷ जिसे देख कहूँ नाजुकअंदाम,⁴⁸ वही लगे मुझे
130 जाँगुदाज़⁴⁹ ।

सीने के मखूत⁵⁰ उभारों से, तना रहे तंग
पैरहन-ए-अबयाज़⁵¹

जो ॥

जुल्फ़-ए-रसा⁵² ख़ुम से जवाँ उभारों पे जुम्बिश-ए-पा
से⁵³ हिल

करती बेज़ार⁵⁴ ।

45. बेधड़क। 46. मूर्तिमान शर्म रूपी मुग्धा। 47. स्पष्ट। 48. कृशांगी। 49. प्राणों को पिघलाने वाली। 50. उन्नत। 51. सफेद वस्त्र। 52. कमर तक लम्बे बाल। 53. पैर की गति से। 54. नाखुश। 55. खुशामद करने वाला। 56. सजीलापन लिये आँखों का काजल लगा किनारा। 57. मृदुल स्वभाव वाली। 58. गुस्ताव कोरबेट। एक फ्रांसीसी चित्रकार, जिसने फ्रांस में उन्नीसवीं सदी के यथार्थवादी आन्दोलन का नेतृत्व किया। 59. गुस्ताव की पेंटिंग 'वुमैन विद वाईट स्टॉकिंग्स'। 60. गुस्ताव की दूसरी पेंटिंग 'द बेदर'। 61. यूनानी वीनस (venus) की मूर्ति। 62. हथेली से चेहरा छिपाये। 63. संयम। 64. नदी की धारा।

कि नज़र आती नज़र पे वो यूँ हय! दूर जाती है मेरी जान
जो ॥

वही गोल चेहरा चाँद सा, खुशामदगो⁵⁵
लब-ए-सुर्मगिं-ए-चश्म-ए-जवानी⁵⁶ ।
वही नशीली आँखे, चाहूँ रहे साथ, गोरी नैना है मेरी
नाजुक

मिज़ाज⁵⁷ जो ॥
जगाये तू मुझमें वही बेदारी, उस फ़रन्सी गुस्ताव⁵⁸ की
तस्वीरों से ।

जगाये जन-ए-ज़राबात-ए-अबयाज़⁵⁹ जो, जगाये नहाती
जन-ए-नाज़⁶⁰ जो ॥

बुत-ए-ज़ौहरा-ए-यूनानी⁶¹ सी तू नज़र आये रू-बकफ़⁶²
हुई ।
बाँध ज़ब्त्⁶³ के किनारों में बेकराँ जवानी, आब-ए-दरिया⁶⁴
की

उछाल जो ॥

ख़ंद-ए-सुब्ह⁶⁵ सा फ़रोग-ए-जवाँ⁶⁶ तेरे चेहरे का मुझे
याद

आये ।
तेरी तस्वीर की मद-ए-सुर्म⁶⁷ लिये जवाँ निगाहों से,
मिलाऊँ मैं

निगाह जो ॥

65. सुब्ह की मुस्कराहट (प्रातःकालीन रोशनी)। 66. जवाँ रौनक। 67. काजल की लकीर जो कान की जानिब खिंची रहती है। 68. लहरे लेता हुआ। 69. दरिया। 70. सुराही से शराब के निकलने की आवाज़। 71. बार-बार। 72. मृदुलगति।

ज़मीं को फोड़ के निकली मुतमव्विज़⁶⁸ दरयाब⁶⁹ तेरे सीने
से

छलके ।
सुनूँ मैं कुलकुल-ए-शराब⁷⁰ बारहा,⁷¹ तुझपे यूँ लचके सुस्त
खिराम⁷² जो ॥

मेरी बेइतिहा चाहत के आगे तू बस एक निगार-ए-मजाज़ी
ही ।

रहेगी तू दूर अब कैसे उससे, मुझमें जगाई है तूने आग जो
॥

वो सुरूर-ए-इश्क¹ ही क्या

1. प्रेम का चढ़ता नशा। 2. शयनकक्ष। 3. आँसू बहाने वाला। 4. रात की पनाह। 5. तरफ। 6. स्वप्न में डूबी फज़ा की ऊँघ। 7. पूरब का क्षितिज। 8. सुब्ह की रोशनी। 9. आह से जन्मी रंगीनी। 10. अर्धरात्रि। 11. विरह से जन्मी बेसुध अवस्था का अत्याचार। 12. प्रभातकालीन हवा। 13. वियोग। 14. प्रेमिका के मिलन की समीपता। 15. विरह की आग। 16. बर्बाद। 17. घमण्ड। 18. मित्रगण। 19. दिल की दशा।

कि न नज़ारों को पता चले, न फ़जाओं को पता चले
निकला हूँ अपने शबिस्तों से अशक़बार³ होके,
कि ज़र्र-ज़र्र को पता चले

पनाह-ए-शब⁴ में हर सिम्र⁵ ऊँघ रही
इस नुआस-ए-फ़जा-ए-खाबआलूद⁶ को
उफ़क़-ए-मश्रिक⁷ पे अभी नहीं दिखती शुआअ-ए-सहर⁸
को,
कि मेरी इस रंगीनि-ए-फ़ुग़ाँ का सबको पता चले

बन्द है मैख़ाने के दरवाजे, कि है नीमशब¹⁰
औ जौर-ए-बेख़ुदि-ए-हिज्र¹¹ बढ़ा जा रहा मुझपे
जो जगाये रोज़ उसे, अभी सो रही
उस हवा-ए-सुब्ह¹² को पता चले

मेरे फिराक़¹³ में है कुर्ब-ए-वस्ल-ए-बुतों¹⁴
उदासी हँस रही खुशी से, आँखों से
उसने क्यूँ जलाई, ये आतश-ए-हिज्र¹⁵ मुझे फ़ना¹⁶ करने
को
बताये, गर किसी को पता चले

गुमाँ¹⁷ है मेरे हबीब-ओ-रफ़ीक़¹⁸ को, कि
जानते हैं वो मेरे दिल का हाल
क्या जानेगा कोई मेरी हालत-ए-दिल¹⁹, जब
जो दिल में रहता है, न उसे, न मुझको पता चले

ऐ साकि-ए-दर्यादिल¹,

1. उदार दिल साकी। 2. प्रेमिका की हसीन कल्पना रूपी शराब का घड़ा। 3. आवारा विचार। 4. विरह की रात। 5. लाल शराब। 6. नासिका का पुट। 7. इच्छा की उथल-पुथल (प्रलय)। 8. नशीली आँखों से उतरती सुनहली रोशनी। 9. अमृत। 10. विष का गुण। 11.

खुम-ए-बाद:-ए-तसव्वुर-ए-हसीं-ए-यार² मुझमें अब
उड़ेल दे ।
ख़याल-ए-आवारा³ खींचे है मुझे, शब-ए-हिज्र⁴ अब मुझमें
ज रू म
न कोई कुरेद दे ॥
उसके लबों से बाद:-ए-लाला:फ़ार्म फिर छलके मेरे आगे,
फिर हो
उसके लब-ए-अनफ⁶ भड़के-भड़के ।
मेरी हश्र-ए-हसरत उसे देखने की ख़त्म हो अब, उसकी
ज़रीन-शुआअ-ए-चश्म-ए-मस्त⁸ के आब-ए-हयात⁹ को,
तू अब
सिफ़त-ए-ज़हरआमेज़¹⁰ दे ॥
मेरी तश्नगि-ए-चश्महा¹¹ से है महवियत-ए-रू-ए-बुत¹²,
जिससे
मुझमें है प्यास भड़की ।
मैं खुश हूँ, हटा ये ज़ाम-ए-मय-ए-वस्ल¹³ ! हो जिन्हें
तलब¹⁴
उन्हें ही तू ये ज़ाम-ए-शहवतख़ेज़¹⁵ दे ॥
तुझे देखने से दम में आये दम, ये और बात कि
जौर-ए-बेकसी
से¹⁶ घुट जाए और दम ।
महव-ए-फ़ुसूँ-ए-फ़ुग़ाँ-ए-दम¹⁷ मेरे तलातुम-ए-जज़्बात
को¹⁸,
सैलाब-ए-हश्र¹⁹ या क़दहकश-रवानी-ए-क़यामतख़ेज़²⁰ दे
॥
दे मुझे ख़याल-ए-ख़ाम²¹, उसे अदा-ए-नौआमोज़²²,

आँखों की प्यास। 12. प्रेमिका के चेहरे में जगी तल्लीनता। 13. मिलन के शराब का प्याला। 14. इच्छा। 15. उद्दीप्त करने वाला प्याला। 16. बेबसी के अत्याचार से। 17. प्राण के क्रन्दन से जगे जादू में लीन। 18. भावनाओं के ज्वार को। 19. प्रलयकारी बाढ़। 20. प्रलय लाने वाली शराबी गति। 21. अपरिपक्व विचार। 22. नवशिक्षित हाव-भाव। 23. असीम इच्छा। 24. उन्मादी संवेदनाओं की ताकत। 25. नज़र के आगे। 26. उर्वर कल्पना।

शौक-ए-बेइंतिहा²³ उसे, और मुझे ज़ब्ब:-ए-जुनूखेज²⁴ ।
 एकटक देखता रहूँ जब हो वो पेशेनज़र²⁵, जब न हो
 पेशेनज़र तो
 भी उसे देख सकूँ, मुझे ऐसा खयाल-ए-ज़रखेज²⁶ दे ।।

नशा-ए-इश्क में²⁷ खुद को जला देने का जौहर²⁸ है, मेरी
 रवायत-ए-ज़ात²⁹ में ।
 शोला-ए-खुद³⁰ में तू³¹ खुद को मुझमें मिटा मुझे राख
 कर, मुझे
 नूर-ए-कोह-ए-तूर³² दे ।।
 फाड़ कर कोह का सीना फिर बहा दूँ आब-ए-शीर³³, खींच
 लाऊँ
 रुद-ए-गंगा³⁴ बिहिश्त³⁵ हो जाए ये ज़मीं ।
 आतश ज़ेर-ए-पा वजूद³⁶ राह-ए-कू-ए-जानाँ³⁷ को खींच
 रही
 जुम्बिश-ए-ज़मी³⁸, मेरे नशा-ए-जवाँ³⁹ को अब
 आब-ए-तेग⁴⁰ दे ।।

27. प्रेम के मद में। 28. गुण। 29. अस्तित्व की परंपरा। 30. स्व से जनमी आग। 31. यहाँ पुरुष वक्रोक्ति द्रष्टव्य है। 32. तूर पर्वत की रोशनी। 33. दूध की धारा। 34. गंगा की धारा। 35. स्वर्ग। 36. उद्दिग्ध वजूद। 37. प्रेमिका की गली की राह। 38. ज़मीन की गति। 39. तेज़ नशे । 40. तलवार की धार।

एहसास-ए-निहाँ: ज़ब्ब:-ओ-कशिश

आज़ार-तलब¹ शबिस्ताँ-ए-हिज़² को मेरे देखते रहती हैं
 तेरी सुर्मगी³ आँखें, पास अब जबकि तू, और कोई नहीं ।
 तेरी मय-ए-नाब-ए-चश्महा⁴ की हय! ये जाँ गुदाज़
 छलक⁵
 निशात-तलब⁶ मुझ बीमार-ए-इश्क की, वजह-ए-बीमारी
 और
 कोई नहीं ।।
 इस मुकाम-ए-तसव्वुफ⁷ की महवियत⁸ में हनोज⁹ ज़ाहिद¹⁰
 जिस्म-ओ-जान, आखिरकार निकले अहद-शिकन,¹¹ की
 जिन्होंने

शर्अ¹² से तौबा ।

1. जिसे कष्टों में रहना अच्छा लगता हो। 2. विरह का शयनकक्ष। 3. कजरारी। 4. आँखों की शुद्ध शराब। 5. जान को घुलाने वाली छलक। 6. खुशी की इच्छा रखने वाला। 7. संसार से दुराव रखने का मुकाम। 8. तल्लीनता। 9. अभी तक। 10. जो शराब नहीं पीता। 11. वादे को तोड़ने वाला। 12. अस्तिकता। 13. बेसुध अवस्था की ऊँघ। 14. प्रेमिका की आँखों की शराब। 15. बेसुध अवस्था की मस्ती का कारण। 16. रक्तिम। 17. लाल शराब। 18. आँखों के काजल लगे किनारे सा । 19. मिलन की अधियारी। 20. बीनी (Nose) के पुट के किनारे पे । 21. संयम की उखड़ती साँस। 22. नज़र की बिजली। 23. मिलन के पल का आगमन। 24. बुलबुल की पुकार। 25. जबों की स्वतःस्फूर्तता। 26. शिष्टाचार। 27. हृदयस्थ प्रेमिका के साथ की चाह। 28. दिल की कुटिया।

एहसास-ए-निहाँ: ज़ब्ब:-ओ-कशिश

नशा, खुमार, नुआस—ए—बेखुदी¹³ और फिर
नशा—ओ—खुमार
आँखों में शराब—ए—चश्महा—ए—बुताँ,¹⁴
वज्ह—ए—मस्ति—ए—बेखुदी¹⁵

और कोई नहीं ॥
तेरे लबों सा ला'लगूँ¹⁶ ला'ल—ए—मुजाब¹⁷ भी नहीं
तेरे लब—ए—सुर्मर्गी—ए—चश्म सा¹⁸ बेबाक कोई
तारीकि—ए—वस्ल¹⁹

नहीं ।
तेरे तने लब—ए—अनफ़ पे²⁰ हय! ठहरा ये दम—ए—
तस्लीम—ए—जब्²¹
मरूँ मैं जिसके गिरने से, वो तेरी बर्क—ए—नज़र²² है और
कोई

नहीं ॥
आमद—ए—वक्फ़—ए—वस्ल²³ को नालः—ए—बुलबुल²⁴ सा हो
बेबाक
बेसाख्तगि—ए—जबॉ²⁵ से तोड़ हर शायस्तगी,²⁶ कहूँ मैं ।
ऐ मुजस्सम—बुजाँ,²⁷ हूँ यूँ बदहवास के अब
ख़ानकाह—ए—दिल²⁸
में तेरे सिवा, खुदा रहा और कोई नहीं ॥

अपने इस इश्क—ए—मजाज़ी¹ को इश्क—ए—हकीकी² न मैं
क्यूँ
मानूँ ।
जो दिखे न तू हिज़³ में, तो अपनी नज़र को दीदावर⁴ मैं
क्यूँ

1. भरम में डालने वाला प्रेम । 2. सच्चा प्रेम । 3. विरह । 4. पारखी नज़र वाला । 5. आँखों की शराब । 6. प्रेमिका की अदाओं को कविता में बाँधना । 7. व्याख्या । 8. दिमाग़ । 9. वजूद की ताक़त । 10. अस्तित्व । 11. नश्वर कल्पना की आकृति । 12. खोया । 13. बेसुध अवस्था । 14. मिलन । 15. विरह । 16. नवीन सच से जगी बेसुध अवस्था का अत्याचार । 17. प्रेमिका की कृपादृष्टि ।

मानूँ ॥
तू देखे जो मेरी आँखों में, तो तेरी ही बादः—ए—चश्महा⁵ याँ
तुझे

नज़र आये ।
मेरी ये अदाबंदी⁶ क्यूँ! वज्ह न जाने तू, ऐसा मैं क्यूँ मानूँ
॥
हिम्मत हो तो, जहाँ देखे हक़ हर तौज़ीह⁷ ज़हन⁸ से हटा,
पागल

हो जाएंगे होश ।
ज़ोर—ए—वजूद⁹ न हो जिसमें मेरे वजूद सी, उस ज़ात¹⁰ को
मैं क्यूँ

मानूँ ॥
ये जहाँ अपने पैकर—ए—ख़याल—ए—फ़ानी¹¹ में मुझे बाँधना
चाहे ।
भरम—ए—जहाँ में क्यूँ ढलूँ, भरम को भरम न मैं क्यूँ मानूँ
॥
हूँ महव¹² बेखुदी¹³ में पता नहीं, कि लम्हात वस्ल¹⁴ के हैं,
या

फ़िराक¹⁵ के ।
इस ज़ोर—ए—बेखुदि—ए—हक़—ए—नौ¹⁶ को, फ़ैज़—ए—बुताँ¹⁷
न मैं

क्यूँ मानूँ ॥

एक ही बात है, तरह—तरह से कहता हूँ ।

मज्जून¹ हूँ, सो दिल की बात हर तरह से कहता हूँ ॥
जज़्बों से² तोड़ कर उज़्व³ को, रोक कर ख़म्याज़⁴ ।
मह्व-ए-हिज़⁵, तुझे जाँसितों⁶ एक तरह से कहता हूँ ॥
शबिस्ताँ-ए-हिज़⁷ में रहे निगाहों में शबिस्ताँ-ए-बुताँ⁸ ।
'लगे है हिज़⁹ भी वस्ल-ए-रंगी¹⁰ एक तरह से' कहता हूँ
॥

1. पागल। 2. संवेदनाओं से। 3. अंग। 4. अँगड़ाई। 5. विरह में लीन। 6. जान लेने वाला।
7. विरह का शयनकक्ष। 8. प्रेमिका का शयनकक्ष। 9. विरह। 10. रंगीन मिलन।

मेरा होश-ए-फ़रेफ़तः¹ मुझे आज कबीर² नज़र आता है ।
वो जो कातिल है मुझे अब हिज़ में, अज़ीज़³ नज़र आता है
॥
मह्व-ए-रंगीनी⁴ लोग कहें इस ज़मीं को बिहिश्त⁵ ।
इस चाहत में तो मुझे बस सलीब⁶ नज़र आता है ॥
फट रही दिमाग की नसें जहाँ भर के रंगीं किस्से सुन ।
सर-ता-सर⁷ बाँझ दिल, जहाँ मुझे कमीन नज़र आता है
॥
मेरे हबीब-ओ-रफ़ीक⁸ को ज़िक्क-ए-यार⁹ के सिवा हर
चीज़

अज़ीज़ ।

फोड़ लूँगा पर्द-ए-गोश,¹⁰ अब गर नवा¹¹ का कोई तीर
नज़र
आता है ॥
तेरे दम से है मुझमें दम, सो ये दम-ए-जौ¹² निकाल देने
को ।
वक्त के मरहम का ज़हर लिए खड़ा, वक्त का पीर¹³ नज़र
आता
है ॥
होश-ए-गुमगश्तः¹⁴ कहे न देखूँ कुछ और तेरे सिवा ।
फोड़ न दूँ लाला-ए-वश्म¹⁵ कहीं, होश आज पागल फ़कीर
नज़र

1. मुग्ध चेतना। 2. श्रेष्ठ। 3. प्यारा। 4. रंगीनी में खोये। 5. स्वर्ग। 6. सूली (Cross)। 7.
एक। 8. दोस्त-साथी। 9. प्रेमिका की चर्चा। 10. कान का पर्दः। 11. स्वर। 12. प्राण की
ताकत। 13. फ़कीर। 14. पथभ्रष्ट चेतना। 15. आँख का पर्दः। 16. आधी रात। 17. छत पे।
18. विरह का शयनकक्ष। 19. स्वप्न में डूबी। 20. ताकत। 21. दुश्मन। 22. प्रतिद्वंदी।

आता है ॥
नीमशब¹⁶ है निकला हूँ बाम पे¹⁷, शबिस्ताँ-ए-हिज्र¹⁸ से ।
सोया है जहाँ भर, पास नहीं कोई हबीब नज़र आता है ॥
चीख रहे हैं जज़्बात मेरे, और खाबआलूद¹⁹ हैं फ़ज़ाएँ ।
मेरे ज़ोर²⁰ को आजमाने को न अदू²¹ कोई, न रक़ीब²² नज़र
आता

है ॥

इक बिजली लपकी है सोज़-ए-निहाँ-ए-ज़ात²³ से, मिटा
है

भरम ।

पा-ए-शौक से²⁴ पूछ, जंजीर है वो जो तंज़ीम²⁵ नज़र
आता है ॥
ज़मीं के इस टुकड़े पे जो खड़ी थी कुछ हज़ार दीवारें¹³⁹
ढह गई हैं वो, पेशेनज़र सोया वो यार क़रीब नज़र आता
है ॥
तुझे जगा बिस्तर से भर लिया है अपनी बाँहों में ।
दम है मुझमें अशकों से, मेरा प्यार मुझे बेनज़ीर²⁶ नज़र
आता है ॥
छलक उठी है तेरी आँखों की शराब मेरी आँखों से ।
अब क्यों कहे लोग मुझे, कि तू ग़मगीन नज़र आता है ॥

23. वजूद में छिपी गर्मी। 24. शौक के पौव से। 25. संस्था (Social Institution)। 26. लाजवाब। 27. विरह की रात। 28. बेसुध अवस्था में जनमी समझ। 29. प्रतिभावान। 30. नशीली आँखों की रोशनी। 31. अमृत। 32. वजूद का पात्र। 33. आनंद। 34. शर्मिदा।

इस शब-ए-हिज्र²⁷ में तू खड़ी है मेरे आगे दुल्हन बन ।
बदज़ात होश-ए-बेखुदी²⁸ अब मुझे ज़हीन²⁹ नज़र आता है
॥
तेरे शुआअ-ए-वश्महा-ए-मस्त³⁰ से छलके है
आब-ए-हयात³¹

फिर ।

पैमाना-ए-वजूद³² ज़ौक³³ से तंग हो, फिर मुझे खंजिल³⁴
नज़र

आता है ॥

140

गुज़रे लम्हें सभी गुज़श्त: दिनों के¹ लगे यूँ, ज्यूँ कोई ख़्वाब
जिये ।
ख़ाब-बलब² हो पनाह-ए-यार³ में हम यूँ जिये, जैसे कोई
ख़्वाब जिये ॥
हिज्र⁴ है तो क्या, ख़याल-ए-ज़रखोज़⁵ खींचे है यार को
बाँहों में ।
सीन:-बसीन:⁶ बाँहों में बाँहें, जिऊँ ऐसे जैसे कोई ख़्वाब
जिये ॥
मेरे वश्म से छलकी है, मय-ए-वश्म-ए-बुता⁷

1. बीते दिनों के। 2. होठों पे ख़ाब रखे हुए। 3. प्रेमिका की पनाह। 4. विरह। 5. उर्वर कल्पना। 6. सीने पर सीना रखे। 7. प्रेमिका की आँख की शराब। 8. जुल्फ़ की ओट में। 9. विरह। 10. मिलन।

जोर-ए-साया-ए-जुल्फ⁸ ।
हिज⁹ सा दम निकले है, वस्ल¹⁰ में खाक कोई, ऐसे कोई
ख़्वाब

जिये ॥

सुरुर-ए-इश्क¹ बस बना रहे, होश से बेगाना मैं रहूँ ।
नज़र के आगे तू रहे, औ होश से बेगाना मैं रहूँ ॥
लम्हात-ए-कुर्ब-ए-वस्ल² को कुर्ब-ए-फ़ासला-ए-फ़िराक³,
क

लम्हात-ए-जाँ गुदाज⁴ में मिला ।

141

1. प्रेम का चढ़ता नशा। 2. मिलन की समीपता के लम्हें। 3. विरह की दूरी में अनुभूत समीपता। 4. चित्त के द्रवित करने वाले लम्हें। 5. बेसुध अवस्था की अँगड़ाई से। 6. हसीन ख़ाब की बची खुशबू। 7. बीती रात की। 8. आँसू बहाने वाली। 9. बेसुध अवस्था की ऊँघ। 10. खोयी। 11. नशीली आँखों में। 12. बेसुध अवस्था में। 13. पल-पल।

तुझे बस जी भर देखता रहूँ मैं, होश से बेगाना मैं रहूँ ॥
तू अब सो रही, अब जाग कर अपने ख़ाम्याज़:-ए-बेखुदी
से⁵ मुझे

जगा रही ।

तेरे हर लम्हें रहते नज़र के आगे, होश से बेगाना मैं रहूँ
॥
खुशबू-ए-पसखुर्द:-ए-ख़ाब-ए-हसी⁶ गुज़श्त: शब की,⁷ है
तेरी

जुल्फों में ।

तू बाँहों में यूँ ही खड़ी रहे, होश से बेगाना मैं रहूँ ॥
तुझे न पाकर नज़र के आगे, अशक़बार⁸ क्यूँ हो गई हैं
आँखें ।

नुआस-ए-बेखुदी⁹ में फिर तू नज़र आये, होश से बेगाना
मैं

रहूँ ॥

महव¹⁰ रहें मेरी आँखें तेरे चश्महा-ए-नीममस्त मे¹¹, जैसे तू
महव

मेरे वजूद में ।

महव तू मेरी बेखुदी मे¹² यूँ ही दम-ब-दम¹³ रहे, होश से
बेगाना

मैं रहूँ ॥

142

सबुकदोश¹ हूँ मैं बिछड़ के तुझसे ।
 सो अब उलझा हूँ लिपट के तुझसे ॥
 महव हूँ तुझसे मैं, मय-ए-वस्ल³ में ।
 उभर रहा तुझपे उफन के तुझसे ॥
 गर्मि-ए-वस्ल⁴ से ख्वाबआलूद⁵ जुल्फ-ए-रसा⁶ ।
 मेरे नफ़्स⁷ से लिपटी खिसक के तुझसे ॥
 छलक रही आँखों से तेरे चश्म⁸ की मय-ए-नाब⁹ ।
 तेरे सुर्ख लबों से धधक के तुझसे ॥
 नवा-ए-वस्ल¹⁰ की, तेरी मीठी नवा¹¹ है ।
 मेरे हास्स:-ए-गोश¹² पे लरज़ के तुझसे ॥
 हवास¹³ सब ग़र्क¹⁴ बाद:-ए-वस्ल¹⁵ में ।
 महक रहा तुझे महक के तुझसे ॥
 ज़ब्त-ए-ज़ौक¹⁶ से टूटी है हिम्मत-ए-जुम्बिश¹⁷ ।
 और लिपट रहा हूँ लिपट के तुझसे ॥
 ज़ब्त¹⁸ की हर बांध तोड़ पिघल गई जान ।
 है रू¹⁹ का जल्वा-ए-जाँ गुदाज़²⁰ उभर के तुझसे ॥
 शबिस्ताँ²¹ में फिर है सुकूत-ए-आगोश-ए-यार²² ।
 सबुकदोश कब मैं बिछड़ के तुझसे ॥

1. भारमुक्त। 2. खोया हूँ। 3. मिलन की शराब। 4. मिलन की गर्मी। 5. ख्वाब लिए। 6. लम्बे बाल। 7. साँस। 8. आँख। 9. शुद्ध शराब। 10. मिलन का स्वर। 11. आवाज़। 12. कर्णोद्भ्रिय। 13. चेतना के अंग। 14. निमग्न। 15. मिलन की शराब। 16. खुशी पे संयम। 17. गति की ताकत। 18. संयम। 19. चेहरा। 20. चित्त को द्रवित करने वाला जल्वा। 21. शयनकक्ष। 22. प्रेमिका के आगोश की चुप्पी।

अब तो अपने रू¹ की रानाई² से, तू ये पर्द:-ए-हिज़³ हटा,
 ऐ जाँ
 मेरी! ।
 इंतहा-ए-तश्नगि-ए-चश्म सँ⁴, मेरी प्यास में अटकी हुई है,
 जाँ
 मेरी ॥
 फ़रोग-ए-मय⁵ बाद:-ए-लालाफाम-ए-लब⁶ के, मेरी आँखों
 में क्यूँ
 नहीं ।
 सामने आ, कि दम में दम आये, कहीं दम न निकल जाये,
 ऐ जाँ
 मेरी! ॥
 जुम्बिश-ए-शगुफ़तगि-ए-गुल-ए-नीमशगुफ़त⁷ है,
 पेश-ए-वज्ना
 -ए-रू⁸ ।
 कमाँ-ए-अबू⁹ पे तना, अब तो ज़हरआलूद-तीर-ए-नज़र¹⁰
 चला,
 ऐ मता-ए-जाँ¹¹ मेरी! ॥

1. चेहरा। 2. सौन्दर्य। 3. विरह का पर्दः। 4. आँखों की (देखने की) प्यास की अति से। 5. शराब की दमक। 6. होंठ की लाल शराब। 7. अधखिले फूल के खिलावट की थिरकन। 8. चेहरे पे गालों के आगे। 9. भौंह की कमान। 10. विष में सना नज़र का तीर। 11. प्राणों की पूँजी।

ताज़ःदर्म¹ जिस्म-ओ-जान था मैं तुमसे मिलकर, तुझसे
बिछड़ के

भी अब भी हूँ ।

बदहवास² था मैं तुझसे लिपटकर, बदहवास³ तुझसे उलझ
के अब

भी हूँ ॥

¹⁴⁴जैसे याद रहे हर तराश-ए-रू⁴ बुततराश⁵ को, याद मुझे
तेरे चेहरे

का हर जल्वः ।

तेरे रू को चूमती काकुलो⁶ को हटा, लब-ए-नज़र से⁷ तेरा
रू

चूम रहा मैं अब भी हूँ ॥

कितनी जल्दी वक़्त ने अपना दामन छुड़ा लिया,

लम्हात-ए- वस्ल-ए-रंगीन से⁸ ।

मस्कन-ए-वक़्त-ए-विसाल⁹ में, मैं अब भी तेरे साथ, कि तू
अ ब

भी मेरे साथ, साथ मैं अब भी हूँ ॥

1. स्फूर्त। 2. उद्विग्न। 3. संज्ञाशून्य। 4. चेहरे की तराश। 5. मूर्तिकार। 6. लटों। 7. नज़र के होंठ से। 8. रंगीन मिलन के लम्हों से। 9. मिलन का समय रूपी घर।

मह्व-ए-बेखुदि-ए-रंगी¹ दो चश्म² मस्त कुछ और ।
सो जौर-ए-बेखुदि-ए-ज़ात³ है, मुझपे कुछ और ॥
नज़र के आगे वो होगी भी नहीं, नज़र के आगे होगी भी,
अश्कबार⁴ होंगी आँखें ।
इंतहा-ए-ज़ौक⁵ से हाल-ए-दिल बिगड़ेगा कुछ और ॥
बर्क-ए-निगाह-ए-बुर्त⁶ गिरेगी ख़िर्मन-ए-ज़हन पे,¹⁴⁵
दिखेगा सब

कुछ साफ-साफ ।

अभी तो बेहिस⁷ जहाँ के नाम पे होऊँगा बर्बाद कुछ और
॥

अभी तो जहाँ-ए-फ़ानी⁸ के सब दौलत-ओ-शोहरत होंगे
फ़ना¹⁰,

इक ठोकर में नज़र के आगे ।

1. रंगी बेसुध अवस्था में खोये। 2. आँख। 3. वजूद की बेसुध अवस्था का अत्याचार। 4. आँसू बरसाने वाली। 5. खुशी की अति। 6. प्रेमिका की निगाह की बिजली। 7. अक़ल के खलिहान पे। 8. संवेदनहीन। 9. नश्वर संसार। 10. नष्ट। 11. ठण्डा वातावरण। 12. नशीली। 13. प्रेमिका का चेहरा। 14. होश खोकर। 15. दिल के हर्ष से जन्मी रंगीनी। 16. संवेदनहीन न पीने वाला। 17. साकी के हाथ की दानशीलता। 18. हाथ की गति। 19. प्यास।

मैखाने के बाहर की भी फ़ज़ा-ए-सर्द,¹¹ होगी गर्म कुछ
 और ॥
 उन नीमबाज़¹² आँखों के नशे से कम की तलब नहीं, हर
 क़त्रे पे
 रू-ए-बुत¹³ क्यूँ नहीं ।
 अभी तो बेगाना-ए-होश होकर¹⁴, मैं पूछूँगा क्या क्या, कुछ
 और ॥
 मेरे रंगीनी-ए-मस्ति-ए-दिल¹⁵ से ख़फ़ा हो मैक़श और
 नफ़सकुश-ज़ाहिद¹⁶ पूछे हैं ।
 फ़ैज़-ए-दस्त-ए-साकी¹⁷ औ मेरे जुम्बिश-ए-दस्त¹⁸ से, है
 क्या
 कुछ और ॥
 उसके हुस्न सा हुस्न न हो जिसमें, उसे देखने से क्या
 बुझोगी
 तश्नगी¹⁹ मेरी आँखों की ।
 उससा हुस्न है बस उसका, साकी! मुझे भरम में न डाल
 कुछ
 और ॥

न समझ नासमझ मैक़श²⁰ मुझे, जो होशज़दा लौट जाते हैं
 त
 र
 मैखाने से रोज़ ।
 मेरे शुरु-ए-इश्क़ सा²¹ नशा हो जिसमें, वो ज़ाम है कुछ
 अ
 र
 ।

20. शराबी। 21. प्रेम के चढ़ते नशे सा। 22. दिल की उमंग। 23. गति। 24. आसमाँ की संवेदनहीन ऊँचाई। 25. मैखाने का अंजाम। 26. संवेदनाओं का उपद्रव। 27. द्वैत। 28. पैमाने के शीशे के टुकड़े पे। 29. अनश्वर इच्छा।

अभी तो वलवला-ए-दिल²² से उठेगी इक शोर जो पैदा
 क
 र
 द
 ग
 ी
 जुम्बिश²³ अर्श-ए-बेहिस²⁴ में ।
 है अभी तो हश्र-ए-मैखानः²⁵ बाकी, फ़ित्नः-ए-जज़्बात²⁶
 क
 छ
 और ॥
 है ये इब्तदा बेइंतिहा चाह की, जो ख़ात्म न होने वाली है
 ब
 स
 दुई²⁷ के मिट जाने से ।
 हर नौ रेज़ा-ए-शीशा-ए-पैमाना पे²⁸, मैं देखूँ
 ह
 ल
 -
 ए
 -
 द
 ल
 अ
 म
 ी
 कुछ और ॥
 शौक़-ए-जाविदाँ²⁹ का मारा, उसका नहीं, इंतहा हो
 ि
 ज
 स
 क
 ी
 ,
 उसके क़दमों की आहट ।
 हर ज़ाम के टूटने की खनक से, अभी आयेगी कुछ और ॥

ज़ेर-ए-बर्फ¹ याँ कब की आग लगी लगती है ।
 कि अब सुर्खि-ए-अक्स² बर्ग-ए-चनार से³ उड़ती है ॥
 तेरी सुर्मगी⁴ आँखों में जब भी देखूँ मैं ।
 हय! तेरे सुर्ख लबों से चिंगारी झड़ती है ॥
 मेरी आँखों में महर्व⁵ तेरी नीममस्त⁶ आँखें ।
 आजकल फुसूँ-ए-सुर्मगी⁷ फूँके रहती हैं ॥
 जवाँ रंगीं नज़ारों से बेदार गोया वो⁸ भी है ।
 सो आजकल मेरे करीब आते डरती है ॥
 सुर्ख-गर्द-ए-साया-ए-चनार⁹ छू न ले तेरे लब ।
 सो बाँहें मेरी, तुझे बाँहों में भींचे रहती हैं ॥
 तुझे छुआ तक नहीं, बस देख बिगड़ी है तबियत ।
 हय! तसव्वुर¹⁰ की बिजली, क्यूँ यूँ बेवजह कड़कती है ॥
 शोलः-ए-बहार-ए-फ़ज़ा-ए-रोज़ में¹¹ जल ।
 हसरतें यूँ जवाँ, कि अब रात नहीं कटती है ॥
 खंदः-ए-सुब्ह¹² सा फ़रोग¹³ है, मेरे यार के रू पे ।
 आजकल फ़ज़¹⁴ से पहले ही सुब्ह हुई लगती है ॥

1. बर्फ तले। 2. प्रतिबिंब की लालिमा। 3. चिनार के पत्ते से। पतझड़ में चिनार के पत्ते सुर्ख हो जाते हैं। पतझड़ का विरह के प्रतीक के रूप में प्रयोग किया गया है। पतझड़ में चिनार के पत्तों की रंगीनी ऐसी लगती है जैसे बहार को कल्पना के रंगों में रंग कर सुर्ख कर दिया गया है। विरह के क्षणों में प्रेमिका की स्मृति कुछ ऐसी ही होती है। याद करने की क्रिया में कभी-कभी कल्पना के संयोग से तीव्र इच्छाएँ उन दृश्यों को भी सामने प्रस्तुत करने लगती हैं, जिनका एहसास कभी हुआ भी नहीं होता है। विरह के ये क्षण मिलन के क्षणों से भी ज्यादा रंगीन हो जाते हैं। 4. कजरारी। 5. खोयी। 6. नशीली। 7. कजरारी जादू। 8. 'वो' लिखने में यहाँ पुरुषवक्रता है। इससे पहले की पंक्ति में 'तू' मध्यम पुरुष से संबधित सर्वनाम का प्रयोग किया गया है। पर यहाँ 'वो' अन्यपुरुष का प्रयोग कर प्रेमिका से एक दूरी बनाई गई है, जो कि प्रेमिका के दूर होने के साथ सम्बंधित है। यह पुरुषवक्रता कवि के भावोद्विग्न अवस्था को व्यंजित करता है। 9. चिनार की परछाई की लाल धूल। 10. कल्पना। 11. दिन की रौनक के बहार के शोले में। 12. सुब्ह की मुस्कराहट। 13. प्रभा, रौनक। 14. प्रातःकाल।

गर्मि-ए-आखिरी¹⁵ से पिघले कहीं बर्फ-ए-कोह¹⁶ ।
 याँ बाँहों में उन्फुवान¹⁷ की गर्मी तपती है ॥
 तेरे दम-ए-गर्मि-ए-ज़र्द-ए-कोहपैमाई में¹⁸ ।
 मेरी सिफ़त-ए-आगोश,¹⁹ दम-ए-ईसा²⁰ फूँके रहती है ॥
 बंद-ए-महरम²¹ में कसी जवाँ उभार की बेदारी²² ।
 मख़ूत²³ उभारों से बेपैरहन²⁴ सी चुभती है ॥
 धधकती तू मेरी बाँहों में सर्द होकर भी ।
 तुझसे ही सर्द फ़ज़ा में भी धधक सी रहती है ॥
 तेरी मुश्कबू जुल्फ़-ए-दराज़ मुश्कफ़ाम²⁵ है यूँ ।
 कि चिनारों²⁶ से दिन में ही चिंगारी झड़ती है ॥
 तपते रंगों से यकलख़्त²⁷ छिटक उठी गर्म ख़ुशबू ।
 तेरे जवाँ मलबूस²⁸ पे आश्कार²⁹ सी लगती है ॥
 तपती रंगीनि-ए-ज़मिं-ए-गर्मि-ए-आब³⁰ फ़ाश³¹ ज्यूँ ।
 तू हुस्न की तपती हुई ख़ुशबू-ए-रंगीनी लगती है ॥
 मेरे दम-ए-पसीं-ए-सुकूत³² में सुकूत³³ की साँस ।
 तेरी साँसों की गर्मि-ए-मुश्क³⁴ से रहती है ॥
 अनफ़³⁵ पे लरज़ते अक्स-ए-गुल-ए-कुंज़द³⁶ में
 दम-ए-ख़ुशबू³⁷ ।
 तेरे सुर्ख लबों पे गिरती साँसें भरती हैं ॥
 तकती, दहकती सुर्खि-ए-लब³⁸ जब, तब फड़कने को ।

15. अंतिम ऊष्णता। 16. पहाड़ का बर्फ। 17. जवानी की उठान। 18. पहाड़ के सैर से जर्द (ठण्डी) हो गई गर्मी की साँस में। 19. आगोश का गुण (विशेषता)। 20. पुनः प्राण फूँकना। 21. कंचुकी की गाँठ। 22. जागृति। 23. उन्नत। 24. स्पष्ट। 25. रात सी कालिमा लिए। 26. कहते हैं चिनार से रात में चिंगारी झड़ती है। 27. अचानक। 28. वस्त्र। 29. प्रकट। 30. पानी की गर्मी से धरती से निकली रंगीनी। 31. प्रकट। 32. चुप्पी की उखड़ती साँस में। 33. चुप्पी। 34. ख़ुशबू की गर्मी। 35. नासिका। 36. तिल के फूल का प्रतिबिंब। 37. सुगंध की साँस (नासिका के पुट के लिए तिल के फूल की उपमा देते हैं। तिल का फूल सुगंधित नहीं होता है)। 38. होंठ की लाली। 39. पुट।

अनफ़ अपने दहन³⁹ के दोनों किनारों पे तनती है ॥
 हफ़तरंग⁴⁰ जहाँ पस्त⁴¹ होता, 'हय' कह, जब लब-ए-सुख⁴²
 पे ।
 ज़री-लाला-ए-चश्म⁴³ की शुआअ⁴⁴ गिरकर छिटकती है ॥
 जज़ब-ए-दिल⁴⁵ पे हो फ़िल्तः⁴⁶ हवास-ए-ख़म्सः⁴⁷ का ।
 तू ख़ामख़याल⁴⁸ से निकल, जब भी मेरे आगे रहती है ॥
 तमतमाई सी अनफ़ पे है जौर-ए-हुस्न⁴⁹ फ़ाश⁵⁰ ।
 सुख़ लबों की लाली में, आग लगी लगती है ॥
 लब-ए-सुर्मगिं-ए-चश्महा पे⁵¹ दहक उठे ताब-ए-वस्ल⁵² ।
 जब तू ख़दः-ए-ज़ेर-ए-लब⁵³ से तकती है ॥
 चश्म-ए-यार से छलक उठी है, गर्म मय-ए-नाब⁵⁴ ।
 सुख़ी⁵⁵ रुख़सार-ओ-आरिज़ पे⁵⁶ धधकती है ॥
 लब सी सुख़ी को तेरी माँग की दोशीज़गी⁵⁷ ।
 नज़र पे धाह दे शो'लःज़न⁵⁸ हो चटकती है ॥
 यकलख़्त⁵⁹ आँखों के आगे यूँ तू आ जाती कल । 149
 कि तुझसी कोई मेरी बाँहों में आने को तुनकती है ॥
 मेरी तबियत यूँ बिगाड़ गयी, तू ऐ मेरी जाँ !
 कि मेरी बिगड़ी ज़बाँ, तुझे निहाँ कहती है ॥
 मेरी आँखों के आगे ज़ाहिर रहे तू मुजस्सम⁶⁰ ।
 ये नहीं, कि तू बस दिल में ही निहाँ⁶¹ रहती है ॥
 हुस्न-ए-नज़ारः मैं⁶² तुझे ढूँढता दिनभर मैं यूँ, कि ।
 शुआअ-ए-ख़ुर⁶³ रोज़ ही मुझे लिए दिए उफ़क़⁶⁴ पे थकती
 है ॥
 चाहत देख हिज़⁶⁵ की रात, दराज़ तेरी जुल्फ़ों सी ।

40. सात रंग वाला। 41. परास्त। 42. लाल होंठ। 43. सुनहली पुतली। 44. किरण। 45. दिल की संवेदना। 46. उपद्रव। 47. पाँच इंद्रियाँ। 48. अपरिपक्व कल्पना। 49. सौन्दर्य की अति। 50. प्रकट। 51. आँखों के काजल लगे किनारे पे। 52. मिलन का ताप। 53. मंदहास, स्मिति (ऐसी हंसी जो होंठों में ही रह जाए)। 54. ख़ालिस शराब। 55. लाली। 56. कपोल और गाल पे। 57. कोमार्य। 58. शोले फेंकने वाली। 59. अचानक। 60. मूर्तिमान। 61. छिपी। 62. नज़ारे के सौन्दर्य में। 63. सूरज की रोशनी। 64. क्षितिज। 65. विरह। 66. पीला पड़ा पतझड़। 67. शोले जैसे रंग वाला। 68. चिनार की आग। 69. विरह की पीली रोशनी। 70. प्रेमिका का घर (प्रेमिका की कल्पना)।

ऐ गोरी नैना! तेरी कजरारी आँखों को भला बुरा कहती है
 ॥
 ज़र्दगूँ-ख़िज़ाँ⁶⁶ ज्यूँ शोलःगूँ⁶⁷ आतश-ए-चनार⁶⁸ से ।
 ज़र्द-शुआअ-ए-हिज़⁶⁹ सुख़ मस्कन-ए-यार⁷⁰ से रहती है
 ॥

असर

कि मेरी जान में मेरी जाँ है, तंग वजूद-ए-खांजिल¹ पिघल
के

छलके ।

बस देखने से उस गुदाजाँ को ये हाल, तो क्यों न देखूँ
उसे जी

भरके ॥

मेरी इस महवियत-ए-हक-ए-नौ³ में है आज महव,⁴ उस
नाज⁵

का कैफ⁶ ।

इस बर्क-ए-खाबआलूद⁷ से न जगाये अब कोई, कुछ
मुझसे

कहके ॥

मुझे देख जाहिद-ओ-रिंद⁸ ने, न जाने तोड़े हैं कितने
जाम ।

कि क्यों साकी ने लगा दिया लबों से मेरे, ख़ुम-ए-मय⁹
भरके ॥

लौअ की लपट¹⁰ आज मुझे तुझमें मिटा रही, और तुझे
मुझमें ।

जात-ए-फानी¹¹ राख कर, देख रहा हूँ तुझे
नूर-ए-कोह-ए-तूर¹²

में बनके ॥

वजूद बेवजूद जौर-ए-बेखुदी-ए-जौक¹³ से, कि तू
पेशनज़र¹⁴ ।

एहसास-ए-रक्सकुनाँ¹⁵ से, खुल के फिंक गई है
पाज़ेब-ए-होश¹⁶

उधड़ के ॥

1 शर्मिदा वजूद । 2 प्राणों को पिघलाने वाली । 3. नवीन सच की तल्लीनता । 4. तल्लीन । 5. प्रेमिका । 6. नशा । 7. स्वप्निल बिजली । 8. शराब पीने और न पीने वाले । 9. शराब का घड़ा । 10. प्रेम की आग । 11. नश्वर अस्तित्व । 12. तूर पर्वत की दीप्ति । 13. खुशी से जगी बेसुध अवस्था का अत्याचार । 14. नज़र के आगे । 15. नृत्यशील अहसास । 16. होश की पायल ।

जी भर के देखता हूँ तुझे, पर आँखों की तश्नगी, प्यासी
क ी य । स ी
रह जाती है ।

जितना पीता हूँ आब-ए-हयात-ए-जमाल-ए-रू¹ तेरा,
उ त न ी ह ी

बाद:-ए-पसखुर्द:-ए-हुस्न² बची रह जाती है ॥

ये बाद:-ए-तुंद³ छलकाती तेरी आँखें, लाला:फ़ाम-फ़रो⁴
वज्ज: पै⁵, ये मज़ा-ए-लर्ब⁶ से छिटकतीं शुआये⁶ रक्सकुनाँ⁷

रंग-ए-शर्म-ए-नौ⁸ ले ।

गर्मि-ए-शर्म⁹ से ला'ल-ए-मुज़ाब¹⁰ से हो जाते हैं लब,
महव-ए-जल्व:-ए-रू-ए-रंगअफ़शौ¹¹ रंगीनि-ए-इज़ार¹²

बढ़ी जब

जाती है ।

1. चेहरे का सौन्दर्य रूपी अमृत । 2. सौन्दर्य की बची हुई शराब । 3. तेज़ शराब । 4. रुख़सार पे लालिमा लिए रौनक । 5. होठ रूपी मूँगा । 6. किरणें । 7. नृत्यशील । 8. नौ-हया का रंग । 9. हया की ऊष्णता । 10. लाल शराब । 11. रंग बिखेरते चेहरे के जल्वे में तल्लीन । 12. गाल की रंगीनी । 13. सर से पाँव तक । 14. अद्वितीय । 15. बहार के मौसम का गुलाब । 16. चेहरे की कांति से छलकती शराब । 17. आकर्षण । 18. चेहरे के सौन्दर्य की शराब । 19. देखने वाला । 20. कजरारी । 21. सुब्ह की मुस्कराहट । 22. स्नेहसिक्त आँखों से उतरती पवित्र रोशनी । 23. प्रेम की लपट । 24. रात्रि के समान काले रंग वाले । 25. माथा । 26. तरफ़ । 27. गंगा की धारा । 28. अनछुआ सौन्दर्य, कौमार्य । 29. नई चाहत । 30. चेहरे का सौन्दर्य । 31. नयी-नयी । 32. प्रतिक्षण । 33. रश्मियाँ ।

सरापा¹³ तू यकता¹⁴ है, है गुल-ए-नौ बहार¹⁵, पर तेरे
ग ल — ए —
निशात-ए-दोशीज़गि-ए-रू¹⁶ की कशिश¹⁷ कुछ और यकता
ह ।
मय-ए-हुस्न-ए-रू¹⁸ तेरी, मेरे आगे मेरे होने से, छलकती
है कुछ इस कदर, कि मुझदीदावर¹⁹ की ख्वाहिश-ए-दीदार,
हय बची रह

जाती है ॥

सुर्माआलूद²⁰ घेरे से, खंदः-ए-सुब्ह²¹ सा हो,
नूर-ए-सफ़ि-ए-

चश्महा-ए-आश्ना²², जब दिल मे लौअ²³ जगाता है ।
शबगू²⁴ बालों के बीच से जबी²⁵ की जानिब,²⁶
रूद-ए-गंगा²⁷ सी निकली माँग की लहक से दहक उठी
द ॥ श ॥ १ ॥ ज ॥ ग ॥ २ ॥ ४ ॥ स ॥ , ए क
ख्वाहिश-ए-नौ²⁹ जगी तब आती है ॥

जितना मिटाना चाहता हूँ तश्नः आँखों की प्यास
जमाल-ए-रू³⁰

से तेरे, उतनी ही उभरकर आती है कोई नौ ब नौ³¹ प्यास
।

कि जितनी उभरकर आती हैं दमबदम³² बदलते हुस्न की
शुआये³³ आँखों में, उससेज्यादा नज़रों के आगे लगती बची
रह जाती हैं ॥

तुझसे मिलने से पहले ही तेरे खयाल-ए-बर्क-ए-जमाल³⁴
से,

34. सौन्दर्य रूपी बिजली की कल्पना। 35. थकी हिम्मत। 36. उथल-पुथल मचाने वाला सौन्दर्य। 37. बोली। 38. थकी जबों। 39. चेहरे के मुकम्मल सौन्दर्य का शोला। 40. देखने की प्यास की उत्कंठा। 41. प्रेम की आग। 42. चुभन। 43. अदृष्ट सौन्दर्य की रोशनी। 44. अनछुए सौन्दर्य की प्रफुल्लता के आनंद में खोई। 45. स्नेहसिक्त आँखें। 46. भटके हुए हिरण सी। 47. पीला। 48. विरहग्रस्त हृदय की अवस्था। 49. सुनहली किरणें। 50. आँखों से उतरी रोशनी (लक्ष्यार्थ कशिश)। 51. सौन्दर्य के अनछुएपन से जगी हया। 52. नासिका के पुट का किनारा। 53. पथभ्रष्ट। 54. नवीन दृश्य। 55. नौ हया।

लड़खड़ा उठती हैं दिल की धड़कनें, शिकस्तःहिम्मत³⁵ हो
।

और नौ बेबसी उभरती है तेरे आगे, तेरे
कयामतखेज़-हुस्न³⁶ की
तुझसे शिकायत करने की नवा,³⁷ शिकस्तः-ज़बा³⁸ बची रह
जाती है ॥

हाँ, वाँ जवाँ शोला-ए-हुस्न-ए-कामिल-ए-रू³⁹ तेरा, पर
याँ
सोज़-ए-तश्नगि-ए-दीद⁴⁰ मेरी ज़ात में, सोज़िश-ए-दुरू⁴¹
की

कुछ कम तो नहीं ।

जी भर के तुझे देख कर भी जी भरता नहीं, हर बार तुझे
दुबारा देखने को, खलिश⁴² में कोई
शुआअ-ए-हुस्न-ए-नादीदा,⁴³ फँसी
रह जाती है ॥

महव-ए-ज़ौक-ए-शगुफ़तगि-ए-दोशीज़गी⁴⁴
आश्ना-आँखे⁴⁵

आहू-ए-गुमगश्तः सी⁴⁶ तकने लगती मुझे एकटक ।
तब ज़द⁴⁷ हालत-ए-दिल-ए-हिज़⁴⁸ को मेरी और ज़द
करने को, सुर्ख़ लबों पे गिर पुतलियों की ज़री-शुआये,⁴⁹
मेरी जानिब छिटकी

तब आती हैं ॥

तेरे शुआअ-ए-चश्म⁵⁰ की दो घूँट भी अभी पी नहीं पाता,
कि शर्म-ए-दोशीज़गी⁵¹ से धीमी जुम्बिश से यकलख़ता
फड़क उठता

है लब-ए-अनफ⁵² ।

मेरी गुमकर्दःराह-नज़र⁵³ को इस जल्वा-ए-नौ⁵⁴ को देखता
देख, शर्म-ए-नौ⁵⁵ से ख़फा हो तू झुका लेती है पलकें,
नज़रें बेजान

मेरी रह जाती हैं ॥

अपनी शोखि-ए-अदा-ए-रू⁵⁶ पे इल्जाम धर, मुझपे नहीं,
म त I

तश्नगि-ए-दीद-ए-हुस्न⁵⁷ का मारा हूँ कबसे ।
कैसे लिपटाये रहूँ अपनी नज़रों को तेरी नज़रों से, जब यों
ता वाँ

मय-ए-दुआतशः⁵⁸ कहर बरपा हो छलकी रह आती है ॥
थाम लेता फड़कने को दुरोया तना लब-ए-अनफ़
लर्ज़ा-ए-गुँचा -ए-रू⁵⁹ को,
अरक़-ए-रौग़नि-ए-गर्मि-ए-शौक⁶⁰ से दमक

कर ।

नूर-ए-तश्नगि-ए-दोशीज़गि⁶¹ टपक पड़ता
लाल-ए-मुज़ाब-ए-
लब⁶² पे, होठों को थारथारा कर, मेरी आँखों
क ि श I श I - ए - अ न फ ^{6 3}
एकटक देखती रह जाती हैं ॥

गिला है तुझसे, कि मक्नातीस-ए-चश्महा-ए-नीमबाज़े⁶⁴ को
खिंचें मेरी नज़र को, क्यों अपनी जानिब खींच लेती है
कशिश-ए-लब-

ए-अनफ़-ए-गुलगूँ⁶⁵ ।

शुआअ-ए-नज़र⁶⁶ से तेरी चश्मः-ए-गर्म-ए-नूर⁶⁷ तो
फूटता इस दिल में, हय! मेरी नज़र तेरी नज़रों से क्यों
नहीं उलझी रह जाती

हैं ॥

बेखौफ़ झुलसती है मेरी निगाह, तपते
हुस्न-ए-वज्जः-ए-यार पे⁶⁸,

फिर से नैसाँ-ए-नज़र⁶⁹ के इंतज़ार में ।
एक बार फिर उठा झुकी पलकों को, कि मेरी बेकस⁷⁰ तश्नः
आँखों में तड़पती जाँ-ए-शौक⁷¹, तेरे रू पे अब
दम-ए-तस्लीम⁷² को

मरी अब जाती है ॥

दहक उठता है तेरा रू

ज़ेर-ए-जुम्बिश-ए-शगुफ़्तगि-ए-नौ,⁷³

और फड़क उठता है गुँचा-ए-अनफ़⁷⁴ पे बन और
जाँगुदाज़⁷⁵ ।

इशारत-ए-हुस्न⁷⁶ पे रोक रहा यों नज़र की हर घूँट, सो
वाँ यक ब यक⁷⁷ आये यकता⁷⁸ तबस्सुम⁷⁹ से, लबों की
कँपकँपी कुछ छिपी

अब जाती है ॥

याँ हुस्न-ए-रू तेरा वज्ह-ए-फ़िल्ता-ए-दिल⁸⁰ लगता है,
तो वाँ

गर्मि-ए-हसरत⁸¹ मेरी तुझको कयामतखेज़ लगती है ।

56. चेहरे के हाव-भाव की चंचलता। 57. सौन्दर्य के दर्शन की प्यास। 58. दो बार खींची हुई शराब। दो बार खींची शराब, बहुत तेज़ शराब होती है। 59. चेहरे की कली की कँपकँपी। 60. ख्वाहिश की गर्मी से उभरा दमकता स्वेद। 61. अनछुए सौन्दर्य के प्यास की प्रभा। 62. होंठ रूपी लाल शराब। 63. अनफ़ का आकर्षण। 64. नशीली आँखों का आकर्षक जादू (चुम्बक)। 65. फूल जैसी नासिका के पुट के किनारे का आकर्षण। 66. नज़र की रोशनी। 67. रोशनी का गर्म झरना। 68. प्रेमिका के रुख़सार के तपते सौन्दर्य पे। 69. नज़र रूपी तृप्त करने वाली बारिश। 70. बेबस। 71. ख्वाहिश की प्राण-शक्ति। 72. अंतिम साँस।

73. नवीन उल्लास की थिरकन तले। 74. नासिका रूपी गुँचा। 75. चित्त को द्रवित करने वाला। 76. सौन्दर्य का इशारा। 77. अचानक। 78. अद्वितीय। 79. मुस्कान। 80. दिल में उपद्रव का कारण। 81. चाहत की तीव्रता। 82. सौन्दर्य की चंचलता का गुरुर। 83. ख्वाहिश की ऐंठ। 84. खींचतान। 85. दीदार। 86. हारी हुई। 87. पूर्ण। 88. चेहरे का सर्वांगपूर्ण सौन्दर्य। 89. वास्तविक रौनक। 90. सौन्दर्य का अभिमान। 91. शराब के क़तरे का शोला। 92. हारी हुई। 93. परिपूर्ण। 94. नहीं थकने वाली नज़र। 95. अद्वितीय। 96. दुड्डी से माथे तक। 97. चेहरे के सौन्दर्य की शराब। 98. सौन्दर्य। 99. पूर्णछटा। 100. सर्वांगपूर्ण सौन्दर्य। 101. अद्वितीय। 102. विशिष्ट रोशनी।

ख़त्म होता नहीं गुरुर-ए-शोखि-ए-हुस्न⁸² तेरा, और न
ख़त्म होती मेरे गुमाँ-ए-शौक⁸³ की कशाकश⁸⁴, दीद⁸⁵ तेरी
अधूरी रह

जाती है ॥

शिकस्तःफ़ाश⁸⁶ मेरी हसरतें, पर आँखों की ख़त्म होती नहीं
एक कामिल⁸⁷ घूँट में, तेरे हुस्न-ए-मुकम्मल-ए-रू⁸⁸ का,
मुकम्मल

फ़रोग-ए-अस्ल⁸⁹ पी लेने की उम्मीद ।
वाँ छलका देता है गुरुर-ए-हुस्न⁹⁰ याँ वाँ
शोला-ए-क़त्रः-ए-
बादः⁹¹ अपना, याँ शिकस्तःख़ुर्दः⁹² नज़र में मुकम्मल⁹³ घूँट
की

चाहत बची रह जाती है ॥
क्यूँ नहीं नाशिकस्तः-नज़र⁹⁴ की एक घूँट में ही उतरता
'गोरी
नैना' का यगान⁹⁵ चेहरा जक़न ता जबी⁹⁶, क़त्रः क़त्रः क्यूँ
उतरती

है निहाँ की मय-ए-हुस्न-ए-रू⁹⁷ ।
क़त्रः-क़त्रः उतरे जमाल⁹⁸ में उतर नहीं पाता
फ़रोग-मुकम्मल⁹⁹ !
हुस्न-ए-कामिल¹⁰⁰ की वो यकता¹⁰¹ शुआअ-ए-जुदा¹⁰²
नज़रों से

बची रह जाती है ॥

पत्थर पे सर फोड़ें हम ।
औ कहे ख़ुदा-ख़ुदा हम ॥
तुझे देख ख़याल सरगस्ता' ।
आजकल होश में न रहें हम ॥

157

बेअसर है संग-ए-तन-ए-बुत² ।
गर्मि-ए-शौक में पिघले हम ॥
हिज़³ में दीदार-ए-यार⁴ से जियें ।
भरम टूटे तो मर जायें हम ॥

में कोई फ़कीर-ए-कबीब¹ नहीं ।
कैसे कहूँ, तू मुझे अज़ीज़² नहीं ॥
ज़िक़्र-ए-यार³ गुनाह भरी महफिल में ।
कैसे करूँ याद उसे, जो क़रीब नहीं ॥

158

1. उद्दिग्ग। 2. प्रेमिका के तन का पत्थर। 3. विरह। 4. प्रेमिका का दीदार।

1. औंधे मुँह पड़ा फकीर। 2. प्यारा। 3. प्रेमिका की चर्चा। 4. आँसू का आनंद। 5. क्रन्दन का संयम। 6. महान और विरक्त। 7. सौन्दर्य की दौलत के आगे। 8. प्यारा।

जौक-ए-अश्क⁴ से है ज़ब्त-ए-फुगौँ⁵ ।
 अब ये भी न हो, मैं ज़ाहिद-ओ-कबीर⁶ नहीं ॥
 दर-ए-दौलत-ए-हुस्न,⁷ न सर फोड़ूँ क्यूँ ।
 जो हुस्न कहे, कि तू मुझे अज़ीज़⁸ नहीं ॥

के उसको भी अज़ीज़⁹ जान है ॥
 ज़हर, पर लगता आबेहयात⁴ ।
 ये तिलिस्मात-ए-चश्महा-ए-बुतान⁵ है ॥
 जाँ में पिघल रही मेरी जाँ ।
 औ जौक⁶ कोई जाँ गुदाज़⁷ है ॥
 तू ही है जौक-ए-दिलआज़ार⁸ ।
 तू ही शौक का इज़्ज-ओ-नाज़⁹ है ॥

याँ तेरा ज़िक्र भी गुनाह है ।
 और तू ही चारासाज़¹ है ॥
 नासेह-ए-कबीर² खुद न देखे ।

होश-ओ-हवास बदहवास¹ है ।
 निगाह में निगार-ए-नाज़² है ॥
 कहे तू ज़हरआलूद-चाहत³ ।

159

1. ग़म का उपचार करने वाला। 2. औंधे मुँह पड़ा हुआ उपदेशक। 3. प्यारा। 4. अमृत।
 5. प्रेमिका की आँखों की जादूगरी। 6. आनंद। 7. प्राण को पिघलाने वाला। 8. दुःखदायी
 आनंद। 9. घमंड और प्रतिष्ठा।

160

1. उद्विग्न। 2. गर्वशील प्रेमिका। 3. विषाक्त चाहत। 4. आनंद। 5. आँसू बहाने वाला। 6.
 स्नेहसिक आँखों से। 7. शुद्ध शराब। 8. प्रेम की लपट। 9. विशेषता। 10. तूर के पर्वत की
 आग। 11. नष्ट। 12. सुलेमों एक महान सम्राट था। 13. व्यर्थ।

याँ चश्म जौक⁴ से अश्कबार⁵ है ॥
उसकी आशना-आँखों से⁶ फिर ।
मेरे चश्महा में मय-ए-नाब⁷ है ॥
लौअ⁸ में जौहर⁹ मिटने का ।
गोया कोह-ए-तूर की आग¹⁰ है ॥
मेरे आगे फ़ना¹¹ सुलेमाँ¹² ।
दौलत-ए-जहाँ सब खाक¹³ है ॥

परीशाँ

दिल से एक इन्सान हूँ ।
 लाचार और दो-चार हूँ ॥
 शुआअ-ए-ज़रि-ए-तिपल-ए-हिन्दू¹ ।
 खुमार-ए-निगाह-ए-बुतौँ हूँ ॥
 दुई सब मिटाये तरह-तरह की ।
 दिल से मैं यक जान हूँ ॥
 आया हूँ देख बुत-ए-बेपीर³, सो ।
 दरीदः⁴ दिल जिगर चाक⁵ हूँ ॥

1 आँख की पुतली की सुनहली रोशनी। 2. प्रेमिका की आँखों का खुमार। 3. कठोर और निर्दय हृदय वाली प्रेमिका। 4. विदीर्ण। 5. विदीर्ण।

कहूँ मैं जीना कैसा, जबकि हमखयाल⁶ हमखूँ⁷ कोई नहीं ।
 अजब है ज़बाँ याँ की, लोग कहें 'कोई नहीं, कोई नहीं' ॥
 बेशअ⁸ खान:-ए-दिल⁹ खानकाह⁸ है
 मुश्क-ए-नाब-ए-जुल्फ़
 -ए-यार⁸ की ।
 मेरी महवियत⁷ में आश्कार⁸ यार, आश्कार खुदा कोई नहीं
 ॥
 'मेरी आँखों से छलकती है तेरी मय-ए-नाब-ए-चश्म,⁹
 देख
 तो तू' ।
 कहूँ मैं यूँ अपनी चाहत, तो निगार कहे 'कोई नहीं, कोई
 नहीं' ॥
 हिज़¹⁰ की बेखुदी¹¹ रंगी है, गुज़श्त:वस्ल¹² की उस
 महवियत से
 भी ज़्यादा ।
 कि तू बाँहों में दम-ब-दम,¹³ औ पास मेरे देख पाये तुझे
 कोई
 नहीं ॥
 कहे निगार 'कोई नहीं', जो कोई सुनाये उसे मेरा
 ग़म-ए-जाँगुसिल¹⁴ ।
 निगार प्यारा, उसकी ज़बाँ प्यारी, सो मैं भी कहूँ 'कोई
 नहीं, कोई
 नहीं' ॥
 कहे कोई ग़ालिब 'नहीं निगार को उल्फ़त, न सही, निगार
 तो
 है'¹⁵ ।

1. एक से राय वाले। 2. एक से स्वभाव वाले। 3. नास्तिक। 4. दिल का घर। 5. कुटिया। 6. प्रेमिका के जुल्फ़ की शुद्ध कस्तूरी। 7. तल्लीनता। 8. प्रकट। 9. आँख की शुद्ध शराब। 10. विरह। 11. बेसुध अवस्था। 12. बीते मिलन। 13. पल-पल। 14. प्राण को पिघलाने वाला ग़म। 15. ग़ालिब ने एक शेर में कहा है 'नहीं निगार को उल्फ़त, न हो, निगार तो है, रवानि-ए-रविश-ओ-मस्ति-ए-अदा कहिये'। 16. प्रेमिका। 17. मिलन। 18. विरह की दशा।

कहूँ मैं कि मुझे उल्फ़त, रहे न गर तू पास मेरे, रहे कोई नहीं ॥
 अपनी बेरुखी से तू मुझे कुछ इस क़दर है भड़का गई ।
 कि अब याँ दिल में रहेगा कोई निगार,¹⁶ तेरे सिवा कोई नहीं ॥
 लबों से लिपटे लबों पे मेरे, तू उगल रही वस्ल¹⁷ की गर्म साँस ।
 यूँ है आलम-ए-हिज़¹⁸, तुझे मुझसे उल्फ़त नहीं 'कोई नहीं, कोई
 नहीं' ॥

ख़ाबआलूदः¹⁹ मुश्कबू-ख़ुशबू-ए-नाब-ए-तन-ए-बुताँ²⁰ है नफ़सआज़ार²¹ ।
 परीशाँ-शबिस्ताँ-ए-ख़ुशबू-ए-वस्ल²² से, उदास कमबख़्त कोई
 नहीं ॥
 हिज़ सा वस्ल में निकला था दम, सो अब हिज़ में भी वस्ल सा
 निकले दम ।
 कुर्ब-ए-यार-ए-हिज़²³ में रहे कुर्बत-ए-यार-ए-वस्ल,²⁴ और
 कोई नहीं ॥
 कौन करेगा क़ैद मेरे महबूब को देखें तो उसकी हिम्मत ।
 हो तो हो रहे मुहब्बत फ़िल्नःजू²⁵, राह-ए-कुश्तोख़ून²⁶ कोई

19. स्वप्न में डूबी हुई। 20. प्रेमिका के तन की कस्तूरी जैसी शुद्ध खुशबू। 21. साँसों को प्रिय। 22. मिलन की खुशबू बिखेरता शयनकक्ष। 23. विरह में प्रेमिका की समीपता। 24. मिलन के समय प्रेमिका का सामीप्य। 25. उपद्रवी। 26. मारकाट का रास्ता। 27. सामाजिक संस्था और परंपरा। 28. दृढ़ विश्वास। 29. वह गति जो कभी असफल नहीं होती।

नहीं ॥
 जीता है ख़ुदा आजकल रवायत-ओ-तंज़ीम²⁷ में, दिलों में नहीं ।
 यकीन-ए-कामिल²⁸ जुम्बिश-ए-अमल²⁹ राह-ए-मुहब्बत,
 अब ज्यूँ
 हो कोई नहीं ॥

बदहवास¹ हूँ सो लोग मुझसे होश चाहें ।
 उदास हूँ मैं, सो कहकहा-ए-गोश² चाहें ॥
 इस शब-ए-फ़ुर्क़त³ नामुम्किन, पर मैं क्या करूँ, जो ।
 ग़म-ए-जाँगुसिल⁴ मेरा, तेरी पनाह-ए-आग़ोश चाहे ॥
 कहे निगार-ए-नाज़⁵ पिला तो दी मय-ए-नाब-ए-वश्महाँ⁶
 ।
 ऐ बदज़ात!, अब क्या तू ऐ एहसान फ़रामोश! चाहे ॥

1. उद्विग्न। 2. कानों के लिए अट्टहास। 3. विरह की रात। 4. प्राणों को द्रवित करने वाला ग़म। 5. नाज़नीन प्रेमिका। 6. आँखों की शुद्ध शराब।

मैंने कभी कुछ भी चाहा नहीं, और जब चाहा, तो वो मिला
भी

नहीं ।

लगे न हर शख्स इस जहाँ का मुझे बुरा, पर लगे मुझे
अच्छा भी

168

नहीं ॥

इश्क़-ए-मजाज़ी¹ चाहे इश्क़-ए-हकीकी² सी चाहत की
इंतहा

मुझसे ।

1. भरम में पड़ा प्रेम। 2. सच्चा प्रेम। 3. विशेषतायें। 4. जहाँ रुपी शतरंज की तख्ती पे देखे जाने वाले खेल पे। 5. बहुत आतुरता के साथ। 6. परंपरा और संस्थान। 7. खुशकिस्मत दिल।

सो नहीं पास तू मेरे, तो वैसे तो यह अच्छा नहीं, पर बुरा
भी

नहीं ॥

खुदा ने बख़्श अपनी सिफ़ात,³ छोड़ दिया अब सब कुछ
मुझपे, कि

वो जानता ।

कि बाज़ी-ए-बिसात-ए-जहाँ पै⁴ न होऊँ मैं बुरा, इस
कदर मैं

अच्छा भी नहीं ॥

आए अब वो जो फ़रियाद करने, कहने हाल-ए-दिल, तो मैं
भी

क्यूँ सुनूँ ।

बहज़ार-इज़्तिराब⁵ कहा था जब हाल-ए-दिल, तो उसने
हय!

सुनाँ यूँ, कि सुना भी नहीं ॥

खुदा की तरह वो भी आज कल जीता है, बस

रवायत-ओ-तंज़ीम⁶ में ।

सो मेरे दिल-ए-मुबारक⁷ में रहा न यार यूँ, ज्यूँ कि रहा
खुदा भी

नहीं ॥

बहुत नाज़-ओ-अदा से, कुछ लोग धड़ से सर को जुदा
करते
हैं ।

हय! हम जिसको खुदा कहते हैं, लोग उसको बुरा कहते हैं

//

जौर-ए-बेरुखी¹ से मेरी फड़कती तबीयत में आश्कार² वो

हर

दम ।

पता नहीं फिर क्यों होशमन्द सब, मुझसे उसको ख़फ़ा कहते

हैं //

शोलः-ए-लौअ³ और भड़के, आए मुझमें फ़ना⁴ होने का

तरीक⁵ ।

मरहम-ए-वक्त्⁶ मुझे लगे जहर, सब उसको दवा कहते हैं

//

न कहो इसे दिल की ख़ता, न दिलरुबा⁷ पे धरो कोई

इल्ज़ाम ।

ये शरारत है मेरी आँखों की, और सब उसको बुरा कहते हैं

//

1. बेरुखी का अत्याचार। 2. प्रकट। 3. प्रेम की लपट का शोला। 4. नष्ट। 5. पद्धति।
6. वक्त् का मरहम। 7. प्रेमिका।

किसी की आँख में मैं नहीं जीता!
 जीता हूँ मैं, कि इस—उस तरह नहीं जीता ।।
 खुदा जीता है मेरे दो चश्म¹ में ।
 सो खुदा की आँखों में भी नहीं जीता ।।
 इस तरह नहीं जीता, उस तरह नहीं जीता ।
 न होती तुझसे उल्फ़त², तो इस तरह नहीं जीता ।।

बेखुदी³ में भी होश रखता हूँ ।
 उदास रहता हूँ, तो भी जोश रखता हूँ ।।
 मेरे हबीब⁴ सब मुझे जाने सरगश्ता⁵ ।
 न जाने के वजूद में कौन सी आग निहो⁶ रखता हूँ ।।
 मेरी कशमकश की वजह कोई उमूमी—ज़ौक⁷ नहीं ।
 हिज्र⁸ में भी वस्ल⁹ सा, उसकी पनाह की चाह रखता हूँ ।।

1 आँख । 2. प्रेम ।

1. बेसुध अवस्था । 2. दोस्त । 3. सरफिरा । 4. छिपा हुआ । 5. साधारण खुशी (इच्छा) । 6. विरह । 7. मिलन ।

नाराज़ी

तुझे जी भर के निहार भी न पाये, और लम्हः तुझसे
बिछड़ने का

आ गया ।

ये वक्त भी कितना काफिर¹ है, फिर हिज² की बिजली
गिराने आ

गया ॥

कितना उदास था जलकर मरता हुआ नासेह,³ मुझे तेरे
साथ देख ।

अब बिछड़ता देख, उम्मीद-ए-रोज़गार⁴ से, उसमें फिर वही
हौसलः पुराना आ गया ॥

कितना सोचा था, कि तू यूँ आयेगी, और फिर कुछ यूँ
होगा ऐ

मेरी जान!

कुछ न हुआ, फिर जाँ लेने को, आने का
जाँसितोँ-वक्फः-ए-

फिराक⁵ है आ गया ॥

तू ही बता में क्या करूँ, तुझे जाते देखूँ या तुझसे लिपट
के रोऊँ,

कि चाहूँ पुकारना, पर पुकार न पाऊँ ।

रोने को मुझमें फिर वही दम-ए-नालः-ए-बुलबुल⁶ है आ
गया ॥

खुद पे, खुदा पे औ खुदाई पे, ईमाँ पे, बुतों पे और
काफिर पे,

और हर सच्चाई पे ।

महव-ए-बेखुदि-ए-महवियत-ए-इश्क,⁷ अब सब पे फिर
से, वक्त

झुँझलाने का है गया ॥

1 सवेदनहीन। 2. विरह। 3. उपदेशक। 4. कारोबार की उम्मीद। 5. विरह का प्राणघातक
ठहराव। 6. बुलबुल के क्रन्दन की ताकत। 7. इश्क की तल्लीनता की बेसुध अवस्था में खोये
हुए। 8. एक सिरे से दूसरे सिरे तक। 9. धूलधुसरित।

तू क्या जायेगी मुझसे दूर, जब अपने आँखों की शराब
छलकाये

मेरी आँखों से ।

आह की ज़बाँ काट, तेरी खातिर सर-ता-सर¹ आसमाँ को
गर्दालूद² करने का वक्त है आ गया ॥

ऐ मेरी जान, ऐ मेरी जान की मताअ¹ ।

बुजाँ की चाहत से हूँ बुझाअ-बुझाअ ।

मत आ, मत आ, तू मत आ ।

मर जाऊँ मैं कहते हुए निहाँअ²-निहाँअ ॥

उदास पस्त खुमार-ए-हिज³ का अज़ाब⁴ ये ।

ऐ दराज़ जुल्फ़,⁵ तुझे ढूँढे यहाँअ-वहाँअ ॥

ऐ सरगश्ता⁶ जुनूँ मुझे ही चाक कर ।

मेरे भीतर भटक शौक की तेग⁷ उठाअ ॥

1. पूँजी। 2. छिपी हुई प्रेमिका। 3. विरह का नशा। 4. संग। 5. लम्बे जुल्फ़ वाली। 6.
सरफिरा। 7. तलवार।

सुल्हखू¹ नहीं क्यूँ मेरा हमखू² ।
 क्या खूँबहा³ देगा बहा के खूँ ॥
 खुश सब हैं शख़िसयत-फ़ाहिशीगी⁴ में ।
 इस दौर से मिले न अपनी खूँ⁵ ॥
 रक्तबीज⁶ है, ये हिज्र की रात ।
 पछताऊँ उसका बहा के खूँ ॥
 हसरतों के हिरन दौड़े हैं फिर ।
 चाहत के खुरों से बहे फिर खूँ ॥
 करूँ खूँ अरमानों का मैं, और ।
 चश्म से अश्क⁷ में बहे जिगर का खूँ ॥
 ज़ख्म-ए-ग़ज़ाल⁸ पूछे तीर-ए-नज़र से ।
 क्यूँ न किया तूने मेरा खूँ ॥
 पूछे सब, कि सब जगह ये खूँ क्यूँ ।
 खूँबहा दे रहा, खुद का बहा के खूँ ॥
 पस्त है खुदा भी मेरे आगे ।
 देखें तो कौन करेगा मेरा खूँ ॥

1. मेल-जोल से रहने वाला। 2. प्रेमिका। 3. खून करने के उपरांत क्षतिपूर्ति देना, वह धन जो जान के बदले में दिया जाये। 4. व्यक्तित्व की लंपटता। 5. स्वभाव। 6. एक राक्षस, जिसको मारने के क्रम में उसके शरीर से निकले खून के हर कतरे से सैकड़ों हजारों राक्षस पैदा हो जाते थे। 7. आँसू। 8. हिरण की आह। ग़ज़ल का व्युत्पत्तिमूलक अर्थ ज़ख्मी हिरण (ग़ज़ाल) की आह होता है।

मन्दिर में खुदा रहता है क्या ।
 वाँ जाने से होती पूरी मुराद¹ है क्या ॥
 अदू² जाता है आजकल क्या वहाँ ।
 उसी से जान पर बन आई है क्या ॥
 सुनता नहीं आजकल क्यूँ दिल की तू ।
 पत्थरों में रह, पत्थर हुआ है क्या ॥
 ये पुजारी, ये बिरहमन, ये सब ।
 सब तुझे बेचने वाले, सब भूल गया है क्या ॥
 रवायत-ओ-तंज़ीम³ की रज़ा लिए बग़ैर ।
 तू भी ख़ित्बत⁴ पढ़ता नहीं है क्या ॥
 सुनी थी कभी जिसके फ़ैज़⁵ की बातें ।
 वो संग दिल⁶ यार सा, संग दिल हुआ है क्या ॥

1. मनोकामना। 2. दुश्मन। 3. सामाजिक संस्था एवं परंपरा। 4. विवाह-मंत्र। 5. दानशीलता। 6. पत्थर दिल।

शरार¹ हूँ मैं, बस शरीर² नहीं ।
 शायद इसलिए यार मेरे करीब नहीं ॥
 मुझे भी आता जगाना फुसूँ-ए-जिस्म³ ।
 पर क्या कहूँ, इन रास्तों का मैं रफ़ीक़⁴ नहीं ॥
 'वो तन क्या, कि जिसमें लौअ⁵ न हो' ।
 कहे ये वो, जिसे ये बात अज़ीज़⁶ नहीं ॥
 इश्क़ का भरम जिस्म वालों को ।
 मिटे भरम तो दिखे इश्क़ शरीर⁷ नहीं ॥
 हिज़्र⁸ में भी रहता है वो करीब ।
 के वो दिल है, शरीर⁹ नहीं ॥

1 स्फुलिंग (चिंगारी)। 2. तन। 3. तन का जादू। 4. दोस्त। 5. प्रेम की लपट। 6. प्रिय। 7. तन। 8. विरह। 9. तन।

गिला नहीं है बदनज़र¹ ज़माने से, है ठेस लगी खुदाओं से ।
 शिकस्त:-ए-फ़ाश वजूद-ए-खुदा,² है मेरी आह की
 नवाओं³ में ॥
 बाँध लो चाहे बंद-ए-आग़ोश में⁴ उसको, या सर फोड़ लो
 दर-ए-खुदा⁵ ।
 ये लम्हात-ए-हसी⁶ कुछ देर और, फिर रहेगी बस तन्हाई⁷
 तेरी
 पनाहों में ॥
 इश्क़ हकीकी⁸ भरम, अस्ल है इश्क़-मजाज़ी⁹, झूठ है
 महवियत-ए-हक⁹ ।
 इक़ खुदा-ए-यार¹⁰ है जो रहता हर वक़्त साथ, चाहे
 गुज़रूँ
 कितनी तसव्वुफ़¹¹ की फ़नाओं से¹² ॥
 खुदा है तो शक्ल-ओ-सूरत दिखलाये, किसी
 पैकर-ए-बुत¹³ में
 या महबूब में नज़र आये ।
 जिसकी आशना-आँखें¹⁴ न हो एहसास-शनास,¹⁵ वो रहे बस
 वहीं
 आसमाँ की नवाओं में ॥

1. दुष्ट-दृष्टि। 2. भगवान के अस्तित्व की स्पष्ट हार। 3. नवा (स्वर) का बहुवचन। 4. बाँहों के बंधन में। 5. खुदा की चौखट। 6. खूबसूरत लम्हें। 7. सच्चा प्रेम। 8. भरम में डालने वाला प्रेम। 9. सच की तल्लीनता। 10. प्रेमिका रूपी खुदा। 11. संसार से दूर रहने की लगन। 12. खुदी के ख़त्म होने के मुक़ामों से। 13. मूर्ति की आकृति। 14. स्नेहसिक्त आँखें। 15. अनुभव से परिचित।

खूब तेज़ नाच, और फिर, यकायक¹ खुद को थाम कर ।
 देख जहाँ के नाचने में, तू भी रहता नाच कर ॥
 नाच कर कमीन मसाइल-ए-जहाँ² की चाक पे ।
 खुद से नाराज़ हो, चिल्लाऊँ अपने आप पे ॥
 निगलने को पकड़ना चाहे गिर्दाब-ए-जहाँ³ ।
 पटक कर मिटाने को, झूठे साहिल-ए-बर्बाद पे⁴ ॥
 रंगीनी निचुड़ कर फिंक जाये ज़ार्त⁵ से ।
 पर हसरतें न दम तोड़े, जहाँ की दार⁶ पे ॥
 ज़िल्ल-ए-कार⁷ नहीं मेरा वजूद, नहीं ग़र्सान⁸ ।
 है क़त्रः-ए-खूँ-ए-जहाँ-ए-उल्फ़त⁹ दार-ए-दार¹⁰ पे ॥

1. अचानक। 2. दुनिया की तुच्छ समस्या। 3. जहाँ का जलावर्त (पानी की लहर)। 4. अवांछित किनारे पे। 5. वजूद। 6. सूली (cross)। 7. सांसारिक क्रियाकलाप की परछाई। 8. क्षुधित। 9. प्रेम संसार के खून की बूंद। 10. जहाँ की सूली (दार का मतलब सूली और संसार दोनों होता है)।

सज्दः-ए-नमाज़ में ये सर क्यूँ झुका खुदा के आगे ।
 बुतपरस्ती आती नहीं जिसे, उस काफ़िर¹ महबूब के आगे ॥
 तरतीबी हो तो देख कहें 'हो न हो, कोई होगा बनाने
 वाला'² ।
 हसरत-ए-दिल की बिजली यूँ गिरी मुझपे, अब कोई नहीं
 न ज र
 के आगे ॥
 जहाँ-जहाँ गया हूँ वहाँ-वहाँ, लौअ³ उठा गयी है आग ।
 बुत-ए-सनमख़ानः⁴ पिघल उठा, सो अब खड़ा हूँ जहाँ के
 आगे ॥

1. नास्तिक। 2. अनुभव सापेक्ष (A posteriori) तर्क (Argument) के आधार पर खुदा के अस्तित्व पर कटाक्ष। 3. प्रेम की लपट। 4. मंदिर का बुत (प्रतिमा)।

ये गर्मि-ए-सोज-ए-निहाँ-ए-जात¹ क्यूँ न तेरे साथ गई
 /
 बेखुदि-ए-लौअ² से जब बिछड़ वजह-ए-दिलआज़ार³ गई
 //
 नज़र से दिल में खींच, फिर तुझे खींचा है पेशेनज़र ।
 तू⁴ दुआतशः-मर्य⁴, कि जिससे मुझ जाहिद⁵ की जान गई
 //
 ज़बाँ-ए-ज़िक्ख़वॉ⁶ पुकार और चाक करे दरीदः⁷ जाँ को ।
 दम तोड़ती हसरतें मेरी इस जहाँ को, दरिंदः जान गई ।।
 महव-ए-बेखुदि-ए-ज़ौक⁸ न पता चले फिराक⁹ है, या है
 वस्ल¹⁰ ।
 कुर्ब-ए-वस्ल¹¹ छोड़ हिज़ में, यूँ कुछ इस अदा से वो
 वजह-ए-निशात¹² गई ।।
 सुरुर-ए-इश्क मे¹³ जब भी जागे फुसूँ-ए-फुंगो¹⁴ तो आह
 कहे ।
 तू गई, ज्यूँ मुझ जाँसोज¹⁵ की जाँ से कोई जाँ-ए-जाँ
 गुदाज़¹⁶

गई ।।

फ़िक्र-ए-मआल¹⁷ फ़ना¹⁸ हुई, तसव्वुफ¹⁹ गया
 अंजुमन-ए-आरजू²⁰

1 वजूद में छिपी तपिश (बेचैनी) की गर्मी। 2. प्रेम की व्याकुलता से जगी बेसुध अवस्था। 3. दिल को दुखी (बेचैन) करने वाली वजह। 4. दो बार खींची हुई शराब। दो बार खींची शराब, बहुत तेज़ शराब होती है। इसकी सादृश्यता दिल में उतरी प्रेमिका की तस्वीर को (विरह में) नज़र के आगे फिर से खींचने के साथ की गई है। 5. शराब न पीने वाला व्यक्ति। 6. ज़िक्क़ करने वाली ज़बाँ। 7. विदीर्ण। 8. आनंद की बेसुध अवस्था में लीन। 9. विरह। 10. मिलन। 11. मिलन की समीपता। 12. खुशी की वजह। 13. प्रेम के चढ़ते नशे में। 14. फरियाद का जादू। 15. दग्धहृदय। 16. चित्त को द्रवीभूत करने वाली वजह। 17. परिणाम की चिंता। 18. नष्ट। 19. संसार से दुराव। 20. चाहत की महफिल। 21. यथार्थ की पकड़। 22. द्वैत। 23. विवाह की इच्छा। 24. वजूद। 25. भावनाओं की रंगीनी।

से ।

महवियत-ए-हक²¹ भी गई, पर पेशेनज़र से कभी न
 सूरत-ए-यार

गई ।।

ज़ाहिर, निहाँ, फिर पेशेनज़र ज़ाहिर, दुई²² दुई नहीं, फिर
 दुई ।
 गया शौक-ए-ख़ान:आबादी²³ पर जात²⁴ से न रंगीनि-ए
 -जज़्बात²⁵ गई ।।

खुद खुदी खुदा है, खुदा जो चाहे वही होगा ।
 तो अब कोई बताये, मैं जो चाहूँ, क्या वो नहीं होगा ।।
 मसला-ए-दिल अब ये है, कि जो दिल में निहाँ ।
 वो नज़र के आगे, ज़ाहिर होगा या नहीं होगा ।।
 नफ़सकुशि-ए-हवास¹ पूछे जुम्बिश-ए-कायनात से² ।
 कि भरम-ए-वजूद³ भी होगा, कि वो भी नहीं होगा ।।

1. चेतना के अंगों (इन्द्रियों) का दमन। 2. संसार की गति से। 3. अस्तित्व का भ्रम।

एहसास-ए-निहाँ: जज्ब:-ओ-कशिश

इस तमाशा के लिए क्यूँ चढ़े मेरा ही दिल दार¹⁷ पे, है मुझे नहीं

पता ।।

जो है इन आँखों की तरह जिनमें मेरा भी रंग घुला हो, दो आँखें

हो ।

तेरा आँचल भीगे, अक्स¹⁸ किसी और का, और सब, है मुझे नहीं

पता ।।

है इक ही इश्क़, एक ही ज़िन्दगी, एक ही बार देखती हैं आँखें

जहाँ का खेल सारा ।

है एक तू ही आरजू-ए-इश्क़¹⁹, मिले क्यूँ नहीं, है मुझे नहीं

पता ।।

तेरी जात को जानता हूँ मैं, ऐ बदजात¹ ! ।
 कमबख्त² चश्म, कि तू लगे मुझे आब-ए-हयात³ ॥
 दिल-ए-खराब⁴ के आस-पास क्यों रहे तू ।
 बदगुमौ⁵ क्योंकर है जज़्ब:-ए-बरबाद ॥
 हिज्र⁶ में तू नाज़-ए-वस्ल⁷ दिखलाये ।
 क्या ग़जब है, तेरी अदा ऐ मेरी जान! ॥
 उजाड़ गया है दिल को मेरे ।
 क्यों धड़के अब जिस्म-ए-कायनात⁸ ॥
 ऐ खुदा! तू दिल्लगी से बाज़ आ ।
 क्या बचे जो अंजुमन-ए-आरजू⁹ खाक ॥
 साकी बना है वो आज, देख खुदा ।
 मुझे पिला रहा चश्महा से¹⁰ मय-ए-नाब¹¹ ॥

1. शोख। 2. बदकिस्मत। 3. अमृत। 4. बर्बाद दिल। 5. कुधारणा। 6. विरह। 7. मिलन की शोखी। 8. ब्रह्माण्ड का जिस्म। 9. चाहत की महफिल। 10. आँखों से। 11. शुद्ध शराब।

दिल से तू उतर गया है, तू खयाल¹ से भी अब उतर ।
 न आ नज़र अब पेशेनज़र, न मेरी रहगुज़र से अब गुज़र ॥
 बदलता है वक़्त-ओ-जहाँ, बदल जाते हैं जज़्बों के
 रंग-ओ-ढंग ।
 फ़ना² कर फ़ानी³ रंग-ओ-ढंग, बनना हो तो मुझसा
 एहसास-ए-जाविदाँ-ए-दिल⁴ बन ॥
 दिल के करीब था ही, हिज्र⁵ में वो डूब गया है दिल की
 गहराइयों
 में ।
 ऐ ख़ाब-ए-परीशॉ⁶! अब तो तक⁷ कर, मेरी आँखों में
 अश्क⁷ बन

1. कल्पना। 2. नष्ट। 3. नश्वर। 4. दिल का अमर एहसास। 5. बेचैन ख़ाब। 6. परित्याग। 7. आँसू।

झूठ भी एक भरम है सच की तरह ।
बुत-ए-सनमखानः-ओ-सनम¹ की तरह ॥
हिज्र² है तो ये नहीं कि वो साथ नहीं ।
वो है पेशेनज़र अहद³ के भरम की तरह ॥
सर धड़ से जुदा करना चाहूँ मैं अपना, कि ।
खुदा एक झूठ है, एक झूठे भरम की तरह ॥

1 प्रेमिका और मंदिर में स्थित मूर्ति। 2. विरह। 3. वादा।

चाहत

क्या कहूँ, वैसे तो तू जो चाहे, मैं वो चाहता हूँ ।
फर्क न हो दोनों की चाहत में, यूँ इस क़दर, मैं तुम्हें
चाहना चाहता हूँ ॥

मिटके ये दुई,¹ मुझको बना लो खुद
इक बार मेरी निगाहों से मुझे तो देखो तुम ।
तुम्हें नज़रों के आगे किस क़दर रखना चाहता हूँ हमेशः
देखो तो किस क़दर मैं तुम्हें चाहना चाहता हूँ ॥

इक बार अपनी ये क़बः-ए-रुह² दे दो
तेरे सीने में ये दिल बन के धड़कना चाहता हूँ ।
कि जितना चाहता हूँ मैं तुम्हें,
उतना एक बार तुम से, खुद को चाहना चाहता हूँ ॥

रह न जाये तश्नगी³ प्यासी मेरी ज़ात⁴ में
आबसार-ए-आब-ए-हयात⁵ सा फूट उठे मेरी ज़ात में ।
महवियत-ए-बेखुदी⁶ कुछ बढे मेरे वजूद की
तू चाहे मुझे उस क़दर, जिस क़दर मैं तुम्हें चाहना चाहता
हूँ ॥

1. द्वैत। 2. रुह का वस्त्र (शरीर)। 3. प्यास। 4. वजूद। 5. अमृत का झरना। 6. बेसुध अवस्था की तल्लीनता।

कुछ इस तरह से है खुदाई, कि न धड़के हैं दो दिल कभी
इक

तरह से ।

फ़ैज-ए-खुदा¹ ! कभी फ़ैज-ए-जहाँ ! एहसास प्यार का
सीनों में

कब उतरा है इक तरह से ॥

यूँ क्यूँ दौड़ पड़ते हैं हसरतों के सदहज़ार घायल हिरन,
मेरे

ज़ख्म-ए-दिल को रौंदते हुए ।

चाहत के खुरों से लहलुहान ज़ख्म मैं, ज़ख्म-ए-ग़ज़ाल,³
ग़ज़ल मैं

इक तरह से ॥

आतशज़दः-दिल में⁴ लौअ⁵ की लपट से लिपट के जल रहा
मैं

रस्म-ए-उल्फ़त में ।

महवियत-ए-हक़-ए-नौ⁶ में हुआ यूँ बरबाद, कि अब लगूँ
आबाद

मैं इक तरह से ॥

सीने को दर्द दे जब वहशत-ए-दिल⁷ थमती है, और
तसव्वुफ़⁸ से

सब भरम खाक हो जाता है ।

तुझे क्यूँ बताऊँ, कि तू तब लगती मेरी तरह, हर किसी में
वही

लौअ दिखती है इक तरह से ॥

केवल सलीब⁹ पे खींचने से क्या होगा, फिर जी उठूँगा ये
मेरी

आदत है ।

वो ज़हर दे कि सच में मर जाऊँ मैं, कि आज हुआ हूँ

1. खुदा की उदारता। 2. जहाँ की उदारता। 3. हिरण का ज़ख्म। ग़ज़ल का व्युत्पत्तिमूलक अर्थ ज़ख्मी हिरण (ग़ज़ाल) की आह होता है। 4. दग्ध हृदय में। 5. प्रेम की आग। 6. नये सच की तल्लीनता। 7. दिल की घबराहट। 8. दुनिया से दुराव की स्थिति। 9. सूली (Cross)। 10. नाखुश अस्तित्व। 10. खुशी के लम्हें। 11. भीगी आँखें। 12. आह का संयम।

वजूद-ए-नाशाद¹⁰ में इक तरह से ॥
यूँ नहीं कि तेरे लिए मैं मर रहा था और मर रहा हूँ, मर
रहा हूँ

तेरी अदा से ।
कि तू जिस अदा से आई थी मुस्कुराते, वैसे ही लौट गई,
उसी

तरह से इक तरह से ॥
वो लम्हात-ए-निशात¹⁰ रहे नहीं, पर हिज्र अभी भी
चश्महा-ए-नम¹¹ को तेरी आँखों से मस्त करता है ।
कहर बरपा कई तरह से मुझपे, पर ज़ब्त-ए-फुगों¹² से
सहा है,

सब कुछ मैंने इक तरह से ॥
चाहता ही क्या था मैं तुझसे, इससे ज़्यादा ।
आँखों से दिल में तू आब-ए-हयात¹ सी उतरे तू, इससे
ज़्यादा ॥
चाहता ही क्या था मैं तुझसे, इससे ज़्यादा ।
सुकूँ-ए-चश्म², सुकूँ-ए-दिल,³ इससे ज़्यादा ॥
चाहता ही क्या था मैं तुझसे, इससे ज़्यादा ।
दिल को तू अच्छी लगती है, इस एहसास से ज़्यादा ॥
चाहता ही क्या था मैं तुझसे, इससे ज़्यादा ।
के आँखों के आगे तू बनी रहे, इससे ज़्यादा ॥
चाहता ही क्या था मैं तुझसे, इससे ज़्यादा ।
के अपनी चाहत अपनी आरजू, इससे ज़्यादा ॥
बेरुखी से तेरी मेरे होश-ओ-हवास हैं बदल गये ।
चाहता हूँ अब तेरी पनाह और इससे ज़्यादा ॥

1. अमृत । 2. आँखों का सुकूँ । 3. दिल का सुकूँ ।

नामुम्किन था ख़्वाब से रिश्त: तोड़ना, न तोड़ता मैं, तो
कैसे जिंद:

रहता ।

थी जिन्दगी लम्बी बहुत, जीना था और, न मरता मैं तो
कैसे जिंद:

रहता ॥

लम्ह:-ए-इन्तज़ार था इतना लम्बा, कि जिन्दगी समा जाये
पर

सुबह न आये ।

तुझे भूलकर तेरे शबिस्ताँ में, बेफ़िक्र मैं न सोता तो कैसे
जिंद:

रहता ॥

न तेरे दिल पे बस था, न अपने दिल पे ही यकीं, जुनूँ से
मिलता

ही क्या ।

जुनूँ से मिलता ही क्या, सब कुछ न छोड़ता खुद पे, तो
कैसे

1. शयनकक्ष ।

जिंदः रहता ॥
 सब कुछ भूलकर आया है मजा, बच्चों सा खुश होने में,
 हर वक्त
 तुम्हें ।
 हर वक्त तुम्हें ही याद करता, भूलता तुम्हें जो न मैं, तो
 कैसे
 जिंदः रहता ॥

उत्फ़्त में ।
 तो अब उस निगार^१ को, अब जाके भूलने से क्या फ़ायदा
 ॥
 अजब-अजब कायदे मोहब्बत करने वालों के, सूद चाहें ।
 मोहब्बत करें, और फिर करके पूछें, मोहब्बत करने से क्या
 फ़ायदा ॥

जब ख़्वाब की तक़मील^१ ही न हो, तो जीने से क्या फ़ायदा
 ।
 हिज़ में ग़म-ए-जाँगुसिल^२ से, बारहा^३ मरने से क्या फ़ायदा
 ॥^{१९६}
 हय! अजब कि राह-ए-उत्फ़्त^४ मुझसे अब ये पूछे, के ।
 अब, हय! अब रस्म-ए-उत्फ़्त निभाने से क्या फ़ायदा ॥
 जियौ^५ कर चुके दिल-ओ-जिस्म-ओ-जान, जब उसकी

अपनी चाहत की बाबत मैं जानूँ, उसकी बाबत मैं क्या जानूँ
 ।
 लगी है लौअ^६ अब वो संगदिल^७ है, कि क्या है, अब मैं क्या
 जानूँ ॥

1. पूर्णता। 2. दिल को चाक कर देने वाला ग़म। 3. बार-बार। 4. प्रेम की राह। 5. बर्बाद।
 6. प्रेमिका।

1. प्रेम की आग। 2. पत्थर दिल। 3. प्रेम की रीति। 4. सांसारिक प्रेम। 5. साधारण।
 6. दाँव-पेच। 7. अमृत का झरना। 8. आँखों की शराब।

संग को बुत, बुत को खुदा बनाने की रस्म-ए-परस्तिश³
 यहाँ पे ।
 मजाज़ी-इश्क⁴ की उमूमी⁵ पेच-ओ-खर्म⁶ मैं क्या जानूँ ॥
 चश्मः-ए-आब-ए-हयात⁷ फूटा है, याँ इस दिल में उसे
 देख ।
 छलक उठी है उसकी मय-ए-चश्महा⁸ आँखों से, पर क्यूँ
 उदास,
 मैं क्या जानूँ ॥

जौक-ए-खुशी⁹ गया औ हर बात गई ॥
 हनोज³ क्यूँ मुझमें फ़ितरत-ए-ज़िद-ए-तिफलाना⁴ ।
 जान क्यूँ नहीं गई जो मेरी जान गई ॥
 यार से था शौक-ए-खानःआबादी⁵ ।
 दिल-ए-बर्बाद से अब हर बला-ए-जौ⁶ गई ॥
 फुसूँगर⁷ है मर्हलः-ए-तसव्वुफ़-ए-सुरुर-ए-इश्क⁸ ।
 याद आई तो खुश, चुप रहा जो याद गई ॥
 तेरी जौर-ए-बेरुखी⁹ मेरी नींदों में भी ।
 जौर-ए-बेरुखी दी क्यूँ, जो वज्ह-ए-निशात¹⁰ गई ॥
 उम्मीद-ए-निहाँ¹¹ क्यूँ थी वजूद-ए-शाम में ।
 सुब्ह हो तो लगे ज्यूँ शरीक-ए-हयात¹² गई ॥
 निहाँ है दिल में यूँ, ज्यूँ रसाई-ए-खुदा¹³ ।
 सो महवियत-ए-हक¹⁴ से नहीं सूरत-ए-यार¹⁵ गई ॥

गर्मि-ए-सोज़-ए-जात¹ तेरे साथ गई ।

एहसास-ए-इश्क¹ का राही मैं ।

1. वजूद के ताप की ऊष्णता। 2. खुशी का आनंद। 3. अभी तक। 4. बच्चों जैसा हठ करने की प्रकृति। 5. विवाह की चाहत। 6. जी का जंजाल। 7. जादूगर। 8. प्रेम के चढ़ते नशे से

एहसास-ए-निहाँ: ज़ब्ब:-ओ-कशिश

उत्पन्न संसार से दूर रहने की अवस्था का पड़ाव। 9. बेरुखी का जुल्म। 10. खुशी का कारण। 11. छिपी हुई आशा। 12. जीवन संगिनी। 13. खुदा की पहुँच। 14. यथार्थ की तल्लीनता। 15. प्रेमिका का चेहरा

1. प्रेम की अनुभूति। 2. शुरुआत। 3 अंत।

एहसास-ए-निहाँ: ज़ब्ब:-ओ-कशिश

कि जिसकी न इब्तदा^१ कोई, न इंतहा^२ कोई ॥
 जिन्दगी मेरी, मेरी अपनी शायरी है ।
 हर छंद मेरी रचना, उधार का हर्फ नहीं कोई ॥
 खुदा को मेरी ज़बाँ जाननी होगी ।
 मैं सुन नहीं सकता, चाहे वो कहे या कहे कोई ॥
 वक्त औ जहाँ के घर में मैं नहीं जीता ।
 मैं जहाँ रहता हूँ, उसका पता नहीं कोई ॥
 फिर एक तेग है मेरे हाथों में ।
 भरम में न रहना, मुझे रोक सकता नहीं कोई ॥
 मुट्ठी भर ज़मी के लिए बहायी खूँ की नदियाँ ।
 मेरे महबूब को कैसे कैद कर सकता है कोई ॥

कि नज़र मिलाऊँ मैं, एक बदज़ात शोख
 निगार-ए-नाज़^३ से ॥
 जैसे हो तफ़ावुत^४ खुदा और काफ़िर^५ के बीच ।
 ऐसे ही फ़ासला है भरम का, दिल का, दिल के अज़ाब^६ से
 ॥
 रुकती है दिल की धड़कनें मता-ए-शौक्^७ को देख ।
 बढ़ जाती हैं रंगीनियाँ, बुततराश-ए-ख़याल^८ से ॥

कर रहा हूँ मज़ाक आपसे, दिल से, और जज़्बात से ।

1. गर्वशील प्रेमिका। 2. दूरी। 3. नास्तिक। 4. रोग। 5. चाहत की पूँजी (प्रेमिका)।
 6. कल्पना रूपी मूर्तिकार।

मेरे निगार—ए—नाज़¹ की, ये फिर कोई नौ शरारत² होगी
नहीं थी वो ऐसी, लोगों से सीखी ये अदा—ए—नैज़ःबाजी³
होगी

अभी तो राह—ए—दिल⁴ से गुज़री भी नहीं है
बेकसि—ए—ज़ौक—ए—बेखुदी⁵ पूरी तरह
अभी तो तश्नगि—ए—चश्म⁶ में बची है
तुझे देखने की प्यास उसी तरह

201

हसरत—ए—मजाज़ी⁷ पूछे क्या सच में दीद⁸ अब
रोज़—ए—क़यामत⁹

होगी

शबिस्ताँ¹⁰ में मेरे, पनाहों में मेरी, अभी तो है महव¹¹
रंगीनि—ए—आगोश¹² तेरी
अभी तो डूबा हूँ मैं महव—ए—ताबीर¹³
ख़ाब को अस्त जान¹⁴ आशना आँखों में¹⁵ तेरी

बिरहमन—शेख़ बदहवास¹⁶ सब, यूँ ही तू साथ ता क़यामत¹⁷
होगी

जी लो मरने से पहले ।

मैंने लो उसे अपना, अपना होने से पहले ॥

महकने दो आँखों को ख़्वाब से ।

शबनम—ए—अश्क¹ से भीगने से पहले ॥

भूल जाओ पेचीदगी ज़माने की ।

बच्चों—सा खुश हो जाओ, उदास होने से पहले ॥

सोचने से कुछ नहीं होता, वजूद की इमारत ही ढहती है ।

फ़िक्र करना छोड़ो फ़ना² होने से पहले ॥

उतारकर रख दो वज़्न—ए—मसाइल—ए—जहाँ³ ।

खुल जाओ तक्दीर के बदलने से पहले ॥

खुल कर बिखर जाओ पूरे जहाँ में ।

बहार के साज़—ओ—सामाँ मिट जाने से पहले ॥

उसके दिल पे बस नहीं, अपने दिल पे तो रखो यकीं ।

अपना तो साथ दो, उसका साथ मिलने से पहले ॥

फिर कब मोहलत मिलेगी, ख़्वाब की मेहन्दी रचने की ।

कुछ दिन तो ख़्वाब देखो, ख़्वाब पूरे होने से पहले ॥

बताते हैं सब, के तुम्हारे ख़्वाब पूरे होने में शक है ।

क्यूँ उदास होऊँ मैं, ख़्वाब टूटने से पहले ॥

1. चंचल प्रेमिका। 2. नई शरारत। 3. बरछी चलाने की अदा। 4. दिल की राह। 5. बेसुध अवस्था की खुशी से जन्मी बेबसी। 6. आँखों की प्यास। 7. इस संसार से जुड़ी ख़्वाहिश। 8. दीदार। 9. क़यामत के दिन। 10. शयनकक्ष। 11. खोयी। 12. आगोश की रंगीनी। 13. स्वप्न में खोया। 14. सच्चा। 15. स्नेहसिक्त आँखों में। 16. पागल। 17. क़यामत तक।

1. आँसू रूपी शबनम। 2. बर्बाद। 3. संसार की दी हुई समस्याओं का भार।

आप ज़रीन समझिये

हिज्र में कैसे दम निकले कुर्ब-ए-वस्ल-ए-यार¹ से, अब न
पूछिये ।

शोखि-ए-परतव-ए-खुर² से, खिजाँ³ में
आतश-ए-बहार-ए-चनार⁴ देखिये ॥

मेरे दिल को अब आप भी समझिये, औरों की तरह ही
गैरजरूरी ।

आप हैं दिल वाले, अब हय! अब आप भी मेरी मजबूरी न
समझिये ॥

यूँ ही नहीं जर्द-हालत-ए-दिल-ए-हिज्र⁵ से, मुझे इस
कदर

प्यार ।

मेरे महबूब, मेरी गोरी नैना के लाला-ए-चश्म⁶ को, आप
जरीन⁷

समझिये ॥

1 प्रेमिका के मिलन की समीपता। 2. सूरज की रोशनी की चंचलता। 3. पतझड़। 4. चिनार पे बहार की आग। 5. विरह के दिल की मुरझाई (जर्द) हालत। 6. आँख की पुतली। 7. सुनहली।

इक पल में झुँझला, एक पल में रहे रोये है ।
तू बचा, अब तू भी पूछ! कि तू यूँ क्यों होये है ॥
हय! बेखुदि-ए-हिज्र¹ की सज़ा-ए-रंगीनि-ए-वस्ल² ।
वही सपनों की ऊँघ, वही आँखें खुली सो रोये है ॥
कुछ ख़ता गोरी नैना की जरीन³ पुतलियों की भी ।
जर्द⁴ हालत लिए हाल-ए-दिल यूँ ही नहीं यूँ होये है ॥

1. विरह की बेसुध अवस्था। 2. मिलन की रंगीनी की यातना। 3. सुनहली। 4. पीला।

हिज़-ए-नामुराद¹ में वस्ल को, उसी को ढूँढते हैं हम ।
ऐ चश्म-ए-नर्म परेशाँ न हो, उसी को ढूँढते हैं हम ॥
जिसकी पुतलियों की शुआये³ ज़रीन⁴, दराज़ जुल्फ़, जो
महजबी⁵ ।

हाँ, वही गोरी नैना, उसी को ढूँढते हैं हम ॥
मन्नत है वही, उसी को बारहा⁶ खुदा से माँग कर ।
खुदा को लगा दाँव पर, उसी को ढूँढते हैं हम ॥
ये ज़िद-ए-ज़ाहिद-ए-मयकश⁷ है, नशा उतरेगा नहीं ।
मेरी बाँहों में वो, और उसी को ढूँढते हैं हम ॥
जो नहीं नज़र के आगे, उसी को ढूँढते हैं पेशेनज़र ।
मतला-ता-मकर्ता⁸ ज़ख्म-ए-ग़ज़ाल-ए-ग़ज़ल⁹ में, उसी
को

ढूँढते हैं हम ॥

महबूब को कहा खुदा, तो खुदा भी दिखाने लगा जल्बः
वही ।

देखने को उसे, जल्बः-ए-खुदा में उसी को ढूँढते हैं हम
॥

इश्क़ की इल्तिमास¹⁰ भी हूँ, इक़्तिदार¹⁰ भी हूँ ब
जुनूँ-ए-खुदी¹¹ ।

रुठ कर खुदा से, फिर मनाकर, उसी को ढूँढते हैं हम ॥

इस मर्हलः-ए-राह-ए-नौ-ए-ज़िन्दगी¹² में दम-ब-दम¹³

आश्कार¹⁴ वो ।

मुक़ाम-ए-फ़ना-ए-तसव्वुफ़¹⁵ की बेखुदी में उसी को ढूँढते
हैं

हम ॥

जो है दिल में निहाँ उसी पे नहीं दिल का असर है ।

चश्म-ए-नर्म फिर भी ढूँढे उसे, होके बुल्हवस³ है ॥

स्वायत-ओ-तंज़ीम⁴ में जीता होगा जिसे कहें खुदा ।

मेरे दिल में जो जीता है, वो तो बेअसर है ॥

ये जो तेरे मेरे बीच फ़ैला है, वो भरम के सिवा कुछ भी
नहीं ।

तू अपने दिल से न पूछे, जिस दिल पे मेरे दिल का असर
है ॥

एक बुत-ए-निगार⁵ से लगा के दिल, कहे एक काफ़िर ।

निगार-ए-नाज़⁶ ज़हरआलूद⁷ चाहत, बस मीठा ज़हर है ॥

आग, दरिया, तूफ़ाँ, ज़मीं, आसमाँ की सिफ़ात⁸ लिए हुए ।

कहूँ निहाँ सिफ़त-ए-खुदा,⁹ ज़ाहिर सिफ़ात-ए-मोहब्बत¹⁰
है ॥

1. अवांछित विरह। 2. भीगी आँख। 3. रोशनी। 4. सुनहली। 5. जिसका माथा चाँद सा हो।
6. शराबी जाहिद (तपस्वी) का हठ। 7. ग़ज़ल के पहले शेर से आख़री शेर तक। 8. ग़ज़ल
रूपी हिरण का ज़ख्म। 9. विनम्रता। 10. रोब। 11. खुदी का उन्माद लिए, उन्माद का साथ।
12. ज़िन्दगी के नये रास्ते के पड़ाव में। 13. प्रतिक्षण। 14. प्रकट। 15. विरक्ति के ख़त्म होने
का मुक़ाम।

1. छिपी हुई। 2. भीगी आँख। 3. लोभी। 4. सामाजिक संस्था और परंपरा। 5. प्रेमिका रूपी
मूर्ति। 6. गर्वशील प्रेमिका। 7. विष मिली हुई। 8. गुण (वैशेषिक दर्शन में वर्णित पाँचों तत्वों
के गुण)। 9. खुदा की विशेषता। 10. प्रेम की विशेषतायें।

तुझे को कुछ यूँ, इस तरह से, मैं इस दिल में धरूँ ।
कि अब न मरूँ खुल्द¹ को, न शोलः-ए-दोज़ख² से डरूँ
॥

न रहे का'बः, न कलीसा,³ न खौफ़-ए-कुफ़-ओ-ईमॉ⁴ ।
ब⁵ सदहज़ार शौक़, रुख़ तेरी जानिब⁶ जब मैं करूँ ॥
मेरा²¹⁰ इश्क़-मजाज़ी⁷ मुकम्मल⁸, न चाहिए इसे
मुक़ाम-ए-हकीकी⁹ ।
छीन ले तो छीन ले खुदा फ़ैज़¹⁰ अपना, खुदा से भी अब न
मैं

डरूँ ॥

कहूँ ज़ाहिर तुझे देख, लोग कहें जिस सिफ़त-ए-खुदा¹⁰
को

निहाँ ।

1. स्वर्ग। 2. नरक की आग। 3. गिरजाघर। 4. आस्तिकता और नास्तिकता का भय।
5. तरफ़। 6. सांसारिक प्रेम। 7. पूर्ण। 8. गैरसांसारिक पड़ाव। 9. कृपादृष्टि। 10. भगवान की विशेषता।

सदके उतारे मेरी नज़र तेरे हुस्न का, तुझे देखने की
खातिर मैं

मरूँ ॥

मुझे बिगाड़ मेरी तबियत बिगाड़ गई, वो बदहवास मुजस्सम
शौक़-ए-बुज़ाँ¹ ।
सो उसके नाम के अव्वल² हर्फ़-ए-इल्लत³ को बिगाड़ के,
उसे मैं

भी अब कहूँ निहाँ²¹¹ ॥
मेरी बदहवास⁴ बेखुदी⁵ में मेरी आँखों में उतरी है
मय-ए-नाब-ए-चश्महा-ए-यार⁶ का नशा ।

1. हृदयस्थ प्रेमिका की चाहत की मूर्त इच्छा। 2. प्रथम। 3. स्वर। 4. उद्विग्न। 5. बेसुध
अवस्था। 6. प्रेमिका की आँखों की शुद्ध शराब। 7. नृत्यशील। 8. बहार का जल्वा। 9. वजूद।
10. दुर्भाग्यहीन। 11. पतझड़ का ठहराव। 12. उन्माद की तलवार। 13. प्रकट। 14. प्रतिक्षण।
15. प्रकट। 16. प्रेम की आग में मिटने का गुण।

रक्सकुनों^९ जल्बः-ए-बहार^९ है मेरी ज़ात^९ में, कमबख्त^{१०} है,
जो

कहे इसे वक्फः-ए-खिज़ाँ^{११} ।।
कहते हैं जंग-ओ-इश्क में सब जायज़, सही-ग़लत,
ग़लत-सही,

सब सही, सब ग़लत ।
प्यारा है निगार, उसकी ख़ता नहीं, सो बेग़र्द तेग़-ए-जुनूँ^{१२}
करे

रकीब का सर धड़ से जुदा ।।
नुमूद^{१३} है खुदा ज़ात में, पर ढूँढ़ें उसे जहाँ में सब याँ वाँ,
मिटाने

को भरम की दूरी ।
दम-ब-दम^{१४} है जो फ़ाश^{१५} मेरी ज़ात में, कि वो मेरे आगे
भी हो,

मेरे वजूद में जौहर-ए-फ़ना-ए-लौअ^{१६} है जगा ।।

लम्हात-ए-फुर्कत में¹ माहताब-ए-वस्ल² को देखते हैं हम
 /
 शरर-ए-खुर-ए-हिज्र³ में जल, अजब से बुल्हवर्स⁴ हुए से
 हम ॥
 वक्फ़:-ए-आखिर-ए-तलफ़फ़ुज-ए-निहाँ से⁵ पुकारकर तुझे
 ऐ निहाँ ।
 अब वही मुराद-ए-वस्ल,⁶ तुझे बाँहों में देखते हैं हम ॥
 दम में नहीं है दम तो क्या! शौक-ए-चश्म⁷ हुआ है नम ।
 कि अज़ाब-ए-हिज्र⁸ में ऐ दिलआज़ार!⁹ तुझे देखते हैं हम
 ॥

1. विरह के लम्हों में। 2. मिलन का चाँद। 3. विरह रूपी सूरज की आग। 4. लालची।
 5. निहाँ शब्द के उच्चारण के आखिरी ठहराव से। 6. मिलन की मुराद। 7. आँखों का शौक।
 8. विरह का रोग। 9. दिल को कष्ट देने वाली।

एहसास-ए-निहाँ: ज़ब्ब:-ओ-कशिश

खुदा से जानूँ जहाँ को ।
 कि जहाँ से मैं खुदा को ॥
 इक तख़य्युली-तसव्वुर¹ लिए ।
 भटके सब यहाँ वहाँ को ॥
 मेरी बातें सब लोग जाने हकीकी² ।
 पर मैं मरूँ इक बुत³ को ॥
 इक बार को आया यहाँ ।
 हूँ मैं, मैं फिर कहाँ को ॥
 वहाँ गुरुर बेरुखी का ।
 वफ़ा का घमण्ड मुझे यहाँ को ॥
 मैं पुकारू अपनी जाँ को ।
 लोग समझे खुदा-ए-निहाँ को ॥
 मैं न रहूँ तो क्या, चीज़ें ।
 रहें जस का तस वहीं, जहाँ को ॥
 आलम-ए-तसव्वुर⁴ तुझे पुकारे ।
 अब नहीं किसी खुदा को ॥

1. आदर्शवादी संकल्पना। 2. अद्भूत। 3. प्रेमिका। 4. छिपे खुदा को (निहाँ से प्रेमिका भी संबोधित)। 5. प्रेम का संसार।

एहसास-ए-निहाँ: ज़ब्ब:-ओ-कशिश

शिकायत

शब-ए-हिज्र¹ ढलती क्यूँ नहीं, उफ़क-ए-सहर पे²
 ज़री-शुआअ-ए-चश्म³ से तेरी, सुब्ह फूटती क्यूँ नहीं ।
 इंतहा-ए-शौक⁴ पूछे जुनूँ से, मैं तुझसे, कि हय! तू नज़र
 के

आगे से हटती क्यूँ नहीं ॥

तेरी यक नज़र से दौड़ उठे हैं हसरतों के हुजूम
 दश्त-ए-सन्दल-ए-तसव्वुर में⁶ ।
 पेशेनज़र फिराक⁷ में है लम्हात-ए-वस्ल⁸, मेरी ज़ात⁹ से ये
 रंगीनि-ए-कुर्ब-ए-यार¹⁰ मिटती क्यूँ नहीं ॥
 पहरों-पहर खड़ा हूँ मैं, महव-ए-आगोश¹¹ तेरी बाँहों में,
 तेरी

रंगीन पनाहों में ।

बेखुदि-ए-तश्नगि-ए-ज़ात¹² से बेहिस¹³ सा हूँ मैं,
 खुमारि-ए-जौर-ए-वजूद¹⁴ कुछ और बढ़ती क्यूँ नहीं ॥
 तेरे मर्जा-ए-लब¹⁵ से छलक उठी है बाद-ए-लालफ़ाम¹⁶
 मेरे

लबों पे, मेरे लब-ए-चश्म की जुम्बिश से¹⁷ ।
 फूटा है दिल में मेरे आबसार-ए-नूर¹⁸, पर तश्नगी¹⁹ मेरी
 तश्नः²⁰

आँखों की, मेरी प्यास बुझती क्यूँ नहीं ॥

मेरी गर्मि-ए-शौक-ए-जाँ गुदाज़²¹, से तेरी आरजू का
 ज़हर

सर-ता-सर-ए-ज़ात²² तो फैल गया था ।
 उतरा है फिर क्यूँ आब-ए-हयात²³ तेरी आश्ना-आँखों से²⁴,
 मेरी

जान निकलती क्यूँ नहीं ॥

कह के हाल-ए-दिल जो न कही थी कभी, मिटा दी है
 फ़रहाद

ने आज दोशिज़गि-ए-जज़्बात²⁵ ।
 मिटेगा नाज़-ए-शीरी²⁶ क्या हस्ति-ए-कोहकन²⁷ के मिटने
 के

बाद, मेरी शीरीं नाज़-ए-शीरीं से पूछती क्यूँ नहीं ॥
 हय! ये ज़मीं के चंद टुकड़े, कुछ हज़ार दर-ओ-दीवार की
 क़तार

के बाद पेशेनज़र²⁸ ये तेरा शबिस्ताँ²⁹ ।
 मेरा औ तेरा शबिस्ताँ क्यूँ जुदा, पा-ए-जुनूँ³⁰ से जी है
 ढाह दूँ हर
 दर-ओ-दीवार, अब दीवार-ए-हिज्र³¹ है ढहती क्यूँ नहीं ॥

1. विरह की रात। 2. सुब्ह के क्षितिज पर। 3. आँखों की सुनहली रोशनी। 4. चाहत की अति। 5. उन्माद। 6. कल्पना रूपी चंदन के वन में। 7. विरह। 8. मिलन के लम्हें। 9. वजूद। 10. प्रेमिका की समीपता की रंगीनी। 11. आगोश में खोया। 12. वजूद की छटपटाहट से जगी बेसुध अवस्था। 13. संवेदनहीन। 14. वजूद के अत्याचार से जगी उन्माद की अवस्था। 15. होंठ रूपी मूँगा। 16. लाल शराब। 17. आँखों के होंठ के कंपन से। 18. रोशनी का झरना। 19. प्यास। 20. प्यासी। 21. बेचैन करने वाली खाहिश की गरमी। 22. वजूद में एक सिरे से दूसरे सिरे तक। 23. अमृत। 24. स्नेहसिक्त आँखों से।

25. संवेदनाओं का अनकहापन। 26. शीरीं का गर्व। 27. फ़रहाद का वजूद। फ़रहाद को कोहकन (पर्वत को काटने वाला) कहते हैं। 28. नज़र के आगे। 29. शयनकक्ष। 30. उन्माद का पैर (उन्माद की गति)। 31. विरह की दीवार।

तू शब-ए-हिज्र¹ सहर² तलक, मेरी नज़र के आगे रहा और
रहा

भी नहीं ।

जौक-ए-हिज्र³ से यकलख्त⁴ अशकबार⁵ हुई मेरी आँखें, पर
में

रोया भी नहीं ॥

न सोच कि मैं अपने शबिस्ता⁶ में हूँ, मैं तो मैकद:-ए-नों
में हूँ ।

मेरे तसव्वुफ-ए-नों⁸ में हैं कई मराहिल,⁹ और कोई मर्हल:¹⁰
भी

नहीं ॥

फिर यकता-रू-ए-नादों¹¹ तेरा, तकने लगा है मुझे
हिजाब-ए-हिज्र¹² किये हुए ।

क्यूँ लगने लगा है तू अपना, हुए हैं ख़्वाब तो अभी जवाँ भी
नहीं ॥

डर है कि अशक-बमिशगों¹³ गौहर-ए-ख़ाब¹⁴ सब,
बिखर-बिखर

न जाए फिर कहीं ।

दिलफ़रेब-ख़ाब-ए-अस्ल¹⁵ से, दिल-ए-बेकस¹⁶ है अभी
बहला भी

नहीं ॥

1. विरह की रात। 2. सुबह। 3. विरह से उत्पन्न आनंद। 4. अचानक। 5. अश्रुपूर्ण। 6. शयनकक्ष। 7. नवीन मधुशाला। 8. नवीन निर्लिप्तता। 9. मंज़िलें। 10. मंज़िल। 11. अद्वितीय अनभिज्ञ चेहरा। 12. विरह का पर्दः। 13. आँसू लिए पलकें। 14. ख़ाब रूपी मोती। 15. दिल को धोखा देने वाला सच्चा ख़ाब। 16. बेबस दिल। 17. बेसुध अवस्था का अत्याचार। 18. प्रेमिका की मस्त आँखों में तल्लीन।

जौर-ए-बेखुदी¹⁷ मेरी ज़ात की यूँ है मुझपे मुझमें
बुताँ-ए-निहाँ

के होने से ।

कि महव-ए-चश्महा-ए-मस्त-ए-जानाँ¹⁸ धड़क उठा दिल,
बारहा

धड़का भी नहीं ॥

नुआस-ए-ख़ाबआलूद:¹⁹ पूछती है आलम-ए-तसव्वुर²⁰ से,
कि

कहाँ है तू ।

तू क्यूँ चला आता है ता'बीर-ओ-ख़ाब²¹ में, जब पेशेनज़र
रहता

भी नहीं ॥

शौक-ए-बेइंतिहा²² है जिसकी मुझे, वही मुझसे कहे के
अपने

19. स्वप्न में डूबी हुई ऊँघ। 20. प्रेम संसार। 21. स्वप्नकाल और स्वप्न। 22. अंतहीन इच्छा। 23. ज़ज्ब (भावना) का बहुवचन। 24. लगाव और प्रेम। 25. अपरिपक्व। 26. सहारा। 27. अंतरंग मित्र। 28. प्रेम की अनुभूति को। 29. पागल विरक्त लोग। समाज के उन नव रुढ़ीवादियों को 'सरफिरे ज़ाहिद' कहकर संबोधित किया गया है, जो नये विमर्शों द्वारा एक नई संयमशीलता का दर्शन सिखाते हैं। प्रेम को 'ख़याली ज़न्नत' (Utopian World) बताते हैं। कवि के अनुसार ये वेबर के इहलौकिक विरक्त (This Worldly Ascetic) हैं, जो भौतिक उन्नति के लिए 'स्व' (Self) की एक नई संकल्पना, संसार से एक नये तरह की विरक्ति, एक नया आत्म संयम और एक नई तार्किकता अपनाते हैं। इस नई विरक्ति द्वारा अपेक्षित 'स्व' (Self) को ही अपना सच्चा 'स्व' जानने और इसकी ही फ़िक्र करने की भरपाई अन्ततः संवेदनशीलता का मूल्य चुकाकर करनी पड़ती है। वेबर का यह 'इहलौकिक विरक्त' (This Worldly Ascetic) धन के इक्दरे हो जाने के बाद इहलौकिक भोगी (This Worldly Hedonist) बन जाता है। 30. इस संसार में खुद को चरितार्थ करने वाला प्रेम। 31. पारलौकिक प्रेम। 32. नवीन सत्य की तल्लीनता।

जज़्बात²³ पे काबू रख ।
 ये तेरा इश्क़-ओ-रफ़ाकत²⁴ ख़ामख़याल²⁵ है, मैं तेरा खुदा,
 नाख़ुदा²⁶ भी नहीं ।।
 कोई हबीब²⁷ हो, तो जाने मेरे एहसास-ए-निहाँ को²⁸,
 सरफिरे-ज़ाहिदो²⁹ से क्या कहूँ ।
 क्या कहूँ कि पिछली शब वो दर्द उठा दिल में, कि रात भर
 में
 सोया ही नहीं ।।
 ये मेरा इश्क़-मजाज़ी³⁰ क्या बढ़ रहा सुरूर-ए-इश्क़
 हकीकी³¹ की

जानिब ।
 मेरी महवियत-ए-हक़-ए-नौ³² में, बारहा दिखा खुदा और
 दिखा
 भी नहीं ।।

ऐ निहाँ तीर-ए-उल्फ़त-ए-यार¹, यूँ क्यूँ कचकता क्यूँ है,
 मेरे इस
 नाशाद² वजूद के सीने में ।
 नीमकुश्त³ हसरतें भी दम तोड़ें जो, तो जान में जान आये
 मेरी

जान के सीने में ।।
 आजकल अश्क़-ए-हिज़⁴ आँखों में लिए,
 रंगीन-पनाह-ए-यार में

1 प्रेमिका के प्रेम का छुपा हुआ तीर। 2. अप्रसन्न। 3. अधमरी। 4. विरह के आँसू। 5. रास्ते से भटका हुआ। 6. इसानों को पथभ्रष्ट करने वाला फरिश्ता। 7. जिब्रील (एक फरिश्ता) की आवाज़। 8. जहाँ से दूरी रखने से जन्मी तल्लीनता। 9. वह लोग जो शराब नहीं पीते।

खोये रहता हूँ दम-ब-दम ।
 आजकल पगलाया सा मेरा सरगश्ता¹ जुनूँ, बेवज्ह मुझमें ही
 भटकता है मुझे ही बरबाद करने को मेरे सीने में ।।
 खौफ़ज़दा जहाँ को लगूँ मैं इब्लिष², कि नवा-ए-जिब्रील³
 लिए
 ज़बाँ पे क्यूँ खड़ा हूँ मैं इक बुतकदे के बुत के आगे ।
 मेरी महवियत-ए-तसव्वुफ़⁴ को देख उड़ी है नींद जहाँ की,
 पिये
 बग़ैर आजकल ज़ाहिदो⁵ को सुकूँ आता नहीं सीने में ।।

कब तक रहता आखिर मेरा जज़्ब:-ए-जवाँ¹ तेरे लिये
 बेदार² हुए
 बग़ैर ।

1. तीव्र व्याकुलता। 2. जागृत। 3. विरह का अंतराल। 4. संज्ञा और बुद्धि। 5. सर से पाँव तक का सौन्दर्य। 6. विरह का अवगुंठन (घूँघट)। 7. घूँघट रहित। 8. भावनाओं। 9. रीति।

दौर-ए-हिज्र³ जब हो इतना लम्बा, तो बेइख्तियार किये
बगैर ॥

मेरे होश-ओ-हवास⁴ सब छीन, तू अपने जवाँ
हुस्न-ए-सरापा⁵

से ।

तू मुझे यूँ क्यूँ देखे, हिजाब-ए-हिज्र⁶ को बेहिजाब⁷ किये
बगैर ॥

कैसे रखूँ मैं जज़्बों⁸ पे काबू, तरीक़ः⁹ दिखा के बता, तुझे
भी तो ।

मुझे देखना अब तक नहीं आया, मुझे बेकरार किये बगैर ॥

दिल बच्चों सा खुश था, तुमसे मिलने के लिए ।
तुम्हारा सयानापन, कि तुमने कहा नहीं आने के लिए ॥
कैसे करूँ यकीं, कि आसमाँ समा जाए जिस दिल में ।
उस दिल में जगह नहीं थी खुशी, की एक बूँद समाने के लिए ॥
आँखों से छलक कर बह गया, जो कुछ भी भरा था इस दिल में ।
क्या पड़ी थी किसी को, क्यों आता कोई उन्हें थामने के लिए ॥
सपनों की ज़मीं से उठती ख़्वाब की सोँधी महक घुट कर रह गई ।
फिर क्यों आई थी एक मुस्कुराहट, होठों पर मुस्कुराने के लिए ॥
है अभी भी गूँज रक्स-ए-नब्ज़¹ में, रा'नाई-ए-खायाल² में
दिल में म
भी ।
हैं होठ अपने, पर अब क्यों आज़ाद नहीं हैं मुस्कुराने के लिए ॥
हिस³ क्या, बेहिस⁴ क्या, जोश-ए-जुनूँ, और बेखुदी⁵ ही क्या ।
जो न कभी झुका खुदा के आगे, झुकेगा क्यों तुम्हें समझाने के लिए ॥

1 नसों में नृत्य । 2. कल्पना की सुन्दरता । 3. संवेदना । 4. जड़ता । 5. बेसुध अवस्था ।

जब अपने हाथ की लकीरें, न रोक सकती हैं अपने कदमों को ।
तो क्या तुम्हारे हाथ की लकीरें आयेंगी मुझे डराने के लिए ॥
ज हाँ न समझा सक'गी तमीज़ ,
रवायत-ए-अल्लाऊदीन-आ'-सलीम को ।
क्यों बदल दूँगा मैं अपने इरादे किसी शेर अफ़गन के लिए ॥
मुझे देख अभी तो उन्फुवान¹ पे है, जवाँ जल्व:-ए-हुसन तेरा ।
मुश्क-ए-नाब² जुल्फ़-ए-दराज़³, ला'ल-ए-मुज़ाब⁴ लब तेरा ॥
अभी तो खुद से नावाकिफ़⁵ शगुफ़्तगि-ए-गुल-ए-आरिज़²²³ ।
उन्फुवान-ए-शबाब⁷ से मय-ए-नाब⁸ छलका रहा चश्म तेरा ॥

1. बहार का आगाज़ । 2. शुद्ध कस्तूरी (Musk) । 3. लम्बे बाल । 4. लाल शराब । 5. अनभिज्ञ । 6. गाल रुपी फूल की खिलावट । 7. बहार की उठान । 8. शुद्ध शराब । 9. सौन्दर्य की चंचलता का अत्याचार । 10. सर से पाँव तक । 11. सौंदर्य द्वारा की गई उपेक्षा । 12. विरह की रात । 13. देखने वाला । 14. दृश्य ।

अभी तो मुझे देख तेरा जौर-ए-शोखि-ए-हुस्न⁹ बढ़ा जाता है ।

अभी तो मुझपे कहर बरपाता है, सरापा¹⁰ हुस्न तेरा ॥
शोख बढ़जात बेरुखि-ए-हुस्न¹¹ और बढ़ा ऐ मेरी जान ।
अभी तो शब-ए-हिज्र¹² में तड़पना चाहता और है दिल मेरा ॥

दीदावर¹³ है तो है दीद¹⁴, जाने न अभी तू ये बात ।
जाकर यहाँ से, फिर नहीं कोई आता दोबारा करने फेरा ॥

याँ तो लोगों ने साल हुए नहीं, के शबिस्ताँ-ए-वस्ल¹ में
निगार

1 मिलन का कक्ष। 2. प्रेम का इजहार। 3. चाहत की अति। 4. लोभी। 5. प्राणों की पूँजी। 6. विरह का घूँघट। विरह की दशा में प्रेमिका का खुद को प्रेमी की कल्पना में उपस्थित करना। 7. सांसारिकता की नीचता । 8. जहाँ का अत्याचार। 9. आरोप। 10. दृढ़ विश्वास। 11. अडिग गति। 13. प्रेम की राह। 13. प्रेमिका की अदा। 14. सूरज का वधस्थल। (सूरज समय का प्रतीक है)। 15. विरह। 16. दिल के घर में। 17. संसार से दुराव की सांसारिक

बदल लिया ।
नहीं की! पर गर की भी तुझसे पहले भी किसी से

इजहार-ए-उल्फ़त², तो क्या गुनाह कर दिया ॥
इंतहा-ए-शौक³ से मैंने बुल्हवस⁴ होकर देखा ऐ मेरी जान!
जो

तुझ मता-ए-जौ⁵ को ।
तो ऐ मेरी जान! तुमने मुझसे हिज्र का हिजाब⁶ कर लिया ॥
थी कमीनगि-ए-खुदाई-ए-जहाँ, पर मैं था बुतपरस्त कुछ
इस

तरह ।
कि हर बेदादगरी-ए-जहाँ का इल्जाम⁷ मैंने खुदा पर धर
दिया ॥
यकीन-ए-कामिल¹⁰ जुम्बिश-ए-अमल¹¹ राह-ए-मुहब्बत¹²
में

उकता अदा-ए-नाज़¹³ से ।
मज़बह-ए-खुर¹⁴ पे बहा हिज्र¹⁵ का खूँ, मस्कन-ए-दिल
मे¹⁶ बारुद

रख लिया ॥
मजाज़ी-महवियत-ए-तसव्वुफ़¹⁷ न टूटे मुझ
इब्लिश-ए-आशिक¹⁸

की ।
सो हुस्न-ए-मजाज़ी-ए-अंदाम-ए-निगार¹⁹ से,
शौक-ए-बुजौ²⁰

को बेकिनार कर दिया ॥

तल्लीनता। 18. प्रेमी रूपी पथभ्रष्ट फरिश्ता। 19. प्रेमिका के तन का सांसारिक सौन्दर्य। 20. हृदयस्थ प्रेमिका के साथ की चाह। 21. प्रथम। 22. 'स्वर'।

पूछे जो लोग ये कौन, जो यूँ मेरी तबीयत बिगाड़ गई है ।
तो तेरे नाम के अव्वल¹ हर्फ़-ए-इल्लत² को बिगाड़ निहाँ
कह

दिया ॥

वो जानता है, कि मैं चाहता हूँ उसे इस क़दर क्योंकि ।
पास आता नहीं कि मैं मरूँ उसके लिए इस क़दर क्योंकि
॥

देके जुल्फ़-ए-दराज़ की मुश्क-ए-तर¹, अपने चश्म की
मय-ए-नाब² ।

छोड़ जाता है मुझे अकेला, कि तड़पता हूँ मैं इस क़दर
क्योंकि ॥

नहीं कोई दूसरा, कि जो उसपे लुटाये बेपनाह
दौलत-ए-मुहब्बत ।

कि मैं ही हूँ उसका दीवाना इस क़दर क्योंकि ॥

1. ताजी खुश्बू । 2. ख़ालिस शराब ।

हिज

यूँ नहीं, कि दिल में रही न हसरत एक भी ।
 वैसे तो वाँ, रहा न खुदा आश्कार¹ एक भी ॥
 वज्ह-ए-उल्फ़त-ए-निगार² यूँ बनी वज्ह-ए-जुनूँ-ए-ज़ात³
 ।
 कि अब कोई रही, न वज्ह-ए-निशात-ए-उल्फ़त⁴ एक भी
 ॥
 माह-ओ-साल के मदार्⁵ पे नाचता वक्त लगे बाँझ ।
 कि हय! महीनों से है, न लम्हः-ए-दीद-ए-यार्⁶ एक भी
 ॥
 मुझमें जो थी निहाँ, जो है निहाँ, उसके बगैर ।
 मेरी जवाँ दुनिया-ए-उल्फ़त ले न दम एक भी ॥
 ज़ेर-ए-पाँ ज़मीं रवाँ⁷ है अब, दुश्मनि-ए-रकीब⁸ से ।
 जीने के लिए अब जबकि, वज्ह-ए-उल्फ़त-ए-निगार¹² न
 एक भी ॥
 मुद्दत हुई कहे हाल-ए-दिल, इस बात से जिगर चाक ।
 कि तब से अब तक, की न उसने बात एक भी ॥

1 व्यक्त । 2. प्रेमिका से प्रेम का कारण । 3. वजूद के उन्माद का कारण । 4. प्रेम में खुशी की वज्ह । 5. अक्ष (Axis) । 6. प्रेमिका के दर्शन का क्षण । 7. छिपी हुई । 8. प्रेमिका निहाँ कहकर संबोधित है । 9. . पाँव तले । 10. गतिशील । 11. रकीब की शत्रुता । 12. प्रेमिका से प्रेम का कारण ।

हिज़¹ की निगाह से देखूँ, गुदाजौँ वस्ल के गुनाहगार को
 मैं ।
 पस्त खिज़ौँ के दामन में हौसल:-ए-बहार-ए-बर्बाद को⁴
 मैं ॥
 ज़ौक-ए-वस्ल⁷ से चश्म:-ए-चश्म⁸ में, मिस्ल-ए-हूत⁹ तड़प
 उठी
 तेरी आँखों को²²⁹ ।
 कफ़-बकफ़⁸ उलझ देखूँ, फिर तेरी
 ख़लिश-ए-शगुफ़तगि-ए-नौबहार को⁹ मैं ॥
 शानों पे¹⁰ खुली जुल्फों में लिपटी खुशबू-ए-वस्ल¹¹ से
 भड़क रही
 हैं मेरी साँसें ।
 नशे में चूर आज फिर देर तक देखूँ, अपने
 निगार-ए-नाज़¹² को
 मैं ॥
 मद-ए-गर्मि-ए-शौक से¹³ लब-ओ-अनफ़¹⁴ पे मुस्कराया
 है तेरा
 शिगुफ़त:-रू¹⁵ ।

1. विरह । 2. प्राणों को द्रवित करने वाला । 3. पतझड़ । 4. बर्बाद बहार के हौसले को । 5. मिलन की खुशी । 6. आँखों की सरिता । 7. मीन की तरह । 8. हथेली में हथेली रखे । 9. नवबहार की खिलावट के कशमकश को । 10. कन्धे पे । 11. मिलन की खुशबू । 12. नाज़नीन प्रेमिका । 13. शौक की गर्मी के ज्वार से । 14. चेहरे पे उभरे होंठ और नुकीली नासिका । 15. खिलता चेहरा । 16. रोग ।

पनाह में तेरी लिपटी है मेरी पनाह, देखूँ दिल के अज़ाब¹⁶
को

मैं ॥

आग लगी है राह में, न इत्मिनान है, न सब्र¹ है ।
जब्त्² के बस में जुनूँ³ नहीं, कि शौक् पे अब न कोई जब्त्⁴
है ॥

जल चुकी चाक-दामन-ए-बहारों,⁵ धूल उड़ा चुकी
बाद-ए-समूर्म⁶ ।
पेशनजर गर्दालूद-गर्दूँ⁷ से, बीते बहारों की गर्म ख़ुशबूओं
की झड़

रही सुखि-ए-गर्द⁸ है ॥
मेरे जज़्बों की नाजुकी की वजह थी, मुझमें जज़्ब⁹ तेरी
सिफ़त¹⁰ ।

सो बिछड़ के तुझसे, जात¹¹ अब बेकाबू समन्दर का
आतिशफ़िशों-हश्र¹² है ॥

न पूछ कि खून मेरा इतना है गर्मखूँ¹³ क्यों, हो
कत्ल-ओ-खूँ¹⁴
क्यों ।

आतशजदः¹⁵ हूँ जिससे बिछड़, खूँ¹⁶ मेरी उसी की फ़ितरत¹⁷
का
अक्स है ॥

न खौफ़ कुफ़-ओ-ईमाँ¹⁸ का, कि अपनी खुदी का
फ़रमान¹⁹ हूँ मैं ।
मेरे आब-ए-तेग-ए-जुनूँ पे²⁰ होश की न कोई गर्द है ॥

1 धैर्य। 2 संयम। 3 उन्माद। 4 संयम। 5. बहार का विदीर्ण दामन। 6. गर्म हवा। 7. धूल आच्छादित आसमान। 8. धूल से झड़ती सुखी। 9. समाहित। 10. गुण। 11. वजूद। 12. आग उगलता उथल-पुथल। 13. गर्म स्वभाव वाला। 14. मारकाट। 15. विदग्ध। 16. स्वभाव। 17. प्रकृति। 18. आस्था-अनास्था। 19. आज्ञा। 20. उन्माद रूपी तलवार की धार पे। 21. मिलन। 22. विरह। 23. मूर्त। 24. हृदयस्थ प्रेमिका के साथ की इच्छा। 25. लोभी। 26. जहाँ के द्वारा सिखाई हुई इच्छा। 27. पीला।

मेरा जिस्म-ओ-जान है तू, तुझसे लिपट के धधक रहा हूँ
मैं ।

जुनूँ को अब इतना होश कहाँ, कि वस्ल²¹ है या हिज²² है
॥

तू मेरी मुजस्सम²³ शौक-ए-बुजों,²⁴ तेरे लिए हूँ बुझा-बुझा
।

बुल्हवस²⁵ हूँ तेरे लिए इस क़दर, कि हर शौक-ए-जहाँ²⁶
लगे

जद²⁷ है ॥

मुझमें है जो निहाँ,²⁸ उसपे मेरा असर हो न हो, मुझपे
उसका

असर तो है ।

मेरे रग-रग में अब, गर्म खूँ-ए-यार²⁹ के गर्म खूँ का गर्म
रक्स³⁰

है ॥

मेरी बेबसी, मेरी बेकसी,³¹ मुझे मेरी मता-ए-जाँ³² सी
अजीज³³ है ।

मेरा ग़म-ए-जाँगुसिल इक ने'मत,³⁴ यार की दी हुई एक
नू³⁵

है ॥

इश्क़ की इल्तिमास³⁶ हूँ मैं, इश्क़ का इक़्तिदार³⁷ हूँ मैं ।

28. छिपी हुई। 29. प्रेमिका का स्वभाव। 30. नृत्य। 31. असहायता। 32. जान की पूँजी। 33. प्रिय। 34. धन, दौलत। 35. उपहार। 36. विनम्रता। 37. रोब। 38. अप्रसन्न। 39. प्रलय का भय। 40. तेज़। 41. बुत के आगे। 42. प्रेमी रूपी पथभ्रष्ट फरिश्ता। 43. स्वर। 44. शक्ति का संयम।

बेज़ार³⁸ हूँ तुझसे बिछड़ के इस क़दर, कि अब न
खौफ़-ए-हश्र³⁹

है ॥

इक़बाल⁴⁰ हूँ मैं अपनी खुदी का, के जिसमें मिट गया है
जहाँ ।

कि दर-ए-बुत⁴¹ खड़े इब्लिश-ए-आशिक⁴² की नवा⁴³ में
निहाँ

अब ज़ब्त-ए-ज़ोर⁴⁴ है ॥

जहाँ दिल न खींचे, वहाँ जिस्म भी न खिंचे है ।
 समझ न पाए कोई, ये जो इश्क की पेचें हैं ॥
 खिंच भी जाता मैं तुझे भूल कर कहीं और ।
 पर, हर मजाज़ी-ज़ौक¹ कब मुझे खींचे है ॥
 वस्ल में यूँ दम निकले जैसे हो हिज़्र² ।
 हय! ये वजूद मेरा, किस साया-ए-जल्ब के नीचे है ॥
 डरा हूँ गुज़श्तः-हिज़्र³ से मैं इस क़दर ।
 कि महीनों से वो मुझे बाँहों में भींचे है ॥

1 भरम में डालने वाला आनंद । 2. विरह । 3. बीता विरह ।

हसरतें अब तो बस तेरी बाँहों की पनाह चाहती हैं ।
 तुझसे लिपटना ऐ गुनाहगार! ये बदज़ात चाहती हैं ॥
 रुह-ओ-दिल-ओ-तन-ओ-जाँ से तेरे लिपट ।
 ये मेरी आँखें भी अब रोना ज़ार-ज़ार चाहती हैं ॥
 तू रहता ही नहीं तब पेशेनज़र नज़र के आगे ।
 जब मेरी इंतहा-ए-खुदी¹ होना ख़ाक़सार² चाहती है ॥
 मैं ख़यालो³ में रोऊँ ऐ निगार-ए-नाज़⁴, तुझे पकड़ के ॥
 नीमकुश्तः⁵ हसरतें निकाल देना अब दम-ए-जाँ चाहती हैं
 ॥

1. स्वाभिमान की अति । 2. खुदी का त्याग । 3. कल्पना । 4. नाज़नीन प्रेमिका । 5. अधमरी ।

फैज़-ए-खुदा,¹ कि फिर मुझे मिला वही जुनूँ है ।
 कि लौअ³ में धधककर, वजूद जल रहा धू-धू है ॥
 दे रहे आब⁴ दम घुटते दम संगीनों को ।
 कि फिर से फितरत⁵ मेरी हुई जंगजू⁶ है ॥
 जदोजहद-ए-अंजाम-ए-मुहब्बत⁷ से उकता ।
 खुदा को रख ताक पर, खयाल हुआ अफ़लातूँ⁸ है ॥
 बाद-ए-वस्ल⁹ में ग़र्¹⁰ है मेरे सारे हवास¹¹ ।
 तेरा चश्म मय-ए-नाब¹², तेरी जुल्फ़ मुश्कबू¹³ है ॥
 न पूछ बला¹⁴ की गर्मी कैसी है ज़ात¹⁵ में ।
 मेरा खून खू-ए-यार¹⁶ सा गर्मखू¹⁷ है ॥
 भूल न सका तुझे सो तुझे भुला न सका ।
 मेरे दम में तेरे जवाँ तन की नाब-बू¹⁸ है ॥
 आग, पानी, ज़मीं, गर्दू¹⁹, तूफ़ों की सिफ़ात²⁰ मुझमें ।
 सिफ़ात-ए-मुहब्बत-ए-हिज़²¹ अब शोल-गूँ²² है ॥
 कोई पूछे तो डरूँ किससे, झूठ क्यों बोलूँ ।
 वजह-ए-फ़िल्न²³ हनोज़²⁴ वही निगार²⁵, 'हॉ', 'हूँ' है ॥
 शराब-ए-इश्क़²⁶ सी शराब बनी नहीं जहाँ में ।
 मेरे लबों के लिए तन-ए-यार जाम-ओ-सुबू²⁷ है ॥
 वक्फ़:-ए-आख़िर-ए-तल्फ़ुज़-ए-निहाँ²⁸ कहे आ ।
 जबकि मेरे आगोश में तू बाजू-बबाजू है ॥

1 खुदा की दानशीलता। 2. उन्माद। 3. प्रेम की अग्नि। 4. धार। 5. प्रकृति। 6. युद्धप्रिय। 7. प्रेम के परिणाम से जुड़ी माथापच्ची। 8. प्लेटो जिसे कल्पना की उड़ान भरने में माहिर माना जाता है। 9. मिलन की शराब। 10. निमग्न। 11. इन्द्रियों। 12. निर्मल शराब। 13. कस्तूरी जैसी सुगंध वाली। 14. मुसीबत। 15. वजूद। 16. प्रेमिका का स्वभाव। 17. गर्म स्वभाव वाला। 18. शुद्ध सुगंध। 19. आसमाँ। 20. विशेषतायें। 21. विरह में मुहब्बत की विशेषताएं। 22. आग जैसी। 23. उथल-पुथल का कारण। 24. अभी तक। 25. प्रेयसी। 26. प्रेम की शराब। 27. शराब का घड़ा और प्याला। 28. निहाँ शब्द के उच्चारण का आख़री उहराव।

तू मेरी मुजस्सम शौक-ए-बुज़ाँ²⁹, जान की मताअ³⁰ ।
 मेरी नज़र के आगे बस तू है, तू है, तू है ॥
 तू वजह-ए-निशात³¹, मेरे आगे दम-ब-दम तेरा रू ।
 समझ न पाए कोई, कि मेरा क्यों गर्म लहू है ॥
 कर ली मुहब्बत, तो दी खुदा ने नाशिकस्त:-हिम्मत³² ।
 राह-ए-मुहब्बत क़त्ल-ओ-खूँ, राह-ए-कुश्तोखूँ³³ है ॥
 आ मुश्कबू³⁴ जुल्फ़ों के बहाने चूमूँ सर-ता-सर ।
 ऐ जुल्फ़-ए-रसा³⁵ तू ही तो मेरी आरजू है ॥
 मेरे वजूद का तवाफ़³⁶ करती हैं फ़ज़ाएँ ।
 कि मेरी गर्दिश³⁷ में दम-ब-दम गर्दिश-ए-गर्दू³⁸ है ॥
 इमान-ओ-कुफ़³⁹ बस है कमीनगि-ए-तंज़ीम⁴⁰ ।
 सो बेगद⁴¹ आब-ए-तेग़⁴² पेश-ए-अदू⁴³ है ॥
 इल्तिमास-ए-इश्क़⁴⁴ में है
 खम्याज़:-ए-इक़ितदार-ए-इश्क़⁴⁵ ।
 मेरी वहसत⁴⁶ जाने नहीं, 'नहीं' हर्फ़, न नहीं क्यों है ॥
 दिल की कड़कती बिजली से खाक ज़हन⁴⁷ का भरम ।
 जिगर होता चाक⁴⁸, जब कोयल कहती कू है ॥
 दुरुस्त है जिस्म-ओ-जानो-ओ-दिल तुझसे बिछड़ के ।
 दुरुस्त हूँ मैं, कि अब हिज़⁴⁹ में न चैन-ओ-सुकूँ है ॥

29. हृदयस्थ प्रेमिका के साथ की चाहत। 30. पूँजी। 31. खुशी का कारण। 32. नहीं थकने वाली हिम्मत। 33. मारकाट का रास्ता। 34. कस्तूरी जैसी सुगंध वाली। 35. कमर तक लम्बे बाल वाली। 36. परिक्रमा। 37. भ्रमण। 38. आसमाँ का भ्रमण। 39. आस्तिकता और नास्तिकता। 40. सामाजिक संस्थाओं से जन्मी नीचता। 'सामाजिक संस्था' एक अमूर्त इकाई होती है। पर लोगों में इसे 'वस्तु' (Thing) यानि मूर्त इकाई समझने का भरम पैदा हो जाता है। न दिखने वाले मानव रचित इस अमूर्त इकाई के आगे मनुष्य की लाचारी आम है। 41. धूल रहित। 42. तलवार की धार। 43. दुश्मन के आगे। 44. प्रेम की विनम्रता। 45. प्रेम की ताकत की अँगड़ाई। 46. उद्धिग्नता। 47. दिमाग। 48. विदीर्ण। 49. विरह।

तेरे बेदार⁵⁰ तने लब-ए-अनफ⁵¹ की गर्म साँस ।
 मेरे लबों पे है, जिसपे तेरा लब-ए-गुलगू⁵² है ॥
 गर्दआलूद⁵³ मैं खाक छानता तेरे लिए ।
 फ़ित्न्ःखू⁵⁴ दिल मैं, सो फ़ितरत⁵⁵ भी मेरी फ़ित्न्ःखू है ॥
 हय! ये दर्द-ए-फ़िराक⁵⁶, हिज्र में वस्ल⁵⁷ की कुर्बते⁵⁸ ।
 नज़ारें है हंसीन, मेरी बाँहों में अगर तू है ॥
 तेरे चेहरे की हर तराश आँखों के आगे है ।
 कि हिज्र में भी नज़र के आगे, तेरा रू⁵⁹ है ॥
 ऐ मेरी जान, ऐ मेरी जान की मताअ⁶⁰ ।
 मरूँ मैं तेरे लिए, तू ही मेरे इश्क की आबरू है ॥

50. जागृत। 51. बीनी (Nose) के पुट का किनारा। 52. फूल जैसा कोमल होंठ। 53. धूल में सना। 54. उपद्रवी स्वभाव वाला। 55. प्रकृति। 56. विरह का दर्द। 57. मिलन। 58. सामीप्य। 59. चेहरा। 60. पूँजी।

बेजुबाँ हूँ मैं, कि वो है उल्फ़त की तरह ।
 हिज्र² में है जो क़रीब, कुर्ब-ए-वस्ल³ की तरह ॥
 देखता उसे ही हूँ, खयाल में भी वो ही है ।
 जुबाँ रहते पुकारता हूँ, उसे गूँगे की तरह ॥
 जिस्म हुआ है नाफ़-ए-खाक⁴ और रूह का'बः ।
 लौअ⁵ सा जल रहा हूँ मैं, कि वो है लौअ की तरह ॥
 फोड़ लूँ लाला-ए-चश्म⁶, जो तू न आए नज़र ।
 होश हुए हैं पागल, पागल सरफ़िरे फ़कीर की तरह ॥

1. मौन। 2. विरह। 3. मिलन की समीपता। 4. मक्का। 5. प्रेम की लपट। 6. आँख का पर्दः।

जो है मेरी, जो है मेरी जान, हम उसी को याद करते हैं ।
हय! उस मुश्कबू-जुल्फ़ दराज़¹ से हम हनोज़² बेदार³ रहते
हैं ॥

मेरे हिज्र⁴ को तकती, उसकी सुर्मगी⁵ आँखों में डूबा मस्त
हूँ मैं ।

निशात-ए-निहाँ-ए-वजूद⁶ वो, हम दम-ब-दम⁷
महव-ए-आगोश⁸ रहते हैं ॥

वो है मेरी, वो मुजस्सम⁹ बुजों¹⁰ की चाह, जो है मुझमें
जाहिर-ओ-निहाँ¹¹ ।

है वो मेरी वज्ह-ए-रंगीनी, लोग मुझे उसी के पीछे बर्बाद
कहते हैं ॥

हय! जैसे खुदा बिरहमन, शेख, जाह्द, पुराण और हदीस
में ।

कुछ ऐसे ही मय-ए-नाब¹ यार की आँखों की कशिश² में
॥

जमीं का हूँ आतिशफ़िशॉ-समन्दर³ ज़ोर-ए-तूफ़ों⁴ से²³⁹
वुस्अत-ए-आसमों⁵ को चूमता हुए ॥

मेरी सिफ़त⁶ निखर गई है फ़िराक⁷ में, कुर्ब-ए-यार⁸ की
नौ-तरतीब⁹ में ॥

मेरी गर्मि-ए-शौक के दम से आप़ताब¹⁰, जिसके दम से
शुआअ-ए-माहताब-ए-निहाँ¹¹ ।

गर अभी भी न आई तू तो उलट-पलट जाए
बिसात-ए-कायनात¹² जौक की ख़लिश¹³ में ॥

240

1 कस्तूरी जैसी सुगन्ध वाली लम्बी जुल्फ़। 2. अभी तक। 3. जागृत। 4. विरह। 5. कजरारी।
6. वजूद में छिपी खुशी। 7. प्रतिक्षण। 8. आगोश में खोया हुआ। 9. मूर्त। 10. हृदयस्थ
प्रेमिका की चाह। 11. छिपी हुई और प्रकट।

1. निर्मल शराब। 2. आकर्षण। 3. आग उगलता समन्दर। 4. आंधी की ताक़त। 5. आकाश
का विस्तार। 6. गुण। 7. विरह। 8. यार की समीपता। 9. नया सिलसिला। 10. सूरज।
11. छिपे चाँद की रोशनी। 12. ब्रह्माण्ड रूपी शतरंज का तख़्ता। 13. तड़प।

चला था कहाँ से जुनूँ-ए-इश्क,¹ और अब देख तू कि
जाकर

पहुँचा अब वो कहाँ है ।
फोड़ लूँ लाल-ए-चश्म जो तू न दिखे, पागल हैं होश,
ज्यूँ कोई

फकीर सरफिरा है ॥
बारह गिरी है, शौक-ओ-आरजू-ओ-जुस्तजू के खिरमनों
पे हिज्र

की बिजली ।
निकला दम है, पर तेरे दम से है दम, कि अभी भी
दम-ए-जौ में

तू दम-ए-जवौ है ॥
हिज्र-ओ-वस्ल में हर जगह तू है मेरी नज़र के आगे
ज़ाहिर,

जुनूँ-ए-शौक से ।
फोड़ लूँ पर्द-ए-गोश गर कोई कहे के तू नहीं सामने,
बस निहौ

है, निहौ है, निहौ है ॥
मेरे हाल-ए-दिल को समझ सकते हैं तो दिलशनास¹⁰ ही,
ज़ाहिद

क्या जाने ।
बदज़ात हैं वो सब, जो कहते हैं, कि ये तू नहीं, खुदा है,
खुदा है,

खुदा है ॥
उधड़ के फिंक गई है कहीं पाज़ेब-ए-होश¹¹ ज़हन से,
रक्स-ए-एहसास-ए-ज़ौक¹² से ।

1. प्रेम का उन्माद। 2. आँख की पुतली। 3. खलिहानों पे। 4. प्राण की ताकत। 5. जवौ दम।
6. मिलन और विरह। 7. लगन के उन्माद से। 8. कान का पर्दा। 9. छिपी हुई। 10. दिल से
परिचित। 11. चेतना की पायल। 12. आनंद की अनुभूति का नृत्य। 13. सांसारिक प्रेम का
चढ़ता नशा। 14. नवीन यथार्थ। 15. सच्चे प्रेम का जादू। 16. बेसुध अवस्था का अत्याचार।
17. नश्वर संसार।

मेरे सुरूर-ए-इश्क-मजाज़ी¹³ में हक-ए-नौ¹⁴ से,
फुसूँ-ए-इश्क-हकीकी¹⁵ निहौ है ॥
चला था जुनूँ-ए-इश्क कहाँ से और अब जाके पहुँचा वो
कहाँ है।
मुझपे जौर-ए-बेखुदी¹⁶ अब कुछ यूँ, कि मुझपे न ज़ोर
जहौ-ए-फानी¹⁷ का, न खुदा का रहा है ॥

गया है यार दिल को उजाड़ के ।
छोड़ नज़ारें आलम-ए-बर्बाद¹ के ॥
तबाह है पनाह, तबाह ख़ाब की ।
बेखुद हाल हाल-ए-बर्बाद के ॥
पस्त हिम्मत-ए-चश्म, पस्त उम्मीद-ए-शौक³ ।
उदास हर जल्वे पनाह-ए-बहार के ॥
इस आलम में क्यूँ न मरे हम ।
तबाह ख़ाब न देखे राह यार के ॥

1. बर्बाद हालत। 2. आँखों की हिम्मत। 3. ख़ाहिश की उम्मीद। 4. हालत।

लौअ¹ की लपट से लिपट-लिपट के खाकसार² होके ।
 ढूँढता तुझे दिल-ए-आबाद दिलआज़ार होके ॥
 फोड़ न ले फ़कीर-ए-जवाँ की तरह पागल होश मेरा ।
 पर्दः-ए-गोश-ओ-लाला-ए-वश्म³ पशेमान⁴ होके ॥
 हिज्र⁵ हो या वस्ल⁶, ये ज़िद, कि तू नज़र के आगे रहे ।
 तू न आगे तो, क्यूँ धड़के जिस्म-ए-कायनात⁷ बेजान होके
 ॥
 बारहा चाहा है भूलना तुझको, जिगर को चाक⁸ कर बारहा
 ।
 मैं तो क्या खुदा भी थक गया है, अब बेज़ार⁹ होके ॥

परफ़िशानी

मूँदूँ¹ आँखें तो मैं भी नहीं हूँ, तू भी नहीं है ।
 ये जो मेरी फ़ितरत² है, वो जंगजू³ यूँ ही नहीं है ॥ 243
 खींची जाये है ज़मीं ज़ेर-ए-पा,⁴
 जुम्बिश-ए-ज़ोर-ए-वजूद⁵ से ।
 ये धूल, ये धुआँ, गर्दालूद-गर्दू⁶ यूँ ही नहीं है ॥
 कुंदा-ए-बंदूक⁷ से फोड़े जुनू⁸ रकीब⁹ का सर ।
 हर तमाशा-ए-जहाँ है आगे, बस क्यूँ तू ही नहीं है ॥
 हज़ार खूँ जहाँ-ए-दिल का करे, तो भी न भूल पाये कोई
 ।
 ये राह-ए-कुश्तोखून,¹⁰ कहते फ़िल्नःजू¹¹ यूँ ही नहीं है ॥
 धधकता हिज्र¹² मेरा आश्कार¹³ करने को निगार की खू¹⁴ ।
 जौहर-ए-फ़ना-ए-लौअ,¹⁵ खू-ए-हमखू¹⁶ शोलःगू¹⁷ यूँ ही
 न ह ॥
 तेग-ए-जौहरदार¹⁸ पे मेरी, है सिफ़त-ए-जौहर¹⁹ ।
 मेरे बेगद²⁰ आब-ए-जुनू²¹ से डरती उनुक-ए-अदू²² यूँ ही
 न ह ॥
 है ॥

1. प्रेम की आग। 2. विनम्र। 3. आँख और कान का पर्दा। 4. परेशान। 5. विरह। 6. मिलन।
 7. संसार का तन। 8. विदीर्ण। 9. अप्रसन्न।

1. तुलसी ने लिखा है 'मूँदहूँ आँख कतही कछु नाहि'। 2. प्रकृति। 3. युद्धप्रिय। 4. पाँव
 तले। 5. वजूद की ताकत की गति। 6. धूल आच्छदित आसमान। 7. बंदूक का कुंदा। 8.
 उन्माद। 9. दुश्मन। 10. मारकाट का रास्ता। 11. उपद्रवी। 12. विरह। 13. प्रकट। 14.
 स्वभाव। 15. प्रेम की आग में नष्ट होने का गुण। 16. प्रेमिका का स्वभाव। 17. शोले जैसा।
 18. धारदार तलवार। 19. बारीक धारियों का गुण। 20. धूल रहित। 21. जुनून की धार। 22.
 दुश्मन की गर्दन। 23. जबों (बोली) की स्वतःस्फूर्तता। 24. उच्चारण। 25. बुलबुल की पुकार।
 26. स्वतःस्फूर्त। 27. लब पर लब पड़े। 28. मिलन। 29. अलौकिक जादू। 30. सांसारिक
 तल्लीनता। ।

बेसाख्तगि—ए—ज़बॉ²³ में मेरी न नुक्तः का, न तलफ़ुज²⁴
क

होश।

नालः—ए—बुलबुल²⁵ सा बेसाख्तः²⁶ मैं, पास तू क्योंकि नहीं है
॥

लब—बलब पड़े²⁷ मेरे रु पे, है वस्ल²⁸ की गर्म साँस तेरी ।
फुसूँ—ए—हकीकी²⁹ की महवियत—ए—मजाज़ी³⁰ तू यूँ ही नहीं
है ॥

तेरी मय—ए—नाब—ए—चश्महा³¹ पी, मेरी आँखें हुई हैं
ज़ाहिद³² ।

कोई मय—ए—नाब³³ तेरी आँखों सी, मयगूँ³⁴ यूँ भी नहीं है
॥

हिज़³⁵ सा दम निकला वस्ल में, सो अब हिज़ में निकले
दम वस्ल

सा ।

मस्कन—ए—हिज़³⁶ में तेरी जवाँ नाब खुशबू³⁷ यूँ ही नहीं है
॥

फ़ना—ए—तसव्वुफ़³⁸ की महवियत³⁹ में ढूँढते हैं जिसे ज़ाहिद
।

मेरे आगे दम—ब—दम फ़ाश,⁴⁰ वो फुसूँ⁴¹ यूँ ही नहीं है ॥
मुझमें तुझसे वो नशा, कि ख़ौफ़ज़दा ज़ाहिद—ओ—बराहिमः⁴²

।
तेरा हुस्न—ए—मजाज़ी,⁴³ पिलाये मय—ए—जुनूँ⁴⁴ यूँ ही नहीं
है ॥

31. आँखों की शुद्ध शराब। 32. जो शराब नहीं पिये। 33. शुद्ध शराब। 34. शराब जैसा रंग लिए हुए। 35. विरह। 36. हिज़ का घर। 37. शुद्ध महक। 38. वैराग्य की बर्बादी। 39. तल्लीनता। 40. प्रकट। 41. जादू। 42. विरक्त और ब्राह्मण। 43. सांसारिक सौन्दर्य। 44. उन्माद की शराब।

गुरुर को

छू तो दे¹ उसको कोई, तो बताता हूँ मैं ।
 वैसे तो किसी को भी नहीं सताता हूँ मैं ॥
 कही उससे हालत-ए-दिल, तो वो मुझसे रूठ गई ।
 ले ले बेरुखी से जाँ मेरी, कब घबराता हूँ मैं ॥
 बेहिजाब आजकल वो निकलती है क्यों राह में ।
 वो मुझे सताती क्यों, उसे नहीं सताता हूँ मैं ॥
 उसका हुस्न मेरे लिए, वो बनी है मेरे लिए ।
 ये और बात, कि उसको नहीं ये जताता हूँ मैं ॥
 जो मेरा रास्ता रोके, ऐसा अदू² पैदा हो नहीं सकता ।
 ये बात खुल के सबको बताता हूँ मैं ॥
 खुद को, खुदी को, खुदा को सबको आजमा लिया ।
 मज्जून³ आशिक की तरह, कभी-कभी बड़बड़ाता हूँ मैं ॥

1 कवि के अनुसार यह कविता 'ऑनर किलिंग' के संदर्भ से जुड़े गुस्से में लिखी गई है।
 2. दुश्मन। 3. पागल।

उलट-पलट आसमाँ-ओ-ज़मीं को बारहा¹, रुख अपना हम
 पलट

लेंगे ।

बाज़ी² हारने से पहले, तक्दीर को हम बदल देंगे ॥
 नवा-ए-फुगाँ-ए-बुलबुल³ ज़िगर को चाक⁴ करने को नहीं
 है

काफ़ी ।

सो नाल:-ए-हिज़⁵ को तेरी मय-ए-नाब-ए-चश्महा⁶ पी,
 तुझे

बाँहों में हम पकड़ लेंगे ॥

सच भी तो एक भरम है, तेरे कुर्ब⁷ के सच के भरम की
 तरह ।

आयेगी तेरी याद तो राह को मोड़, तेरी जानिब⁸ हम चल
 देंगे ॥

बिसात-ए-रोज़गार पे⁹ हर चाल-ए-तिफ़लाना¹⁰ से खुश
 और दुखी

होने वाले हम नहीं ।

जिस तौज़ीह¹¹ से तू समझता है मुझे, उस तौज़ीह को ही
 हम

बदल देंगे ॥

हम वो नहीं जो आईन¹² के भरम में बंधकर चलते हैं अपनी
 चाल ।

1. बार-बार। 2. खेल। 3. बुलबुल के क्रन्दन की आवाज़। 4. विदीर्ण। 5. विरह का आर्तनाद। 6. आँखों की निर्मल शराब। 7. समीपता। 8. तरफ़। 9. दुनिया के कारोबार रूपी शतरंज के तख्ते पे। 10. बचकाना छल-कपट। 11. व्याख्या। 12. नियम। 13. हाथ की गति। 14. सामाजिक संस्था (Social Institution) रूपी शतरंज का गोट (जिसे चलने वाला 'चलने वाला' नहीं कोई और होता है)। 15. ईश्वर का ईश्वरत्व। खुदा को फ़ेयरबाख (Feuerbach) द्वारा दी गई अलगाव की संकल्पना के संदर्भ में समझा गया है। 'फ़ेयरबाख' के अनुसार मनुष्य में निहित अच्छाईयों को दुर्भाग्यपूर्ण त्रुटि के द्वारा खुदा में प्रक्षेपित कर दिया जाता है। इस वजह से मनुष्य अपने आप को असहाय मानने लगता है। 'फ़ेयरबाख' के अनुसार धर्म और मनुष्य के चरित्र को समझने से इस एलियनेशन (Alienation) का निराकरण हो जाता है।

उकता गए जो खेल से, तो जुम्बिश-ए-दस्त¹³ से हम
बिसात को

ही उलट-पलट देंगे ॥
हर एक शख्स है एक मुहर:-ए-तंजीम¹⁴, चाहे कहे खुद को
वो

कितना भी आज़ाद ।
न रुकी खुदाई-ए-जहाँ खुदाई-ए-खुदा¹⁵ से, तो अब के
खुदा

को भी भरम हम कह देंगे ॥
उड़ न पाये तो ऐ उड़ने वाले, तेरे पर कतर देंगे ।
बाजी हारने से पहले, तक्दीर को हम बदल देंगे ॥
यक जुम्बिश¹ में रस्त-ओ-चप² फाड़ बदल-ए-रकीब को³ ।
एक फेंक दूँ मगरिब⁴ की जानिब, एक जानिब-ए-मश्रिक⁵
का ॥

तू न मिली तो ये जहाँ-ए-सर-ए-चश्म,⁶ उलट-पलट
जायेगा ।
बेकस⁷ रहा मैं तेरे लिए, पर ये नहीं के अब मैं रोऊँ अपने
नसीब को ॥

पुकार-पुकार के तुझे थकी सिसकती नवा-ए-दिल,⁸ जो
चाहत थी सुबकने में ।
वो अब आश्कार⁹ जुनूँ-ए-मुहब्बत में¹⁰, कैसे मैं मार दूँ इस
जुनूँ-ए-फरीद¹¹ को ॥
जो मुझसे एक है, जो है मेरी, जो मुझसे जुदा हो नहीं
सकती ।

1. गति। 2. बायें-दायें। 3. रकीब के तन को। 4. पश्चिम। 5. पूरब की तरफ। 6. आँख के आगे का संसार। 7. बेबस। 8. दिल की आवाज़। 9. प्रकट। 10. प्रेम के उन्माद में। 11. अद्वितीय लगन। 12. पागल। 13. नयी एकात्मकता। 14. प्रेमिका। 15. अपरिपक्व कल्पना। 16. ज्ञान का तीर। 17. विवेकी (Intellectual)। 18. लगन की अति से जागी उत्कण्ठित ख्वाहिश। 19. तीव्रता।

सब सोचे मुझे मज्जून,¹² न समझे मुहब्बत की मेरी इस
नौ-तौहीद¹³ को ॥

खुदा तुझपे सब छोड़ कहा तो था, कि यूँ न मिली तो सब
इल्जाम तुझपे धरूँगा ।

धर सब इल्जाम अब तुझपे, अब कदम बढ़ाऊँ पाने को
अपनी रफ़ीक़:-ए-जीस्त¹⁴ को ॥

सबसे पूछ-पूछ, वो मुझे जानना चाहे, अपने ख़ामख़याल¹⁵
से ।

फ़िक्र की डोर पे तना तीर-ए-इल्म¹⁶ मैं, कैसे समझ आऊँ
किसी ज़हीन¹⁷ को ॥

शौक-ए-जाबिर-ए-इंतिहा-ए-जुनूँ¹⁸ से क्या होगा, दोस्त
कहें ।

कैसे समझाऊँ चाहत की शिद्दत¹⁹ ऐ खुदा! अपने हबीब को
॥

रवायत के ज़हन को दिए औज़ारों से मुझे कर
ज़ख्मख़ुर्द²⁰, अपने दिल में पलते जब चाहत को मारे ।
तब जी करे के सीना फाड़ दिखा दूँ चाहत की शिद्दत,²¹
अपने महबूब को ॥

न महबूब समझ सका, न रफ़ीक़-ओ-हबीब²² मेरे, खुदा की
भी रही खुदाई ।

सो झटक दूँ अब बढे सब हाथ दोस्तों के, मैं अब न गले
लगाऊँ किसी रफ़ीक़²³ को ॥

आब-ए-तेग¹ ढूँढे बदी² के रकीब³ को ।
 अब कौन तोड़ेगा मेरे गुरुर को ॥
 रगों में दौड़ता खूँ आँखों में उतर आया है ।
 कदम बढ़ाऊँ पाने को अपनी रफीकः-ए-जीस्त⁴ को ॥
 खूँ²⁵² से लथपथ है दुनिया-ए-उल्फ़त⁵ ।
 सो बला-ए-जाँ-ए-खुदा⁶ लोग कहें, मेरे जुनून⁷ को ॥
 कारवाँ-ए-जुनूँ⁸ निकल पड़ा है ।
 अब ये नहीं, कि मैं रोऊँ अपने नसीब को ॥

1. तलवार की धार। 2. बुराई। 3. प्रतिद्वंद्वी। 4. प्रेमिका। 5. प्रेम का संसार। 6. भगवान के लिए प्राण का संकट। 7. उन्माद। 8. उन्माद का काफ़िला।

समाज-ओ-रवायत¹ तंज़ीम-ओ-हक² दिखते नहीं
 इसलिए हर बार बच जाते हैं मेरे वार से ।
 वगरना जैसे उड़ाये सर, बेरहम सल्लाख³
 वैसे ही इक झटके में, इसे भी काट देता तलवार से ॥

यकीं²⁵³ है मुझे, और ये गुमाँ भी, कि हर दिल पाक एक²⁵³ जैसा
 शफ़फ़ा⁴ झरने के पीछे दमकते लौ की तरह ।

1. परंपरा और समाज। 2. सामाजिक संस्था और सत्य। समाज, रवायत, सत्य और सामाजिक संस्था अमूर्त ईकाई (Abstract entity) होने के कारण दिखते नहीं हैं। 3. जल्लाद। 4. पारदर्शी। 5. प्रेमिका के दिल का दर्पण। 6. भरम की धूल मिट्टी। 7. हमदर्द। 8. प्रेम की लौ की रोशनी। 9. प्रेमिका के दिल से। 10. बुलबुल की पुकार। 11. स्वतःस्फूर्त। 12. बीतते हुए सैकड़ों हजार लम्हों से। 13. सामाजिक संस्था द्वारा दिया गया ज्ञान। 14. विरक्ति के रास्ते पे। 15. हृदय के मंदिर में स्थित प्रतिमा। 16. प्रेमिका रूपी प्रकट खुदा।

पर जब आईना-ए-दिल-ए-महबूब³ पर पड़ा हो
गर्द-ओ-गुबार-ए-मजाज़ी,⁶ तो क्या कहूँ मैं किसी
हमख़्वार⁷ से ॥

जो शुआअ-ए-नूर-ए-उल्फ़त⁸ उठी बारहा,
और टकरा कर लौटी दिल-ए-बुताँ से⁹, उसी से ।
नालः-ए-बुलबुल¹⁰ सी बेसाख़्तः¹¹ ज़बाँ से पुकारूँ
उसे अभी भी, मैं गुज़रते-लम्हात-ए-सदहज़ार से¹² ॥

इल्म-ए-तंज़ीम¹³, फ़लसफ़ा कोई या खुदा, कोई भी मुझे
समझा

नहीं सकता खींच नहीं सकता मुझे राह-ए-ज़ाहिदाना
पे¹⁴ ।

बुत-ए-दैर-ए-क़ल्ब¹⁵ का आशिक़ मैं, मुझे तो बस मतलब
बस! अपने खुदा-ए-आश्कार-ए-निगार¹⁶ से ॥

जिसे चाहूँ मैं जिस्म-ओ-जाँ से, उसे चाहे क्यूँ कर कोई ।
करूँ जुदा सर धड़ से रकीब का, जिसे चाहूँ मैं, उसे चाहे
क्यूँ कर

कोई ॥
आशिक़ की ज़ात में रहता है सोया, तीसरा चश्म¹ हश्म² का
।

मेरे हिज़³ को वज्ह-ए-निशात,⁴ याद दिलाये क्यूँ कर कोई
॥

मुझ शहंशाह की दौलत है मेरे महबूब का वजूद ।
उसकी आँखों की मय,⁵ अपनी आँखों से छलकाये क्यूँ कर
कोई ॥

वो तो है इक निगार-ए-नाज़⁶ उसकी, उसकी बात ही क्या
।

खुदा भी नाज़-ओ-अदा दिखलाये, चाहे उसे यूँ गर कोई
॥

कहा था सब ने कि मत लगा दिल उससे, मत लगा, पर
माना

नहीं ।

अब दोज़ख़ में फँसा के जान, चिल्लाये क्यूँ कर कोई ॥
मंदिरों के खुदा पिघल के बन गए हैं एक दरिया आग का
।

डरे हैं नमाज़ी, कि अब मस्जिदों से अज़ान में बुलाये उसे
क्यूँ कर

कोई ॥

हिज़ की आग में जल पुकारे है फ़रहाद 'शीरी'⁸ शीरी' ।
हनोज़⁹ न आई है शीरी, न आएगी! हैराँ है क्यूँ कर कोई
॥

दोस्ती-ओ-रफ़ाक़त एक मोहरा, सब महव¹⁰

शख़्सियत-फ़ाहिशीगी¹¹ में ।

इस दौर के दोज़ख़ में, दिल लगाये क्यूँ कर कोई ॥

कमबख़्त है आलम-ए-तसव्वुर¹² फ़रहाद का, कि बदज़ात है
शीरी' ।

जल्बः-ए-क़यामतख़ोज़¹³ कोहकन,¹⁴ न पूछ दिखाये क्यूँ कर
कोई ॥

रोज़-ओ-शब¹⁵ दहकते हैं आजकल, ज्यूँ गर्म

आहन-ए-महलूल¹⁶ ।

शाम के वजूद में नर्म-माहताब-ए-निहाँ,¹⁷ नज़र आये क्यूँ

1. आँख। 2. प्रलय। 3. विरह। 4. खुशी का कारण। 5. शराब। 6. चंचल प्रेमिका। 7. नरक।
8. फ़रहाद की प्रेमिका। 9. अभी तक। 10. तल्लीन। 11. व्यक्तित्व की लंपटता (एक दूसरे से
काम निकालने के लिए व्यक्तित्व का दिखावटी मुखौटा)। 12. प्रेम-संसार। 13. प्रलयकारी दृ

श्य। 14. पर्वत को काटने वाला (फ़रहाद)। 15. रात और दिन। 16. पिघला हुआ गर्म लोहा।
17. छिपी हुई ठण्डी चाँदनी।

कर कोई ॥
वो और लोग हैं, जो महव-ए-कैद-ए-शबिस्तौ सरगिराँ
हो सर

फोड़ते हैं ।
पेश-ए-खुदी³ एक मोरचः है ये ज़मीं, सो हम फिर
नौ-ज़मि-ए-जंग⁴ तोड़ते हैं ॥
अदू⁵ का उसे कैसा हो खौफ़ जिसे न हुआ हो, कभी खाब
में भी

खौफ़ किसी का ।
सो रकीब⁶ हो सामने तो, निगार-ए-नाज़⁷ को बाँहों में भर
खम-ए-दम⁸ खींचते हैं ॥
वस्ल⁹ ही नहीं मेरी रंगीनि-ए-हिज़¹⁰ से भी जलते हैं लोग
याँ ता

खौं ।
जो देखते मुझे हिज़¹¹ में, वो मुझे रखे उसके शाने पर¹²
सर

देखते हैं ॥
सिफ़ात-ए-ख़म्सः-ए-कुदरत¹³ ज़मीं, गर्दू¹⁴, आग, पानी,
तूफ़ाँ सब

निहाँ¹⁵ मुझमें ।
मेरे बहर-ए-आतिशफ़िशौ¹⁶ की हर मौज से नौ-शोले,¹⁷
मुझमें

नौ-दंभ फेंकते हैं ॥

देखूँ तो अब कौन तोड़ेगा मेरे गुरुर को ।
सब देखें मेरी शख़्सियत¹, न देखें सीरत-ए-जुनून को² ॥
शुआअ-ए-सुब्ह³ नाच रही, दम घुटते दम से धार ।
गर्मखू⁴ मेरी अब न मरे चैन-ओ-सुकून को ॥
इक खौलता कड़ाहा है मेरा वजूद ।
ये⁵ नुऊज़⁶ है, नहीं बस नुऊज़, आश्कार⁷ करे
आमद-ए-जुनून को ॥

1. शयनकक्ष की कैद में लीन। 2. अप्रसन्न। 3. स्व के आगे। 4. जंग की नई ज़मीन।
5. दुश्मन। 6. प्रतिद्वंद्वी। 7. नाज़नीन प्रेमिका। 8. अकड़ का हाव-भाव। 9. मिलन। 10. विरह
की रंगीनी। 11. विरह। 12. कंधे पर। 13. प्रकृति की पाँचों विशेषताएँ (गुण)। 14. आसर्मा।
15. समाहित। 16. आग उगलता समन्दर। 17. नवीन शोले।

1. व्यक्तित्व। 2. लगन (आस्था) के चरित्र को। 3. सुब्ह की रोशनी। 4. गर्म स्वभाव।
5. उत्तेजना। प्राचीन मिस्र की चित्र-लिपी (कुछ हाएरोग्लिफ) से व्युत्पन्न संदर्भ के अर्थ में
प्रयुक्त। 6. प्रकट। 7. उन्माद का आगमन।

जमीं के चंद टुकड़ों में बँटी शिकस्तः¹ खुर्दः¹ ये जमीन है ।
तंगनजर² हिम्मतपस्त³ सब नजर क्यूँ आये मेरे करीब हैं ॥
बदजात⁴ शाहिं-ए-तमद्दुन⁵ की दिलफरेब⁶ नजर में महव⁷ ।
ये कौन कहता है, कि ये जमीं, जमीं नहीं दिलकुशा⁸
बिहिश्त⁹ है ॥
फुसूँ-ए-इल्म-ए-नौ-ब-नौ से¹⁰ फना¹¹ फिक्र में,
फिक्र-ए-फलसफा-ए-जिस्म-ए-मगरिब¹²
मर्गपरस्त-वक्त-ए-हाजिर¹³ से सरतासर¹⁴ जहाँ लगे कमीन¹⁵
है ॥
जला के राख कर दे जो हर भरम का खिरमन¹⁵, सरतासर
जहाँ-ए-फानी¹⁶ से ।
वो बर्क-ए-जहाँसोज¹⁷ है निहाँ सोज-ए-जात¹⁸ में
हनोज¹⁹, जो
नहीं किसी को नसीब है ॥
मेरी तौजीह-ए-वजूद²⁰ से काबू में है बेकाबू
जल्वः-ए-खुदाई ।
गर बचे ये तंजीम,²¹ तो सब जहीन²² को जान के हुए वो
कमीन है ॥

1. हारी हुई। 2. संकुचित दृष्टि। 3. उत्साहहीन। 4. धूर्त। 5. सभ्यता रूपी बाज़। 6. दिल को धोखा देने वाला। 7. खोया हुआ। 8. हृदय को प्रफुल्लित करने वाला। 9. स्वर्ग। 10. नए-नए ज्ञान के जादू से। 11. नष्ट। 12. पश्चिम से आए हुए तन के दर्शन की सोच (फ्रायड आदि विचारकों का सन्दर्भ)। 13. मृत्यु की उपासना करने वाला मौजूदा समय। 14. एक सिरे से दूसरे सिरे तक। 15. खलिहान। 16. नश्वर संसार। 17. जहाँ को जलाने वाली बिजली। 18. अस्तित्व की गर्मी। 19. अभी तक। 20. अस्तित्व की व्याख्या। 21. सामाजिक संस्था। 22. बुद्धिजीवी (intellectuals)। 23. शयनकक्ष। 24. विरह। 25. दीवार रूपी रकीब (दुश्मन)। 26. दोस्त। 27. दिल के कष्ट का कारण। 28. शिष्य। 29. गुरु। 30. संवेदनहीन। 31. फकीर।

कुछ हजार दीवारों के बाद है सोया, वो पेशनजर अपने
शबिस्ता²³
में ।
मेरे शबिस्ताँ में हिज²⁴, ढाह दे जो रकीब-ए-दीवार²⁵ को,
वो कहाँ
जुनूँ का हबीब²⁶ है ॥
है नहीं जिनके पास दिल वो खुश, ज्यूँ दिल ही हुआ
वज्ह-ए-दिलआज़ार²⁷ है ।
न मुरीद²⁸ मैं किसी का, कोई न मेरा खुदा और न कोई
मेरा
मुर्शिद²⁹ है ॥
तेरे बगैर तो जी नहीं सकता, दिल को निचोड़ भी दूँ तो
तुझे भूल
नहीं सकता ।
फिरूँ बाँझ बेहिस³⁰ भीड़ में, वक्त के मरहम का ज़हर लिए
खड़ा
क्यूँ वक्त का पीर³¹ है ॥
निहाँ सिफात-ए-खुदा¹ ज़ाहिर सिफात-ए-मुहब्बत² ।
जुम्बिश-ए-अमल³ यकीन-ए-कामिल⁴ राह-ए-मुहब्बत⁵ ॥
जौर-ए-तूफ़ी⁶ से वुसअत-ए-आसमाँ⁷ को चूमता ।
जमीं का है आतिशफिश⁸ समन्दर जल्वः-ए-मुहब्बत ॥
गवाह-ए-तारीख⁹ कहे राह-ए-कैस-ए-कुश्त-ए-नाज़¹⁰ ।
फीरोजबख्त¹¹ जुनूँ-ए-कोहकन¹² कुश्तोखून¹³
राह-ए-मुहब्बत ॥

1. खुदा की विशेषताएँ (गुण)। 2. प्यार का गुण। 3. अडिग गति। 4. दृढ़ विश्वास। 5. प्यार का रास्ता। 6. तेज़ आँधी की ताकत। 7. आसमाँ का विस्तार। 8. आग उगलता। 9. इतिहास का साक्ष्य। 10. प्रेमिका की अदाओं से मारे हुए मजनूँ का रास्ता। 11. खुशकिस्मत। 12. फ़रहाद का उन्माद। फ़रहाद ने शीरी के लिए पर्वत को काटा था। 13. मारकाट।

जॉसितोँ है ये दुनिया, अस्ल मुहब्बत करने वालों के लिए
 /
 झूठ है, कि जिसका कोई नहीं उसका खुदा होता है ॥
 मिट जाये अगर हम, तो मिटा दो हमारे निशाँ भी ।
 रोये आखिर क्यूँ कोई, गर जिस्म से जाँ जुदा होता है ॥
 नक्ल-ए-जब्बात-ए-आश्कार^१ मुम्किन, मुम्किन हसरतों का
 दिखावा ।
 न समझ सकता जहाँ-ए-फ़ानी,^७ एहसास तो खुदा-ए-निहाँ
 होता है ॥

एहसास हमेशः निहाँ होता है ।
 ये जो जब्बः है, वो आश्कार^२ होता है ॥
 मेरे दिल में तू रहती यूँ कुछ इस तरह ।
 कि मेरे वजूद में फ़िल्नः-ओ-फ़साद^३ होता है ॥
 एहसास न पकड़ में आते तंजीम^४ की, सो न मार पाते कभी
 /
 हसरत-ओ-आरजू को मार, जहाँ को गुमाँ होता है ॥
 रवायतें उठा के, जब फेंक देती लैलः को छीन कैस से ।^{२५९}
 तो कुछ रेत, कुछ पत्थर पे लिख, वो ऐसे ही, यूँ ही नहीं
 मरा
 होता है ॥

260

1. छिपा। 2. प्रकट। 3. उथल-पुथल। 4. सामाजिक संस्था। 5. जानलेवा। 6. प्रकट
 भावनाओं का अनुसरण। 7. नश्वर संसार।

बख्त-ए-उल्फ़त

तू रा ख़ुद ना, उस ना बारहा रला,
कहे इल्तिमास-ए-इश्क⁴ 'उसे रुला के ला' ।।
ढाह दे मस्कूना मकाना⁵ की ये चंद दीवारें
जो उसके और तेरे बीच खड़ी हैं ।
उसके सीने में भी यही बेकसी⁶ जगाने को

1 चित्त को द्रवित करने वाले विरह के घर का उन्माद। 2. विरह का शयनकक्ष। 3. बार-बार। 4. इश्क की विनम्रता। 5. आबाद घर। 6. बेबसी। 7. शुद्ध शराब। 8. आँखों की तरह। 9. वजूद की बेसुध अवस्था का अत्याचार। 10. खुदी (स्व) का ईमान (अस्तिकता)।

उससे लिपट कर उसे मना के
ला ॥
खरोंच दे उसके दिल में भी ज़ख्म, अपने ज़ख्म-ए-दिल
की तरह
क्यूँ छलके तेरी आँखों से नाब-मय^१ उसके चश्महा की
तरह^२ ।
जौर-ए-बेखुदि-ए-ज़ात^३ जगा उसमें भी, गुज़री जाये रात
अब तो उसे अभी अपनी तरह, अपनी तरह उसे बना के
ला ॥
ज़िन्दगी-ज़िन्दगी नहीं उसके बग़ैर, तो क्यूँ जीता है
ज़िन्दगी
उसके बग़ैर, क्यूँ जीता उसके बग़ैर ।
नहीं जानता वो तो उसे ये बता के ला, जानता हूँ मानेगा
नहीं
फिर भी मना उसे बारहा, उसे मना के ला ॥
होश में! होश में तो वो आने से रहा, सो होश उसके
उड़ाके ला
उसे पिला के उसे उठा के ला ।
सही ग़लत, ग़लत सही, सब भरम! मिटा खुदी से हर भरम
अब ईमान-ए-खुदी^४ भी मिटा के ला ॥
जुनूँ-ए-मस्कन-ए-हिज़-ए-जाँगुसिल कहे के उसे अभी,
इस शबिस्ताँ-ए-हिज़ में उठा के ला ।
तू रो खुद भी, उसे भी बारहा रुला ,
कहे इल्तिमास-ए-इश्क 'उसे रुला के ला' ॥

कुछ और न देखूँ मैं, जो तू न दिखे फोड़ लूँ
लाला-ए-चश्म^५ मैं ।

1. आँख का पर्दा। 2. कान का पर्दा। 3. मौन। 4. नवीन सच की तल्लीनता। 5. प्रेम की आग। 6. तूर के पर्वत की रोशनी। 7. विषमिश्रित। 8. अमृत। 9. कस्तूरी जैसी सुगंधवाली।

बात न सुनूँ जिसमें ज़िक्क न तेरा, फोड़ लूँ पर्द-ए-गोश^६
में ॥
फ़िक्क में तू, बेज़बाँ^७ ज़बाँ में तू, मेरी
महवियत-ए-हक-ए-नौ^८ तू।
लौअ^९ की लपट से हुआ राख जो, वो नूर-ए-कोह-ए-तूर^{१०}
में ॥
सरापा तू है ज़हरआलूद^{११} चाहत, आब-ए-हयात^{१२} का घूँट
भी ।
मुश्कबू^{१३} तू, एहसास-ए-गुमगश्त:-ए-ग़ज़ाल की^{१४} तश्नगी^{१५}
का

सराब^{१६} मैं ॥

तू है नशा-ए-इश्क-हकीकी^{१७}, मैं
सुरूर-ए-इश्क-ए-फ़ानी^{१८} ।
कि जिस दीदारपरस्त^{१९} से है दीद,^{२०} वो
जुनून-ए-दीदारपरस्त^{२१}

मैं ॥

खींच कर नज़र से दिल में, तुझे अब खींच रहा नज़र के
आगे ।
जान गई मुझ ज़ाहिद^{२२} की जिससे, मेरी आँखों से छलकती
तू वो

दुआतश^{२३} मैं ॥

तू है हमेशः नज़र के आगे हिज़-ए-जाँगुसिल^{२४} हो या

10. हिरण के भटके हुए एहसास की। 11. प्यास। 12. मृगतृष्णा। 13. सच्चे प्रेम का नशा। 14. नश्वर प्रेम का चढ़ता नशा। 15. देखने की लगन रखने वाले। 16. दृश्य। 17. देखने की लगन का नशा। 18. शराब नहीं पीने वाला। 19. दो बार खींची शराब। तेज़ शराब। 20. प्राणों को द्रवित करने वाला विरह। 21. मुबारक मिलन। 22. खुशी। 23. शर्मिदा अस्तित्व का पैमाना (पात्र)। 24. आँख की पुतली। 25. तरफ़। 26. हाथ। 27. अचानक। 28. प्रेमिका की कल्पना।

फ़ख़्नुदा-वस्ल²¹ ।

ज़ौक²² से हो गया है जो तंग, वो
पैमाना-ए-वजूद-ए-ख़ाजिल²³

मैं ॥

लाला-ए-चश्म²⁴ की जानिब²⁵ उठे दस्त²⁶ की जुम्बिश को
रोक

लिया है जिसने ।

पागल फ़कीर-ए-जवाँ के दिल से यकलख़्त²⁷ गुज़रा वो
ख़याल-ए-यार²⁸ मैं ॥

बख़्त-ए-उल्फ़त¹ लम्हः-ए-कुर्बत² ।
वक्फ़ः-ए-हिज़³ जहाँ-ए-जुल्मत⁴ ॥
नामुम्किन आज तुझसे मिलना ।
पर चाहूँ मिलना किसी भी सूरत ॥
ख़ुदा भी लगता नहीं है अब पत्थर ।
बसी है दिल में तेरी यूँ सूरत ॥
सुना था, पर था न पता ।
जाँसिताँ ऐसी होती है फ़ुर्क़त⁵ ॥

1. प्रेम की तकदीर। 2. मुलाकात (सामीप्य) का क्षण। 3. विरह का ठहराव। 4. अंधकार का संसार। 5. वियोग।

कोई मेरी बेतरतीब दुनिया-ए-उल्फ़त¹ सँवारे तो, वो तू ही
सँवारे ।

हवास-ए-बदहवास² को मेरे हिज़³ में, जो दम-ब-दम⁴
निहारे ॥

इन्साँ था सो थका, पर क्यूँ पिछली शब रियाज़त⁵ भी,
ख़ुदा भी ।

सो हय! ये मज्नून-नवाँ अब और, ऐ जुल्फ़ दराज़! तुझको
पुकारे ॥

कहता है जहाँ के मरे क्यूँ? सदहज़ार
अज्जाम-ए-खुबाँ-ए-जवाँ

है याँ ।

पर ख़याल⁶ में भी हम तेरे सिवा नहीं किसी और को निहारे
॥

1. प्रेम का संसार। 2. उद्विग्न चेतना। 3. विरह। 4. पल-पल। 5. इबादत। 6. पागल स्वर।
7. प्रेमिका बनाने लायक तन। 8. कल्पना।

ऐ मेरी मता-ए-जाँ,¹ ऐ मेरी मता-ए-दिल² ।
 जी लगता नहीं है अब मेरा, तेरे बिन ॥
 हूँ महव-ए-बेखुदी³ में तुझे बाँहों में खींच ।
 ऐ दिलआज़ार!⁴ अब तो मुझे बाँहों में भींच ॥
 दुआतशः⁵ मय-ए-नाब⁶ से जाये जान ज़ाहिद⁷ की ।
 दिल में खिंचे यार को नज़र के आगे खींच ॥
 निकले दम ऐसे जैसे निकले जाँगुसिल-हिज़⁸ में ।

1. प्राण रूपी पूँजी। 2. दिल की पूँजी। 3. बेसुध अवस्था में खोया। 4. दिल को दुखी करने वाली। 5. दो बार खींची हुई। दो बार खींची शराब, बहुत तेज़ शराब होती है। इसकी सादृश्यता दिल में उतरी प्रेमिका की तस्वीर को (विरह में) नज़र के आगे फिर से खींचने के साथ की गई है। तसखुर में प्रेमिका का चेहरा और आकर्षक हो जाता है, भावनाओं से निःसृत कल्पनाएँ कुछ अदृष्ट जत्वों को भी जल्वानुमा कर देती हैं। 6. शुद्ध शराब। 7. वह इन्सान जो शराब किसी भी हालत में नहीं पीता। 8. चित्त को द्रविभूत करने वाला विरह। 9. स्वप्निल ऊँघ। 10. संवेदना पर काबू की दशा। 11. मिलन के आनंद की बेसुध अवस्था में। 12. उद्विग्न इन्द्रियाँ। 13. उद्विग्न जड़ता।

ख्वाबआलूद-नुआस⁹ में यूँ न मुझे बाँहों में भींच ॥
 आलम-ए-नफ़सकुशी¹⁰ देखूँ बेखुदि-ए-ज़ौक-ए-वस्ल में¹¹
 ।
 हवास-ए-बदहवास¹² बदहवास-बेहिसी¹³ पे खींच ॥
 ऐ मेरी मता-ए-जाँ, ऐ मेरी मता-ए दिल ।
 जी लागता नहीं तेरे बिन, तुझे बाँहों में खींच ॥

कभी मैं जुनूँ को, कभी जुनूँ मुझे खींचे है ।
 कभी मैं दुनिया के आगे, कभी ये मेरे पीछे है ॥
 नशे में हूँ, सो समझ नहीं आता मुझे ।
 ज़मीं या आसमाँ, ये कौन मेरे पाँवों के नीचे है ॥
 हिज़¹ में हिज़ से डरा हूँ मैं कुछ इस क़दर ।
 कि वो महीनों से मुझे अपनी बाँहों में भींचे है ॥

तू ज़हरआलूद¹ चाहत मीठा ज़हर है ।
 शब-ए-हिज़² जिसकी नहीं कोई शुआअ-ए-सहर³ है ॥
 शब-ए-वस्ल⁴ न थी किस्मत में, सो हिज़ में ।
 मेरे²⁶⁸ सीने से लगा अब तक ढा रहा क़हर है ॥
 जिसको देख मुझमें चढ़ गया है ज़हर ।
 उतार सकता बस वही, जो ये ज़हर है ॥

1. ज़हर मिश्रित । 2. विरह की रात । 3. सुबह की किरण । 4. मिलन की रात ।

ब वक़्त-ए-रुख़सत¹ निकला दम था,
 दम-ए-जाँगुसिल-ए-ज़ौक-ए-वस्ल² की ही तरह ।
 उलझा था मुझसे वो यूँ, कि खुद को छुड़ा न पा रहा था
 किसी भी तरह ॥
 तेरे रू³ की बेदारी⁴ पे रुक-रुक कर कँपकँपाने को तने⁵
 लब-ए-अनफ⁵ ।

1. बिछड़ने के समय । 2. मिलन की खुशी में हृदय को द्रवित करने वाला क्षण । 3. चेहरा ।
 4. जागृति । 5. बीनी (Nose) के पुट का किनारा । 6. विरह के आगमन से उत्पन्न क्रन्दन पर
 संयम रखने से । 7. मिलन के समय खुशी से उत्पन्न चित्त की विक्षोभित अवस्था पर काबू
 रखने की ही तरह । 8. आगोश की गति के साहस का जुल्म । 9. कंधे पे । 10. तित्तर-बित्तर ।
 11. मिलन । 12. स्वेद (सात्विक अनुभाव) । 13. मिलन की खुशबू (शुद्ध कस्तूरी) । 14.
 पुनःजीवित करने वाली फूँक । 15. मिलन की उखड़ती अंतिम साँस । 16. छिपी । 17. हर पल ।
 18. प्रकट । 19. विरह और मिलन ।

ज़ब्त-ए-फुगॉ-ए-आमद-ए-हिज़ सै⁶
ज़ब्त-ए-फुगॉ-ए-ज़ौक-ए-वस्ल की ही तरह⁷ ॥
इंतहा-ए-ख़ुशी से जैसे कोई फफक कर रो पड़े, वैसे ही
कोई रो

पड़ा था ।
ज़ौक से कभी, अब हिज़ की सोच, लबों की कँपकँपी न पा
रही

थी रुक किसी भी तरह ॥
पकड़े हुये थी तू मुझे,
ज़ौर-ए-हिम्मत-ए-ज़ुम्बिश-ए-आग़ोश⁸

बढ़ा हुआ था ।
शाने पे⁹ खुली जुल्फें छुपाए थी मेरा चेहरा, हो परीशॉ¹⁰
वस्ल¹¹

की ही तरह ॥
तू अरक¹² से तर हो, मुश्क-ए-नाब-ए-वस्ल¹³ की ही तरह
महक उठी थी ।

दम-ए-ईसा¹⁴ फूँकना चाह रही थी
दम-ए-तस्लीम-ए-वस्ल¹⁵ में
तेरी महक, किसी भी तरह ॥

वो निहाँ¹⁶ दम-ब-दम¹⁷ आश्कार¹⁸ मुझमें, उसके
वस्ल-ओ-हिज़¹⁹

की ये सब बातें झूठी ।
जुदा होना था कठिन, यूँ तो जानता था, कि झूठ भी एक
भरम,

सच की ही तरह ॥